क=कांटा) गु० बिन दुःख, अकण्टक, बिन शत्रु ।

सं० निष्कर–(निर्=बिन, कर=लगान) गु० बेलगान, मुआफ़ी ।

सं० निष्कपट–(निर्=बिन, कपट=छल) गु० बिन छल, सीधा, सरल, सच्चा ।

सं० निष्कलङ्क–गु० निर्दोष, बेदाग, बेऐब ।

सं० निष्काम–(निर्=बिन, काम=इच्छा) गु० निकाम, जिसको किसी बातकी इच्छा न हो, निःस्पृह ।

सं० निष्कारण–गु० बेप्रयोजन, बेसबब ।

सं० निष्केवल–(निर्+केवल)गु० अकेला, तनहा ।

सं० निष्क्रमण–(निर्+क्रम=चलना) भा० पु० बाहर निकलना, शिशुको चौथे महीने बाहर निकालते हैं, उसको कहते हैं ।

सं० निश्चेष्ट–गु० बेकाम, चेष्टाहीन, तदबीरसे खाली ।

सं० निष्ठा–भा० स्त्री० धर्म में तत्परता, श्रद्धा, विश्वास, क्लेश, व्रत, उत्पत्ति, नाश, अन्त, उत्कर्ष ।

सं० निष्ठुर–(नि, स्था=ठहरना) गु० निठुर, निर्दयी, कठोर, कड़ा, कठिन ।

सं० निष्पक्षपात–गु० मित्रतारहित, बेसहायता, बिलातरफ़दारी, नहीं हराना, और न लेना, मदद न देना, बेतअस्सुब ।

सं० निष्पत्ति–(निर्=अच्छी भांति से, पद्=जाना) स्त्री० सिद्धि, पूरा होना, सिद्ध होना ।

सं० निष्पन्न–(निर्, पद्=जाना) गु० सिद्ध, पूरा, पूर्ण, पूरा कियाहुआ ।

सं० निष्पाप } (निर्=नहीं, पाप
निःपाप } =अपराध) गु० निरपराध, निर्दोष ।

सं० निष्फल- (निर्+फल) गु० वृथा, विफल, निरर्थक, फलहीन ।

सं० निस्–उपस० नहीं, २ निश्चय, ३ सब तरहसे, सबप्रकार से ।

प्रा० निसरना– (सं० निःसरण, निर्=बाहर, सृ=जाना) क्रि० अ० निकलना, निकसना ।

सं० निसर्ग–(नि, सृज्=उपजाना) पु० स्वभाव, स्वरूप, सृष्टि, खिलक़त ।

प्रा० निसास –(सं० निःश्वास) पु० सांस, उसास, पछतावा ।

प्रा० निसेनी } (सं० निःश्रेणी)
निसैनी } स्त्री० सीढ़ी, सोपान।

सं० निसूदन–(नि, सूद्=खोदना) भा० पु० मारना, वधकरना, क़तल करना, खोदना ।

सं० निस्तार–(निर्=निश्चय, तृ=पारहोना) पु० उद्धार, मुक्ति, मोक्ष, पार होना, बचाव, छुटकारा, त्राण

जन्म मरण का निबेड़ा फरागत।

प्रा० **निस्तारना**-(सं० निस्तारण) क्रि० स० बचाना, उबारना, मुक्ति देना, जन्म मरणसे छुटकारा करना।

प्रा० **निस्तारा**-(सं० निस्तार) पु० छुटकारा, निबेड़ा, मोक्ष, मुक्ति २ वर, आशिष।

सं० **निस्त्रिस**-स्त्री०संगीनबन्दूककी।

सं० **निस्सन्देह**-(निर्=बिन, संदेह =शक) गु० निश्चय, बेशक।

सं० **निहत**-(निहन्=मारडालना) कर्म० पु० मारागया, बधकियागया।

सं०**निहित**-(नि=निश्चय, धा=धरना) कर्म०स्थापित, गुप्त, स्थित, निक्षिप्त।

प्रा० **निहाई**-स्त्री० घन, हथौड़ा।

प्रा० **निहार**-पु० कुहर, कुहिरा।

प्रा० **निहारना**-क्रि० स० ताक लगाना, देखना।

प्रा० **निहाल**—गु० प्रसन्न, सुखी, आनंदित, हर्षित, बढ़ा हुआ।

प्रा० **निहाली**-स्त्री० रजाई, फर्द।

प्रा० **निहुरना**—क्रि०अ०झुकना, नमना, दबना।

प्रा० **निहोरा**—पु० उपकार, २ बिनती, इहसान।

प्रा० **नींद** } (सं० निद्रा) स्त्री०
नीद } सोने की चाह, ऊंघाई।

प्रा० **नींदउचाटहोना**—बोल० नींद नहीं आना, नींद का टूटना, आंख नहीं मिलना।

प्रा० **नींदभरसोना**—बोल० गहरी नींद आना, चैन से सोना।

प्रा० **नींबू**—(सं० निम्बूक, निम्ब् =सींचना) पु० लेमू, एक प्रकार का खट्टा फल।

प्रा०**नीका** } (फा० नेक) गु०
नीकौ } भला, सुन्दर, अच्छा, सुडौल, २ चंगा।

प्रा० **नीगुने**—(सं० निर्गण) गु० बेगिनत, बेशुमार, अनगिनत, नहीं गिना हुआ।

सं०**नीच**—(नि=नीचे, अञ्च=जाना अथवा नि=नीच संपदा को, चम् =खाना, भोगना) गु० नीचा, अधम, छोटा, निकम्मा, निकृष्ट, कमीना।

प्रा० **नीचा**—(सं० नीच) गु० नीच, अधम, छोटा, पु० तला, तल।

प्रा० **नीचाऊंचा**—बोल० ना बराबर जमीन, न हमवार।

प्रा० **नीचे**—(सं० नीचैस्) क्रि० वि० तले।

सं० **नीचगा**—(नीच=नीचे, गम्= जाना) स्त्री० नदी, दरिया।

सं०**नीड़**—(नि=अच्छीतरहसे, इल= सोना जिसमें) पु० पखेरुओं का घर, घोंसला, खोंता, आशियाना।

सं०**नीत**—(नी+त, नी=ले जाना)

र्म॰ पु॰ प्राप्त, लाया गया ।

सं॰ नीति–(नी=ले जाना) स्त्री॰ अच्छा चलन, उचित व्यवहार, राजनीति, देशसंबंधीविद्या, न्याय, ४ प्रकारके हैं साम, दाम, दण्ड, भेद ।

सं॰ नीतिकला–स्त्री॰ राजनीति, हिकमत अमली, पालसी ।

सं॰ नीतिधात्री } **नीतिविधायक** } मुहकमा दीवानी ।

सं॰ नीतिज्ञ–(नीति + ज्ञा=जानना) पु॰ नीति जाननेवाला, राजज्ञानी ।

प्रा॰ नींम } **नीब** } (सं॰ निम्ब, निम्ब्=सींचना) पु॰ एक वृक्ष का नाम ।

सं॰ नीर–(नी=पाना) पु॰ पानी, जल, २ रस ।

सं॰ नीरज–(नीर=पानी, जन्=पैदा होना) पु॰ कमल, कँवल, २ ऊद बिलाव, गु॰ पानी में पैदा हुई चीज ।

सं॰ नीरद–(नीर=पानी, दा=देना) पु॰ बादल मेघ, घन ।

सं॰ नीरधर–(नीर=पानी, धृ=रखना) पु॰ बादल, मेघ ।

सं॰ नीरनिधि–(नीर=पानी, निधि =खजाना) पु॰ समंदर, समुद्र, सागर ।

सं॰ नीरस–(निर्=बिन, रस=स्वाद) गु॰ निरस, फीका, असार, रसहीन ।

सं॰ नील–(नील्=नीला होना) गु॰ नीला, काला, कृष्ण २ सौ खरब । स्त्री॰ एक पौधा जो नीला रंगने के काम में आता है, २ एक नदी का नाम जो मिसर देश में है, पु॰ एक पहाड़ का नाम, २ एक बानर का नाम, ३ कुबेर की नौ निधि अथवा खज़ाने में का एक खज़ाना ।

सं॰ नीलकंठ–(नील=नीला, कण्ठ =गला) पु॰ महादेव जिन्हों ने समुद्र मथने के समय विष निकला था उसको पिया इस लिये उनका गला नीला हो गया, २ मोर, मयूर, ३ एक पखेरू का नाम कटनास ।

प्रा॰ नीलगांव–(सं॰ नीलगौ) स्त्री॰ नीली गाय, रोझ ।

सं॰ नीलग्रीव–(नील=नीली, ग्रीव =गरदन) पु॰ महादेव, शिव, गु॰ नीला गलावाला, जिसका गला नीला हो, २ मोर ।

प्रा॰ नीलम–(सं॰ नीलमणि) पु॰ नीले रंग का रतन, जमुर्रुद ।

सं॰ नीलमणि–(सं॰ नील=नीला, मणि=रतन) स्त्री॰ नीलम, जमुर्रुद ।

प्रा॰ नीला–(सं॰ नील) गु॰ नील में रंगा हुआ, नीलवर्ण ।

प्रा॰ नीलाथोथा–पु॰ तूतिया, नीलांजन ।

प्रा० नीलाम—(पोर्तुगालकी भाषा के शब्द "लेलाम" "Leilam" का अपभ्रंश) पु० किसी चीज को एक मोल पर नहीं बल्कि पहले कुछ मोल बोलना फिर ज्यों ज्यों ग्राहक मोल बढ़ाते जाते हैं अन्त में जो सब से अधिक बोले उसीको बेचदेना।

सं०नीलाम्बर-(नील=नीला, अम्बर =कपड़ा जिसके हो) पु० बलदेव, २ शनैश्चर ३ नीला कपड़ा।

सं०नीलोपल } नीलोत्पल } नील = नीला, उपल=पत्थर, उत्पल=कमल, पु० नीला पत्थर, नीलमणि वा नीलकमल।

सं० नीवार-नी, वृ=आच्छादनकरना घेरना) पु० तिन्नी का वृक्ष, तालाब का चावल।

सं० नीवी—स्त्री०बनियोंका मूलधन, पूंजी, कमरबन्द, इंजारबन्द, नारा।

सं० नीवृत्-पु०देश, जनपद, जनस्थान।

सं० नीशार-(नी + शृ=मारना)पु० तम्बू, कनात डेरा, कपल, रेशमीवस्त्र।

सं० नीहार-(नी,हृ=लेना) पु० घना पाला, ओस, कुहर, शिशिर।

सं० नूतन } नूत्न } (नव, नु=सराहना) पु० नया, नवीन, टटका।

प्रा० नून } नोन } (सं० लवण) पु० निमक, नमक, लोन, खार।

सं० नूपुर—(नू=गहना, पुर=आगे जाना, अर्थात् जो सब गहनों के आगे रहता है) पु० बिछिया, पांव की अंगुलियों में पहनने का गहना, नूपुर। [मनुष्य, पुरुष, नर, मर्द।

सं० नृ-(नी=लेजाना वा चलना) पु०

सं० नृग—पु० एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

सं० नृत्त } नृत्य } (नृत्=नाचना) पु० नाच, नर्त्तन।

सं० नृत्यक—(नृत्=नाचना) पु० नाचनेवाला, नचवैया।

सं० नृप-(नृ=मनुष्य, प=पालनेवाला, पा=पालना) पु० राजा, भूपाल, भूपति।

सं० नृपघाती—(नृप=राजा, हन्= मारना) क० पु० राजाओं का मारनेवाला, परशुराम।

सं० नृपति-(नृ=मनुष्य, पति=स्वामी, मालिक) पु० राजा।

सं० नृपाल—(नृ=मनुष्य, पाल्=पालना) पु० राजा।

सं० नृशंस-(नृ=मनुष्य, शंस्=मारना) गु० मारनेवाला, दुष्ट, दुःखदायी क्रूर, परद्रोही, बेहया, बदकार।

सं० नृसिंह—(नृ + सिंह) पु० नरसिंह अवतार।

सं० नृहरि—(नृ=मनुष्य, हरि=सिंह) पु० नरसिंह अवतार।

प्रा० नेक } गु० कुछ, थोड़ा, अल्प,
नेकु } तनक, जरा।

फा० नेकनाम—नामवर, यशस्वी, सुयशी।

सं० नेक्ता—(निज्+तृ, निज्=पोषण करना) क० पु० पोषक, पालक, पोषणकर्ता।

प्रा० नेग } पु० ब्याह में अथवा
नेगचार } और किसी उत्सव में अपने नातेदारों को कुछ देना, ब्याह में पुरोहित की दक्षिणा, २ बांटा हिस्सा।

प्रा० नेगी—(नेग) गु० बँटानेवाला, हिस्सेदार, २ परजा, मँगता।

सं० नेजक—(निज्+अक, निज्=शुद्ध करना) क० पु० धोबी, परिष्कारक।

सं० नेजन—भा० पु० शोधना।

सं० नेता—(नी=लेजाना) क० पु० लेजानेवाला।

सं० नेतव्य—र्म० पु० लेजाने योग्य।

सं० नेति—(न=नहीं, इति=यह) गु० ऐसा नहीं, यह नहीं, जिसका पार नहीं, अनन्त, परमेश्वर का गुण।

प्रा० नेती—(सं० नेत्र, नी=लेजाना वा चलाना) स्त्री० दही मथने की रस्सी।

सं० नेत्र-(नी=लेजाना, वा चलाना वा पहुँचाना, वा पाना) पु० आंख, नयन, लोचन, २ नेती, गु० नायक, चलानेवाला।

सं० नेत्रच्छद—(नेत्र=आंख, छद्=ढकना) पु० नेत्र पुट, आँख पट।

सं० नेत्राम्बु—(नेत्र=आंख, अम्बु=पानी) पु० आंसू, आंखका पानी।

सं० नेपथ्य } पु० पर्दा से रास्ता,
नैपथ्य } आड़का रास्ता, विनय के लिये सजी भूमि, मतान्तर, अलंकार, पन्थ।

सं० नेपाल—पु० एकदेश का नाम।

प्रा० नेपुर—(सं० नूपुर) पु० नूपुर।

सं० नेम—गु० अर्द्ध, आधा, निस्फ।

प्रा० नेम—(सं० नियम) पु० वचन प्रण, प्रतिज्ञा, संकल्प, वाचा, होड़, हठ, २ व्रत संयम आदि।

सं० नेमि—स्त्री० धुरी जिसमें पहिया लगे पु० तिन्नी, जङ्गली चावल।

प्रा० नेमधर्म—(सं० नियम धर्म) पु० उपवास, व्रत, २ अच्छा चलन।

प्रा० नेरे } (सं० निकट) नित्य
नेरौ } पास, समीप, नगीच।

प्रा० नेव }
नींव } स्त्री० भीत की जड़।

प्रा० नेवतना } (सं० निमन्त्रण)
न्योतना } क्रि० स० न्योता देना, खिलाने के लिये बुलाना।

प्रा० नेवता } (सं० निमन्त्रण) पु०
नोता } बुलाहट, खिलाने के
न्योता } लिये बुलाना।

प्रा० नेवर } पु० घोड़े के पांवका घाव,
नेवल } अथवा रोग।

प्रा० नेवल } (सं०नकुल) पु० एक
नेवला } जानवर का नाम ।

प्रा० नेवार } (फ़ा०नेवार) स्त्री० एक
निवार } प्रकार की चौड़ी पट्टी
या कोर जिससे पलंग बुने जातेहैं ।

प्रा० नेह-(सं०स्नेह) पु० प्यार, प्रीति, मोह, मुहब्बत । [मित्र ।

प्रा० नेही-(सं०स्नेही) गु० प्यारा,

प्रा० नैन } (सं० नयन) पु० आंख,
नैना } नेत्र, लोचन ।

सं० नैमित्तिक-भा० पु० निमित्त सम्बन्धी, निमित्तसे आया, गैरमअमूली, जो रोज़ न हो ।

सं० नैमिष-(निमिष, अर्थात् जहां विष्णु ने पलभर में एक राक्षस को माराथा) पु० एक तीर्थका नाम ।

सं० नैमिषारण्य-(नैमिष+आरण्य) पु० एक जंगल का नाम जहां बहुत ऋषि रहते थे और जहां सूतजी ने इन सनकादि ऋषियों को महाभारत और पुराण आदि सुनाये थे ।

सं० नैयायिक-(न्याय) पु० न्याय शास्त्र जाननेवाला, न्यायशास्त्र का पण्डित, मुन्सिफ़ ।

सं० नैराश्य-भा० पु० निरासरा, न उम्मैदी, आशाशून्य, आशारहित ।

सं० नैर्ऋत्य-(नैर्ऋत=एक राक्षस का नाम जो इस कोण का दिक्पाल है) पु० दक्षिण पश्चिमका कोण ।

सं० नैवेद्य-(निवेद पु० देवता का भोग, प्रसाद, चढ़ावा, बलि ।

सं० नैसर्गिक-भा० पु० स्वाभाविक, तबयी, दिली ।

सं० नैष्ठिक-भा० पु० धार्मिक, मुअतक़िद, विश्वासिक, स्त्री० नैष्ठिका, धार्मिका, विश्वासिका ।

प्रा० नैहर-पु० पीहर, मैका, स्त्री के बाप का घर ।

प्रा० नोकचोक-बोल० स्त्री० संकेतों से बातें करना, इशारों से बातें करना, २ लागडाट ।

प्रा० नोकझोक-बोल० स्त्री० खैंचाखैंची, चढाउपरी ।

प्रा० नोचना-क्रि० स० खसोटना, बकोटना, खरोटना, छीलडालना, नख से उखाड़ना ।

अं० नोट-याददाश्त, २ हुण्डी, ३ हाशिया, ४ निशान ।

फ़ा० नौकर-पु० चाकर, सेवक, दास ।

फ़ा० नौकरी-स्त्री० चाकरी, सेवा ।

सं० नौ } (नुद्=चलाना) स्त्री०
नौका } नाव, तरणी ।

प्रा० नौखण्ड-(सं० नव खण्ड) पु० पृथ्वी के नव भाग, १ भरत २ इलावृत ३ किम्पुरुष ४ भद्र ५ केतुमाल ६ हिरण्य ७ कुरु ८ रम्य ६ हरिवर्ष ।

प्रा० नौगरी-स्त्री० स्त्रियों के हाथ में पहनने का गहना, नौगिरही ।

प्रा० नौछावर-स्त्री० निछावर, स-

दका, उतारा, बलिहारी ।

प्रा० नौज-क्रि० वि० ऐसा न हो ।

प्रा० नौढ़ाना-(सं०नमन, नम्=झुकाना) क्रि० स० सिरझुकाना ।

प्रा० नौतना-(सं०निमन्त्रण) क्रि० स० नेवतना, न्योतना ।

प्रा० नौता-(सं० निमन्त्रण) पु० नेवता, न्योता ।

प्रा० नौमी-(सं० नवमी) स्त्री० नवीं तिथि ।

प्रा० नौसादर-पु०एकतरहकाखार ।

सं० न्याय-(नि, निश्चय इ=जाना) पु० धर्म, विचार, इन्साफ, नीति, २ तर्कशास्त्र ।

सं० न्यायकारी, न्यायी-गु० पु० न्याय करनेवाला, मुन्सिफ, आदिल ।

सं० न्यायालय-(न्याय+आलय) थि० अदालत, कचहरी, न्यायसभा ।

सं० न्यायी-(न्याय) गु० पु० न्याय करनेवाला, धार्मिक, धर्मात्मा, २ न्याय शास्त्रका जाननेवाला ।

प्रा० न्यार-(सं० न्याद, नि, अद्=खाना) पु० चारा, सूखी घास ।

प्रा० न्यारा-(सं० निरालय) गु० जुदा, अलग, एकान्त ।

प्रा० न्यारिया-पु० एकजाति के मनुष्य जो सोने चांदी आदि धातुओं को मैल मिट्टी से जुदा करके निकालते हैं ।

प्रा० न्याव-(सं०न्याय) पु० धर्म्मविचार, इन्साफ ।

अं० न्यशनलकांग्रेस=जातीयमहासभा, कौमी दरबार ।

सं० न्यस्त-(नि+अस्त, अस्=देना) कर्म० पु० स्थापित, अर्पित, दियागया ।

सं० न्यास-(नि+अस्) पु०अर्पण, निक्षेप, विन्यास, संन्यास,स्थापन, उपनिधि, धरोहर ।

सं० न्युब्ज-(नि+उब्ज=कोमल करना) पु० अधोमुख,नीचा मुंह, कुब्जमुख, टेढ़ामुख ।

सं०न्यून-(नि=निश्चय, ऊन=थोड़ा, ऊन=कम होना) गु० थोड़ा, कम, २ दोषी, पामर, नीच ।

सं०न्यूनता-(न्यून) भा०स्त्री० कमी, घटी, २ छोट पन, क्षुद्रता, निचाई ।

सं० न्यूनाधिक-(न्यून+अधिक) गु० थोड़ा बहुत, घटबढ़, कमबेश ।

प

सं० प-(पत्=गिरना वा पा=बचाना, या पीना) पु० हवा, पवन,२ पत्ता, ३ पीना, गु० बचाने वाला,२ पीने वाला, ३ तीव्र, ४ लालरंग का ५ शूरवीर ।

प्रा० पवांर-(सं० प्रमर, प्र=बहुत,

मृ=मारना) पु० राजपूतों की एक जाति, ३६ में से। [ह्रास ।

प्रा० पँवारा-पु० कहानी, कथा, इति-

प्रा० पंवारिया-(पंवारा) पु० भाट, कहानी कहनेवाला, नक़लिया ।

प्रा० पंवारी-(सं० पर्णवाटी) स्त्री० पान की बाड़ी ।

प्रा० पंख-(सं० पक्ष) पु० पांख, पर ।

प्रा० पंखडी-(सं० पक्ष) स्त्री० फूल की पत्ती, कली, पखड़ी। [बेना ।

प्रा० पंखा-(सं० पक्ष) पु० बिजना,

प्रा० पंखी-(सं० पक्ष) पु० पखेरू, पक्षी, स्त्री० छोटा पंखा ।

प्रा० पंगत-(सं० पंक्ति) स्त्री० पांत पांती, श्रेणी ।

प्रा० पंगला-(सं० पंगु०) गु० लंगड़ा, टेढ़े पांवका, अपंग । [परिंद ।

प्रा० पंछी-(सं० पक्षी) पु० पखेरू,

प्रा० पकड़ना क्रि० स० गहना, हाथ में लेना, धरना, २ रोकना, बाधा करना, टोकना, तर्क करना, ३ दोष निकालना ।

प्रा० पकना-(सं० पचन, पच्=पकाना) क्रि० अ० रंधना, २ पक्का होना।

प्रा० पकापकाया-बोल० तयार, पकाहुआ ।

प्रा० पकवान-(सं० पकान्न, पक=पकाहुआ अन्न=अनाज) पु० पका हुआ अन्न, तलीहुई चीज, मिठाई ।

प्रा० पका } (सं० पक्व) गु० पका
पक्का } हुआ, कच्चा नहीं (जैसे फल) २ रींधा हुआ, ३ पूरा, चतुर, होशियार, निपुण, प्रवीण, सावधान, ४ दृढ़, मजबूत, पोढ़ा, ५ सिद्ध किया हुआ, साबित किया हुआ ।

सं० पक्ति-(पच्+ति, पच्=पकना पकाना) स्त्री० पचन, पकना, पकाना, पाक, सिद्धि, पकाई ।

सं० पक्व-(पच्=पकना) गु० पका, पाका, पका हुआ, पक्का, २ दृढ़, ३ चतुर, प्रवीण ।

सं० पक्ष-(पक्ष्=लेना वा पकड़ना) पु० पख, पाख, अंधेरा उजेलापाख, आधा महीना, २ पंख, पांख, पर, डेना, ३ सहाय, बल, ४ तरफ़, ओर, ५ अंग, पार्श्व, पांजर, ६ जत्था, दल, टोली, तड़, ७ मित्र, ८ आधा, शरीर का आधा भाग, ९ तीरका पंख, १० तरफ़दार, ११ जुल्फ़, जूरा, कबरी अर्थात् पटियां ।

सं० पक्षक-(पक्ष्+अक) क० पु० खिड़की, मित्र, मददगार ।

सं० पक्षद्वार-पु० खिड़की ।

सं० पक्षपात-(पक्ष=तरफ़ अथवा अनुचित सहाय, पत्=गिरना) पु० अन्याय से सहायता देना, तरफ़दारी, पक्ष, पक्षेदारी, अन्याय ।

सं० पक्षपाती-(पक्षपात) पु० पक्षपात करनेवाला, अन्याय से सहाय करनेवाला,पक्ष करनेवाला, तरफ़दार, सहायक ।

सं०पक्षाघात-(पक्ष=शरीरका एक भाग,आघात=मारना) पु० अर्द्धाङ्ग, झोला ।

सं० पक्षान्तर-(पक्ष=तरफ़, अन्तर =दूसरी) पु० दूसरी ओर, विपक्ष ।

सं० पक्षिराज-(पक्षिन्=पखेरू, राजन्=राजा) पु० पखेरुओं का राजा, गरुड़ ।

सं० पक्षी } **पक्षीय** } (पक्ष)पु०पखेरु, परिन्द, २ बान,तीर, ३ सहायक, हिमायती । [खिन्न ३ पलक ।

सं० पक्ष्म-क० पु० अतिलोभी, २

प्रा० पख } **पाख** } (सं० पक्ष) पु० पखवारा, आधा महीना, पक्ष, २ तरफ़, जत्था, ३ सहाय ।

प्रा० पखड़ी-(सं०पक्ष=पंख) स्त्री० फूल की पत्ती ।

प्रा० पखवारा-(सं० पक्ष) पु० पाख,पख,पन्द्रहदिन,आधामहीना ।

प्रा० पखान-(सं०पाषाण)पु०पत्थर।

प्रा० पखारना } **पखालना** } (सं० प्रक्षालन) क्रि० स० धोना, खँघालना, शुद्धकरना,साफ़करना ।

प्रा० पखाल-(सं० पयःखल्ल, पयस् =पानी, खल्ल=खाल) स्त्री० एक प्रकारका चमड़े का बड़ाथैला जिस में पानी लायाजाता है और वह बैल पर भैंसे पर अथवा ऊंटपर लादीजाती है ।

प्रा० पखावज-स्त्री० मृदंग, ढोलक, एकप्रकार का बाजा । [वाला ।

प्रा० पखावजी-पु० पखावजबजाने

प्रा० पखेरू-(सं० पक्षी) पु० पंछी, पक्षी, परिन्द ।

प्रा० पग-(सं० पद) पु० पांव, पैर, गोड़ ।

प्रा० पगपटतारबजाना-बोल० नाचनेमें पांवों से गत बजाना ।

प्रा० पगडण्डी } **पगदण्डी** } (पग=पांव,दण्डी लकीर) स्त्री० छोटा वा संकेत रस्ता, पद चिह्न, चोरराह, लीक, गुप्तमार्ग ।

प्रा० पगड़ी-स्त्री० पगा, पगिया, चीरा, दस्तार, अम्मामा, शमला, मंदील ।

प्रा० पगधारना-(पग=पैर, धारना =रखना) क्रि० अ० पगधारना, सिधारना, जाना, आना ।

प्रा० पगना } **पागना** } क्रि० अ० मिलना, लीन होना, रस में डूबना । [सूखे ।

प्रा० पगला-गु० पागल, बावला,

प्रा० पगार—पु० गारा, गीली मिट्टी।
सं० पङ्क—(पचि=फैलाना) पु० कीचड़, कर्दम, चोदा, कीच, कांदौ, दलदल, २ पाप।
सं० पङ्कज—(पङ्क=कीचड़, जन्=पैदाहोना) क० पु० कमल, पद्म, कँवल।
सं० पङ्कनिधि—(पंक=कीचड़ निधि=खजाना) पु० समुद्र, सागर।
सं० पङ्करुह } पङ्के कीचड़में रुहू=उपङ्केरुह } गना) पु० कमल, कँवल।
सं० पंक्ति—(पचि=फैलना, वा फैलाना) स्त्री० पांति, पांत, पंगत, धारी, लकीर, श्रेणी, कतार।
सं० पंगु—(खजि=लंगड़ाकेचलना) गु० लंगड़ा, पंगुला, अपंग।
प्रा० पचखना—(सं० पञ्च=पांच, खण्ड=भाग) गु० (घर) जिस में पांच खण्ड हों।
सं० पचन—(पच्=पचना) भा० पु० पचना, २ पाक, पका हुआ, ३ आग, ४ पकानेवाला।
प्रा० पचना—(सं० पचन) क्रि० अ० गलना, हज़म होना, २ सड़ना, जलना, बिगड़ना, ३ मिहनत करना, जतन करना।
सं० पचनीय—(पच्+अनीय) र्म० पु० पाकयोग्य, पकाने के लायक।
प्रा० पचपन—(सं० पञ्च+पञ्चाशत, पञ्च=पांच, पञ्चाशत=पचास) गु० पचास और पांच।
प्रा० पचमहला—(सं० पंच=पांच, और अरबी महल) गु० पचखना, पचकोठा।
सं० पचमान—क० पु० पकानेवाला या पकाता हुआ।
प्रा० पचलड़ी—स्त्री० पांच लड़ की माला।
प्रा० पचानवे—(सं० पञ्च नवति, पञ्च=पांच, नवति=नब्बे) गु० नब्बे और पांच।
प्रा० पचास—(सं० पञ्चाशत्) गु० पांच गुना दश।
प्रा० पचासी } (सं० पञ्चाशीति पचियासी } पञ्च=पांच, अशीति=अस्सी) गु० अस्सी और पांच।
सं० पचिण—पु० आग, अग्नि।
प्रा० पचीस } (सं० पञ्चविंशति, पच्चीस } पञ्च=पांच, विंशति=बीस) गु० बीस और पांच।
प्रा० पचौनी—(सं० पच्=पचना) स्त्री० ओझरी, आमाशय, पेट में एक थैली सी होती है जो खाना खाते हैं सो पहले उसमें पहुँचताहै।
प्रा० पच्चर—पु० फणी, ठेका, कील, खूंटी, मेख।
प्रा० पच्चरमारना—बोल० खिझाना, सताना, दुखदेना, आड़देना, किसी का काम अड़ा देना।
प्रा० पच्ची—गु० लगा हुआ, संयुक्त,

सटा हुआ ।

प्रा० पच्चीहोना—बोल० आपस में सटाना जैसे लेई से, २ बहुत प्यार होना ।

प्रा०पच्चीकारी—स्त्री०जड़ाई,खुदाई, २ रफूकरना, टांका मारना ।

प्रा० पच्छम } (सं०पश्चिम) स्त्री०
पच्छिम } पछाहँ, पश्चिमदिशा।

प्रा० पच्छी—(सं०पक्षी) पु०सहायी, साथी, सहायक, २ पखेरू, पक्षी ।

सं०पच्यमान—र्म्म०पु०पकायागया।

प्रा० पछताना—(सं०पश्चात्तापन, पश्चात्=पीछे, तप्=जलना) क्रि० अ०पछतावा करना, सोचना, पीछे दुख करना, हाथ मलना, शोक वा अनुताप वा खेद करना, कुढ़ना, कलपना ।

प्रा० पछतावा—(सं०पश्चात्ताप) पु० पस्तावा, खेद, सोच, अनुताप, चिन्ता,शोक,सन्ताप,अफसोस ।

प्रा० पछवा } (सं० पश्चिमवात,
पछियाव } पश्चिम=पच्छिम, वात=हवा) स्त्री० पश्चिम की हवा।

प्रा० पछाड़—(पछाड़ना) भा०स्त्री० पटकन, गिराना, नीचे गिरना, २ फटकन, पछाड़ ।

प्रा० पछाड़खाना—बोल० सिर के बल गिरना ।

प्रा० पछाड़ना—क्रि०स० गिराना, पटकना, अधीन करना ।

प्रा० पछोड़ना—(सं०स्फुट्=जुदा२ करना) क्रि० स० फटकना ।

प्रा० पजावा - (फा०पजावा) पु० आंवा, ईंट पकने की जगह ।

प्रा० पजेब—(फा०पाजेब, पा=पैर, जेब शोभा वा गहना) स्त्री०पाजेब, पैरमें पहनने का गहना, किंकिणी ।

सं० पञ्च—(पचि=फैलना) गु०पांच, पु० पञ्चायतमें बैठकर विचारकरने वाला, मध्यस्थ, विचारकर्त्ता ।

सं० पञ्चक—(पंच=पांच) पु०ज्योतिषमें धनिष्ठादि रेवतीपर्य्यन्त पांच नक्षत्रों का एक जगह पर आना, २ पांच का समूह, गु० पांच, पांच सम्बन्धी ।

सं० पञ्चगव्य—(पंच=पांच, गव्य=गायका) पु० गाय के पांच पदार्थ (जैसे १ दूध, २ दही, ३ घी, ४ गोबर, ५ गोमूत्र) ।

सं०पञ्चतत्त्व—(पञ्च=पांच,तत्त्व=भूत वा पदार्थ) पु० पांच भूत अर्थात् १ पृथ्वी, २ पानी, ३ आग, ४ हवा, ५ आकाश ।

सं० पञ्चतन्मात्र—पु० रूप, रस, गन्ध,शब्द,स्पर्श,पञ्चतत्त्वोंके गुण ।

सं० पञ्चता भा०स्त्री० } (पञ्च=
पञ्चत्व भा० पु० } पांच पदार्थ अर्थात् शरीरके पांचोंतत्त्वोंका पांचोंमेंमिल जाना)मौत,मृत्यु,मरण।

सं० पञ्चतीर्थी—(पंच=पांच, तीर्थ =पवित्र जगह) स्त्री० प्रयाग,पुष्कर आदि पांच तीर्थ, २ कार्तिक सुदी ११ से पूनौ तक के पांच दिन ।

सं० पञ्चदश—(पञ्च+दश)पु० पन्द्रह ।

सं० पञ्चधा—(पञ्च=पांच, धा= प्रकार) क्रि० वि० पांच प्रकारसे पंचविध ।

सं० पञ्चनख—पु० पांच नखवाला, हस्ती, कच्छप, व्याघ्र, कृकलाश, स्त्री० बिस्तुइया, पल्ली, छपकली ।

सं० पञ्चनद—(पञ्च+नद) पु० पंजाब अर्थात् जिस देशमें १ सत-लज, २ व्यासा, ३ रावी, ४ च-नाब, ५ भिलम ये पांच नदियां बहती हैं ।

सं० पञ्चपात्र—(पञ्च+पात्र)पु० एक बरतन जो शायद पांच धातु ओं का बना होता है और पूजा के समय काम आता है, २ पांच पात्रों का समूह ।

सं०पञ्चप्राण—(पञ्च=पांच,प्राण= सांस)पु० पांच प्रकार की हवा जिनके सांस लेनेसे मनुष्य जीता है और उनके नाम ये हैं (१ प्राण २ अपान, ३ व्यान, ४ उदान, ५ समान) ।

सं० पञ्चभूत—(पञ्च+भूत)पु० पांच तत्त्व (अर्थात् १ पृथ्वी,२पा-नी, ३ आग, ४ हवा,५आकाश)।

सं०पञ्चभूतात्मा—(पञ्चभूत+ आत्मा) पु० मनुष्य जो पांच तत्त्वों से बना हुआ है, २ देही ।

सं० पञ्चम—(पञ्च) पु० पांचवां पु० एक रागका नाम ।

सं० पञ्चमी—(पंच०) स्त्री० पांचवीं तिथि, पांचे ।

सं० पञ्चमुख—(पञ्च+मुख) पु० शिव, महादेव, २ सिंह, शेर ।

सं०पञ्चरत्न—(पञ्च+रत्न)पु० पांच रतन) जैसे १ सोना, २ हीरा, ३ मोती,४लाल,५ नीलम,और कहीं कहीं सोनेकी जगह मूँगा गिनतेहैं)

सं०पञ्चवक्त्र—(पञ्च=पांच, वक्त्र= मुँह) पु० शिव, महादेव,२सिंह ।

सं० पञ्चवटी—(पञ्च=पांच, वट= वृक्ष) स्त्री० एकजगहका नाम जो गोदावरीके पास थी जहां रामचन्द्र वन वास के समय रहेथे और जहां १ पीपल, २बिल्व, ३ बड़, ४धात्री, ५ अशोक ये पांच वृक्ष थे ।

सं० पञ्चबाण } (पञ्च=पांच, बाण
पञ्चशर } वा शर=तीर) पु० कामदेवका नाम, जिसके पांचबाण कहे जाते हैं, जैसे "सम्मोहनोन्माद नौच शोषणस्तापनस्तथा । स्तम्भ नश्चेतिकामस्य, शराः पंचमकीर्त्ति०

ताः"॥—अर्थ १ मोहना, २मस्तकरना, ३सुखाना, ४ सताना या जलाना, ५शिथिल अथवा अचेत करना येपांच कामदेवके बाण कहलाते हैं।

सं० पञ्चशाख—पु० हाथ, कर, पांचशाखा अर्थात् अँगुली।

सं० पञ्चसूना—स्त्री० जीव=वध स्थान, चुल्ली चूल्हा, पेषणी, चक्की, कंडनी, गाळी व ओखली, उपस्कर, बढ़नी, उदकुम्भ, घनौंची वा घड़ा रखनेका स्थान।

सं० पञ्चाङ्ग—(पञ्च+अङ्ग) पु० तिथिपत्र, पत्रा (जिससे १ तिथि, २वार, ३ नक्षत्र, ४ योग, ५ करण ये पांच जाने जायँ) पञ्जिका, चन्दनागरु कर्पूर कुंकुमं गुग्गुलस्तथा। पञ्चाङ्गमुच्यते धीरैर्धूपदानविधावमुम् १चन्दन २ अगरु, ३कर्पूर ४ केशर, ५ गुग्गुल, १ फल, २फूल, ३ जड़, ४ पत्ता, ५ डार।

सं०पञ्चानन—(पञ्च=विस्तृत, या पांच, आनन=मुँह) पु० सिंह, केशरी, शेर, २ शिव, महादेव।

सं०पञ्चामृत—(पञ्च+अमृत)पु० १ दूध, २दही, ३ चीनी, ४ घी, ५ मधु इन पांचों से बनीहुई वस्तु।

प्रा० पञ्चायत—(सं०पंच) स्त्री० सभा जहां पांच आदमी मिलकर विचार करते हैं, विचार करने की सभा।

सं० पञ्चाल—पु० पंजाबदेश।

सं०पञ्चालिका—स्त्री० कठपुतली, गुड़िया, गुड्डा, २ द्रौपदी।

स०पञ्चावस्था—स्त्री०बाल्य, कुमार, पौगड, युवा, वृद्धा।

सं० पञ्चेन्द्रिय—(पञ्च+इन्द्रिय) स्त्री० पांच=इन्द्री, (इन्द्रिय शब्द को देखो)।

सं० पञ्जर—(पजि=रोकना वा घेरना) पु०पंसली, ठठरी, पंसलियोंका समूह, २ पिंजरा।

सं०पट—(पट्=घेरना वा बैठना) पु० कपड़ा, पल्ला, २परदा, आड़, ओट।

प्रा० पट—(सं० पटत्, पट्=जाना) पु० गिरने या मारने का शब्द, २ किवाड़, झिलमिल, गु० ऊपर, नीचे, उलटा, औंधा।

सं० पटक—क० पु० डेरा, क़नात, पटाव, छावनी फ़ौज रहनेकी जगह।

सं०पटकार—क०पु० जुलाहा, कोरी, बुननेवाला।

सं० पटच्चर—पु० जीर्णवस्त्र, चिथड़ा, २ चोर, सेंध देनेवाला, ठग।

प्रा० पटकन—(पटकना) स्त्री० पछाड़, चोट।

प्रा० पटकनखाना—बोल० पछाड़ खाना, नीचे गिरना।

प्रा० पटकना—क्रि० स० पछाड़ना

नीचे गिराना, दे मारना ।

प्रा० पटका (सं० पट्ट=बैठना वा लपेटना) पु० कमरबंधा, दुपट्टा ।

प्रा० पटड़ा / पटरा (सं० पट्ट, पट्=घेरना) पु० तख्ता, पाटा, पीढ़ा ।

प्रा० पटतर-गु० बराबर, समान ।

प्रा० पटना-क्रि० अ० मिलना, भर पाना (जैसे हुंडी का पटना) २ पानी सींचा जाना, पनियाना, ३ भरना, ४ छाया जाना, ढकजाना ।

प्रा० पटना (सं० पाटलिपुत्र) पु० एकशहरकानाम जो सूबै बिहार में है ।

प्रा० पटनि-पु० कपड़े, वस्त्र, उढ़ना ।

प्रा० पटरानी / पाटरानी (पाट+रानी) स्त्री० पहली और बड़ी रानी, महारानी ।

प्रा० पटरी (सं० पट्ट, पट्=घेरना) स्त्री० लिखने की पट्टी, पटिया, तख्ती, २ कची सड़क ।

सं० पटल—(पट=कपड़ा, वा आड़, ला=लेना) पु० ढकने का कपड़ा, परदा, २ आंख का परदा, ३समूह ।

प्रा० पटली-स्त्री० पांत, पंक्ति, श्रेणी ।

सं० पटवाय-पु० कनात, तम्बू, डेरा ।

प्रा० पटवारी-पु० गांवका हिसाब रखनेवाला ।

प्रा० पटह—पु० बाना, पटा, २डंका, नक़ारा, नगारा ।

प्रा० पटा—(सं० पट्ट, पट्=घेरना) पु० पाट, पाटा, आसन जिस पर हिंदूलोग बैठ कर पूजा करते हैं अथवा खाना खाते हैं, २ गदका ।

प्रा० पटाका / पटाखा पु० टोंटा, सुर्री, छुछूंदर ।

प्रा० पटाना—क्रि० स० सींचना, पानी देना, पनियाना, २ चौका देना, लीपना, थोपना, ३ छत को कड़ी अथवा धरन से छाना, ४ हुंडीके रुपये पाना, ५ झगड़ा शांत होना, आग शांत होना ।

प्रा० पटाव—भा० पु० सिंचाई, २ छत बनाना, द्वारके ऊपरका काठ ।

प्रा० पटिया (सं० पट्टिका) स्त्री० पटरी, पट्टी, स्लेट, २ पु० गलेमें पहनने का एक गहना, ३ शिरके गुहे बार ।

सं० पटीर-पु० बसफोड़, २ चंदन, ३ घटा, ४ मूल, ५ केदार, क्यारी, ६ कामदेव, ७ चलनी, ८ पपीहा, ९ रांग, १० खदिर, ११ उदर ।

सं० पटु (पट्=जाना वा चमकना) गु० चतुर, निपुण, प्रवीण, तेज, होशियार ।

सं० पटुत्व-भा० पु० / पटुता भा० स्त्री० (पटु) चतुराई, निपुणाई, प्रवीणता ।

प्रा० पटुआ (पाट) क० पु० रेशम

का काम करनेवाला, रेशम से माला और मोती आदि पिरोनेवाला ।

प्रा० पटेल—पु० चौधरी, गांव का मुखिया ।

प्रा० पटेला } पटैला } पु० एक प्रकार की नाव, २ जिससे धरती बराबर करते हैं, धरन ।

सं० पटोल—पु० परिवर, परवर ।

सं० पट्टन—पु० नगर, शहर ।

प्रा० पट्टा (सं० पट्ट) पु० बाल, अलक, २ पटिया जो कुत्ते के गले में डालते हैं, ३ चकनामा, ठीका अथवा किसी जमीन का काग़ज़ ।

प्रा० पट्टू (पाट) पु० लोई, कम्बल ।

प्रा०पट्ठा—पु० जवान, पहलवान, २ पाठा, नस, शिरा ।

सं० पठन (पठ्=पढ़ना) भा० पु० पढ़न, पाठ, पढ़ना, अध्ययन, सबक़ ।

प्रा० पठाना—क्रि० स० भेजना ।

प्रा० पठावनी } पठौनी } स्त्री० मज़दूरी, मेहनत ।

सं०पठित—(पठ्=पढ़ना) कर्म०पु० पढ़ा हुआ ।

सं० पठनीय } पाठ्य } कर्म० पढ़ने योग्य ।

प्रा० पठिया—स्त्री० जवान स्त्री, यौवना, २ छोटी बकरी ।

प्रा०पड़ना (सं० पतन, पत्=गिरना) क्रि० अ० गिरना, २ लेटना, ३ आजाना, संयोग होना, ४ पड़ाव डालना, डेरा करना, ५ टपकना, चूना ।

प्रा० पड़रहना } पड़ेरहना } बोल० बेवशरहना, सोरहना, लेट रहना ।

प्रा० पड़ाव (पड़ना) पु० ठहरने की जगह, ठहराव, छावनी, डेरा, कंपू ३ सेना, ४ भीड़ ।

प्रा०पड़िया—स्त्री० भैंसका बच्चा ।

प्रा० पड़ोस (सं० प्रतिवास) पु० पास बसना, समीपता, सहवास ।

प्रा० पड़ोसी (सं० प्रतिवासी, वा पार्श्वी) पु० पास रहनेवाला ।

प्रा०पढ़न (सं०पठन) भा०पु०पढ़ना ।

प्रा० पढ़ना (सं० पठन) क्रि०स० पाठ करना, बांचना, सीखना, रटना, जपना ।

प्रा०पढ़न्त (सं०पठन) स्त्री० पढ़न, पढ़ना, पाठ, सन्था, २मंत्र, टोना, जादू ।

प्रा० पढ़ागुणा } पढ़ालिखा } बोल० गु० पढ़ा हुआ, पण्डित, प्रवीण, निपुण ।

प्रा० पढ़ाना (पढ़ना) क्रि० स० सिखाना, सीखदेना, शिक्षादेना ।

सं०पण (पण्=व्यवहार करना) पु० प्रतिज्ञा, वचन, होड़, शर्त, बाजी,

२ बीस गंडे अथवा ८० कौड़ी का परिमाण, ३ व्यवहार, लेनदेन, मूल्य, वेतन, शाक, साग, क़रार ।

सं० पणन—भा०पु० विक्रय, बेचना।

सं० पणित-स्भ०पु०बेचागया२स्तुत।

सं० पणव-(पण=व्यवहार वा जाना अथवा पण्=सराहना) पु० छोटा ढोल। [बुद्धि, मति, समझ।

सं० पण्डा–(पण्=सराहना) स्त्री०

प्रा० पण्डा–(सं०पंडित)पु०पुजारी।

सं० पण्डित–(पण्डा=बुद्धि) पु० बुद्धिमान्, विद्यावान्, पढ़ा हुआ, विद्वान्, २ पढ़ानेवाला, पाठक, शिक्षक। [भिमानी, मूर्ख।

सं० पण्डितमन्य–रू० पु० विद्या-

प्रा० पण्डु–(सं० पाण्डु) पु० दिल्लीका पुराना राजा, कुन्ती का पति, और युधिष्ठिर आदि पांचों पाण्डवों का बाप।

सं० पण्य–(पण्=लेन देन करना, वा सराहना) भा० पु० बेचने योग्य, लेन देन करने योग्य, व्यवहार करने योग्य, बेचने की वस्तु, वाणिज्य, २ सराहने योग्य।

सं० पण्यशाला–(पण्य=लेन देन करने योग्य, शाला=जगह) स्त्री० दूकान, हाट, बाज़ार।

सं० पण्यस्त्री-(पण्य+स्त्री) स्त्री० वेश्या, नगर नारी, पतुरिया, रण्डी।

प्रा० पत–(सं०पद्=अधिकार) स्त्री० प्रतिष्ठा, इज़्ज़त, आबरू, बड़ाई, नामवरी, २ (सं०पति) पु०स्वामी, प्रभु, धनी, मालिक, भर्त्ता, ३ (सं० पत्र) पत्ता।

सं० पतङ्ग–(पतन=गिरता हुआ, गम्=जाना) पु० सूर्य, २ फड़ङ्ग, पतंगा, टिड्डी, उड़नेवाला कीड़ा, ३ गुड्डी, कनकव्वा, ४ एक लकड़ी जिससे रंग निकलता है, पारा।

प्रा० पतङ्गा—पु०चिनगारी,चिनगी।

सं० पतंजलि–पु० शेष, महाभाष्य का बनानेवाला ऋषीश्वर।

प्रा० पतझड़–(पत=पत्ता, झड़= झड़ना) स्त्री० एक ऋतुका नाम जिस में वृक्षों के पत्ते झड़ जाते हैं, शिशिर।

सं० पतन–(पत्=गिरना) पु० पड़ना, गिरना, पछाड़, पटकन, पड़ना।

सं० पतत्र–पु० पंख, पक्ष, पर।

सं० पतद्ग्रह–पु० पीकदान, अवशेष, सेना, लशकर।

प्रा० पतला–(सं०प्रतनु) गु०पतील, झीना, महीन, बारीक, २ दुबला।

प्रा० पतवार–स्त्री० जहाज़ में एक चीज जिससे जहाज़ चलाया जाताहै, नाव का करण।

प्रा० पता–पु०ठिकाना,चिह्न,खोज।

सं० पताका–(पत्=जाना,वा गिरना

वा जानना) स्त्री० ध्वजा, झण्डा, चिह्न, फरहरा ।

सं० पति--(पा=बचाना) पु० स्वामी, मालिक, धनी, २ भर्ता, खाविंद, इज्जत ।

सं० पतित--(पत्=गिरना) गु० गिरा हुआ, भ्रष्ट, पापी, नष्ट, दुष्ट, धर्म से गिरा हुआ ।

सं० पतितपावन--(पतित=पापी, पावन=पवित्र करनेवाला)गु०पापियों को शुद्ध करनेवाला, परमेश्वरका नाम और गुण ।

सं०पतिदेवता--(पति+देवता) स्त्री० वह स्त्री जिसके पतिही देवता के बराबर हो, पतिव्रता ।

प्रा० पतिया } (सं० पत्रिका) स्त्री०
पाती } चिट्ठी, पत्री, पत्र, खत, २ प्रतीतपत्र, जिस में पंडित लोग अपनीसम्मति लिखकर देतेहैं ।

प्रा० पतियाना--(सं०प्रत्ययन=विश्वास,प्रति=फिर,इण्=जाना)क्रि० स० भरोसा करना, विश्वास करना, प्रतीत करना ।

प्रा० पतियारा--(सं० प्रत्यय) पु० भरोसा, विश्वास, प्रतीत ।

सं० पतिंवरा—स्त्री० स्वेच्छा से विवाह करनेवाली ।

सं०पतिव्रता—पति=भर्ता,व्रत=नियम अर्थात् (जिसके पति की सेवाही करना ही नियम है) स्त्री० सती, कुलवती, पतिदेवता स्त्री, पतिसेवा करनेवाली स्त्री ।

प्रा० पतील—गु० पतला, झीना, मिहीन, बारीक ।

सं० पतितस्त्री—पतितत्रिया, पतुरिया ।

प्रा० पतुरिया } स्त्री० वेश्या,
पतरिया } गणिका ।

प्रा० पतोह } (सं० पुत्रवधू) स्त्री०
पतोहू } बेटा की स्त्री, बहू ।

सं० पत्तन—(पद्=जाना) पु० नगर, शहर ।

प्रा० पत्तर—(सं०पत्र) पु० पता २ चिट्ठी, ३ दानपत्र जो तांबे पर खोदा जाता है, ४ सोने चांदी का वर्क ।

प्रा० पत्तल—(सं० पत्रावली, पत्र=पत्ता, अवली=पांत) स्त्री० पनवारा, पत्तों की बनी हुई चीज जिस में खाना खाते हैं ।

प्रा० पत्ता—(सं० पत्र) पु० पात, दल, गहना, पाता ।

प्रा० पत्ताहोना—बोल० भाग जाना, चंपतहोना ।

सं०पत्ति—पु० पैदल, गर्त, गढ़हा, मूल, वीरभेद, सैन्यभेद, एक रथ एक हाथी तीन घोड़े पांच पैदल जिस फौज में हों उसकी पत्ति संज्ञा है, गति, चाल, प्राप्ति ।

प्रा० पत्ती (सं० पत्र) स्त्री० पाती,

पंखड़ी, भांग, भंग, बूटी, सब्जी ।

प्रा० पत्थर (सं० प्रस्तर, प्र=बहुत, स्तृ=फैलाना) पु० पाषाण, पाथर, शिला ।

प्रा० पत्थर छाती पर रखना—बोल० सब्र करना, संतोष करना, चुप होरहना, वश नहीं चलना ।

प्रा० पत्थरपसीजना—बोल० पिघलना, नर्म होना, कोमलचित्तहोना, नर्मदिलहोना, कठिन काम सहज होना ।

प्रा० पत्थरपानीहोजाना—बोल० कोमलचित्त होना, नर्मदिल होना ।

प्रा० पत्थरसाफेंकमारना—बोल० किसी की बात को बिन समझे उत्तर देना, कड़ी बात कहना ।

प्रा० पत्थरसेसिरफोड़ना—बोल० मूर्ख को शिक्षा देना ।

प्रा० पत्थरहोना—बोल० भारीहोना, २ अचल होना, अटल होना, चुप खड़ा रहना, ३ निर्दयी होना, कठोर चित्तहोना ।

प्रा० पत्थरकला } (सं० प्रस्तरकला)
पथरकला } स्त्री० बंदूक, तुपक ।

सं० पत्न्याट—(पत्नी + आट, अट=घूमना सैर करना) पु० मंगली पुरुष, खुशदिल, खुशतबग्र, पुंश्चल जो औरत को लेकर सैर करै ।

सं० पत्रणा—स्त्री० गोटा, लरी, रोदा, कपड़ों का चीर ।

सं० पत्ररेखा—स्त्री० तिलक की रेखा, चंदनादिका लगाना ।

सं० पत्रदाता—क० पु० चिट्ठीरसां, पोष्टमैन ।

सं० पत्रदारक—क० पु० अश्रु, आंसू, बालक, वायु, आरा, आरी ।

सं० पत्रपरशु—पु० सुवर्णादि कतरने की कैंची ।

सं० पत्रपाश्या—स्त्री० सोने का टीका, सोने की खौरि ।

सं० पत्ररंजन—पु० पत्र लिखना, चित्रलिखना, शृंगारकरना ।

सं० पत्नी—(पति) स्त्री० भार्या, स्त्री जोरू, ब्याही हुई स्त्री ।

सं० पत्र—(पत्=गिरना) पु० पत्ता, २ चिट्ठी, ३ पुस्तक का पत्रा, ४ सोने चांदी अथवा और किसी धातु का पत्तर, सवारी, दिस्ता, रथ, बाण, पंख ।

प्रा० पत्रा—(सं० पत्र) पु० तिथिपत्र, पंचाङ्ग, २ पन्ना, सफ़हा ।

सं० पत्रालय—धि० डाकखाना, पोष्ट-आफ़िस ।

सं० पत्रिका } (सं० पत्र) स्त्री० चिट्ठी,
पत्री } पत्र, २ पत्ती, ३ वृत्त, ४ कमल । [राजमार्ग ।

सं० पत्सल—पु० सड़क, रास्ता, पथ,

सं० पथ—(पथ्=जाना) पु० रस्ता, मार्ग, बाट, पैंड़ा, डगर ।

प्रा० पथराना (पत्थर) क्रि० अ० बड़ा होना, पत्थरमारना ।

प्रा० पथरी-(सं०प्रस्तर)स्त्री० कंकरी, २ चकमक, ३ पेट में पथरीरोग, ४ पत्थर का बरतन ।

प्रा० पथरीला—(पत्थर) गु० कंकरीला ।

सं० पथिक-(पथ्=जाना)पु० बटोही, यात्री, मार्गु, राही, मुसाफ़िर ।

सं० पथिल } पथी } क० पु० मार्गगामी, मुसाफ़िर ।

सं० पथिवाहक-(पथि=राह, वह= चलना) क० पु० कहार, मजूर ।

सं० पथ्य-(पथ=मार्ग, राह, जो इ- लाज के मार्ग में अर्थात् इलाज के लिये हितकारी हो) कर्म० पु० रोगी के हितकारी खाना, बीमार के खाने योग्य चीज़,पथ, उचित, हित।

सं० पथ्या-स्त्री० हरीतकी, हड़ ।

सं० पद (पद्=चलना जिससे चलते हैं) पु० पांव, पैर, चरण, २ पद- चिह्न,पांवका चिह्न, ३ स्थान, जगह, ४ प्रतिष्ठा,बड़ाई,अधिकार, उहदा, लक़ब, पदवी, उपाधि, ५ शब्द, विभक्ति समेत शब्द, ६ श्लोक का पाद, ७ वस्तु, पदार्थ ।

सं० पदचर } पदचारी } (पद=पांव, चर=च- लना) पु० पैदल ।

सं० पदज-(पद=पांव, जन्=पैदा होना) पु० पांवकी अंगुली ।

सं० पदत्याग-पु० इस्तीफ़ा,अधि- कारत्यागपत्र ।

सं० पदत्त्राण-(पद्=पैर, त्रा= बचाना) पु० जूता,पगरखी, पनही ।

प्रा० पदम } पदुम } (सं० पद्म) पु० कमल, कँवल, २ सौ नील

प्रा० पदवी-(सं० पद) स्त्री०बड़ाई, प्रतिष्ठा, अधिकार, उपनाम ।

सं० पदवी-(पद्=जाना)स्त्री०मार्ग, रस्ता ।

सं०पदाति-(पद=पांव,अत्=चलना) पु० पैदल, पियादा, पैदल, सेना ।

सं० पदाम्भोज-(पद=पैर,अम्भोज =कँवल) पु० चरणकमल, कमल कैसे पांव, पदारविन्द ।

सं० पदारविन्द-(पद=पैर, अरवि- न्द=कमल) पु० चरणकमल, कमल कैसे पांव ।

सं० पदार्थ (पद=शब्द, अर्थ=अभि- प्राय) पु० वस्तु, चीज़, उत्तम वस्तु, न्यायशास्त्र में सात पदार्थ माने हैं, (१ द्रव्य, २ गुण, ३ कर्म, ४सामान्य, ५ विशेष, ६ समवाय,७अभाव, कोई कोई नैयायिक, सोलहपदार्थ मानते हैं) शब्द का अर्थ, पद का अर्थ ।

सं० पद्धति—(पद्=पांव से, हन्= मारना) स्त्री० मार्ग, रस्ता, पंक्ति,

३ पूना का ग्रन्थ ।

सं० पद्म-(पद्=जाना) पु० कमल, कँवल, २ सौ नील, ३ व्यूह ।

सं० पद्मगर्भ-(पद्म=कमल, गर्भ= उत्पत्ति) पु० ब्रह्मा जो विष्णु के नाभिकमल से उत्पन्न हुआ ।

सं०पद्मनाभ-(पद्म=कमल, नाभि= नाभ अर्थात् जिनकी नाभि में कमल हो) पु० विष्णु ।

सं० पद्मराग (पद्म=कँवल, राग= रंग, अर्थात् जिसका रंग लाल कमल जैसा हो) पु०लालमणि, माणिक । [ब्रह्मा, सूर्य, कुबेर ।

सं० पद्मलाछन—पु० राजाविशेष,

सं० पद्मस्नुषा(पद्म+स्नुषा=कन्या) स्त्री० लक्ष्मी, दुर्गा, गंगा ।

सं० पद्मा-(पद्म=कँवलअर्थात्जिसके हाथ में कमल हो) स्त्री० लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, कमला ।

सं० पद्माकर-(पद्म=कँवल, आकर =खान) पु०कमलोंकाबड़ातालाब ।

सं० पद्मावती-(पद्म=कँवल,वती= वाली) स्त्री० एक नदीका नाम, २ एक स्त्री का नाम, ३ मनसा देवी ।

सं०पद्मिनी-(पद्म) स्त्री०सुन्दर स्त्री, उत्तम स्त्री, २ कमलिनी, (स्त्रियां चार प्रकारकी होती हैं १पद्मिनी, २ चित्रिणी, ३ शंखिनी, ४ हस्तिनी)

सं०पद्य-(पद्=चरण अथवा श्लोक आदिका पाद) पु० श्लोक, छन्द, कविता, छन्दप्रबंध, नज़्म ।

प्रा० पधारना—(सं० पदधारण, पद=पांव, धारण, रखना) क्रि०अ० जाना, सिधारना, पग धारना, आना, तशरीफ़लाना वा लेजाना ।

प्रा० पन—(सं० पण) पु० वचन, होड़, शर्त ।

प्रा०पन—भाववाचक संज्ञा का चिह्न जैसे लड़कपन, भलापन आदि ।

प्रा० पनघट—(सं० पानीय=पानी घट्ट=घाट) पु० पानी भरनेका घाट।

प्रा०पनच-(सं० प्रत्यंचा प्रति=सामहने, अच्=जाना) स्त्री० चिल्ला, धनुष् की रस्सी, जिह, रोदा ।

प्रा०पनचक्की—(सं० पानीय=पानी चक्र=चक्की) स्त्री० पानी के बेग से चलनेवाली चक्की । [बढ़ना ।

प्रा०पनपना—क्रि०अ०मोटा होना,

प्रा०पनबट्टा—पु० पान रखने का डब्बा, गिलौरीदान ।

प्रा०पनवाड़ी } (सं० पर्णवाटी, पर्ण
पनवारी } =पान, वाटी=बाड़ी) स्त्री० पान की बाड़ी ।

प्रा०पनवारा—(सं०पर्णावली, पर्ण =पत्ता, अवली=पांत) पु० पत्तल, पत्रावली ।

सं० पनस—(पन्=सराहना)पु० कट-हर, २ बन्दर का नाम।

प्रा० पनसारी—(सं० पण्य=बेचने योग्य वस्तु,सृ=फैलाना)पु०पसारी।

प्रा० पनसोई—स्त्री० छोटी नाव।

प्रा० पनहारिन } पनहारी } (सं० पानीय हारिणी, पानीय=पानी,हारिणी=लानेवाली) स्त्री० पानी भरनेवाली।

प्रा० पनही—(सं० पन्नद्धी,पद=पांव, नह्=बांधना) स्त्री० जूता, जूती, पगरखी।

प्रा० पनारी } पनाली } (सं०प्रणाली) स्त्री० मोरी,नाली,प्रणाली।

प्रा० पनिया-(सं० पानीय) पु०पानी, जल, गु० पानी का।

प्रा० पनियाना—(पानीय)क्रि०स० सींचना, पानी देना।

प्रा० पन्थ—(सं०पन्था,पथ्=जाना) पु० रस्ता, मार्ग, राह, २ मत, धर्म।

सं० पन्नग—(पन्न=गिरता हुआ, वा नीचे मुँह किये,गम्=चलना,वा पद=पैर,न=नहीं,गम्=चलना, जो पैरों से न चले) पु० सांप, सर्प, नाग।

सं० पन्नगारि—(पन्नग=सांप,अरि=वैरी)पु० गरुड़, विष्णु का वाहन।

सं० पन्नगाशन - (पन्नग=सांप,अश्=खाना) गरुड़, विष्णु का वाहन।

प्रा०पनही—(सं० पन्नद्धा वा पन्नद्धी, नह्=बाँधना) स्त्री० उपानह्, जूता, पदत्राण। [पत्रा, २ नीलमणि।

प्रा० पन्ना—(सं० पर्ण) पु० पत्र,

सं० पपि—(पा=पीना) कृ० पु० पीने वाला।

सं० पपिस् } पपी } पु०सूर्य,चन्द्रमा,रक्षक, पीनेवाला।

प्रा० पपनी—स्त्री० आँख की बरुनी।

प्रा० पपिहा } पपीहा } पु० एक पखेरू जो बरसात में बहुत बोला करता है।

सं० पपु-(पा=पालना) कृ० पु०पालक, पालनेवाला, रक्षा, रक्षक, पिता, पालक, स्त्री० माता, धात्री, दाई, उपमाता, धाय।

प्रा० पपोटा—पु० पलक,आंखकापुट।

सं० पयः (पा=पीना) पु० दूध, २ पानी, जल।

प्रा० पयनिधि—(सं० पयोनिधि) पु० समुद्र। [रखोरा।

सं० पयमुख-पु० दूधपीनेवाला, शी-

सं० पयस्विनी(पयस्=पानी वा दूध) स्त्री० नदी, २ दुधार गाय, दुधेल गाय, भेड़ी, बकरी।

प्रा० पयान-(सं०प्रयाण)पु०चलना, कूच, बिदा, प्रस्थान, यात्रा।

प्रा० पयाल-(सं०पलाल,पल्=जाना वा=बचाना) पु० पुआल, खर, तिनका, बिचाली।

सं०पयोद(पयस्=पानी,द=देनेवाला,

दा=देना) पु० बादल, बदल ।

सं० पयोधर-(पयस्=पानी वा दूध, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० मेघ, बादल, २ स्त्रीकी चूंची, स्तन, ३ नारियल, ४ गन्ना, ५ सुगंधित घास, ६ पर्वत, दुग्धवृक्ष ।

सं० पयोधि-(पयस्=पानी, धा=रखना) पु० समुद्र, ७ सागर ।

सं० पयोनिधि-(पयस्=पानी, निधि =खज़ाना) पु० समुद्र, सागर ।

सं० पयोराशि-(पयस्=पानी, राशि= समूह, ढेर) पु० समुद्र, सागर ।

सं० पर-(पृ=भरना) गु० दूसरा, पराया, और, भिन्न, अन्य, विदेशी, परदेशी, २ दूर, परे, अन्तर, पर, ३ पिछला, ४ उत्तम, श्रेष्ठ, शिरोमणि, प्रधान, सब से बड़ा, ५ विरोधी, प्रतिकूल, ६ बहुत, अत्यन्त, अधिक, तत्पर, लगा हुआ, पु० वैरी, शत्रु, क्रि० वि० केवल, इसके पीछे, समुच्च० परन्तु, किन्तु, लेकिन ।

प्रा० पर-(सं० उपरि) नित्य सं० ऊपर, पै ।

सं० परकीया-(पर=दूसरा) स्त्री० दूसरे की स्त्री, पराये पुरुष के पास जानेवाली स्त्री ।

प्रा० परख-(सं० परीक्षा) स्त्री० जांच, इम्तिहान, परीक्षा, कसौटी ।

प्रा० परखना-(सं०परीक्षण) क्रि० स० जांचना, परीक्षा करना, देखना, निरखना ।

प्रा० परचूनिया-पु० आटा दाल बेचने वाला, मोदी, बनियां ।

प्रा० परछना-क्रि० स० दुल्हा और दुलहिन की आरती उतारना ।

प्रा० परजंक-(सं० पर्य्यङ्क) पु० पलंग ।

सं० परजात-(पर=अन्य, जात= उत्पन्न) कर्म० पु० अन्य से उत्पन्न, दूसरे से पैदा हुआ, वर्णसंकर, जारज, यार से पैदा किया गया, २ दूसरी जात का, दूसरे क़ौमका ।

प्रा० परत-स्त्री० पुट, तह, चुनत, लड़, थाक, २ नक़ल, कापी ।

सं० परतन्त्र-(पर=दूसरा, तन्त्र= प्रधान है जिस का, अथवा पर= दूसरे के तन्त्र-वश में) गु० परवश, पराधीन, दूसरे के वश ।

प्रा० परतला-पु० तलवारकीपट्टी ।

प्रा० परती-(पड़ना) स्त्री० पड़ी धरती, बिन बोई धरती, बंजर ।

सं० परत्र-अव्य० अन्यत्र, परलोक, और जगह, दूसरी जगह ।

सं० परत्व-भा० पु० भिन्नता, जुदाई, फ़ासला, शत्रुता, श्रेष्ठता, महत्त्व ।

सं० परदेश-(पर=दूसरा, देश=मुल्क) पु० विदेश, परायादेश, और मुल्क ।

सं० परदेशी-(परदेश) गु० विदेशी ।

सं० परन्तप-पु० शत्रु, दुष्ट, गु० शत्रु=

नाशक, जीतनेवाला।

प्रा० परनाना-(सं० परिणय, परि =आपस में, नी=लेजाना) क्रि० स० ब्याह करना, शादी करना।

प्रा० परनाना- पु० नानाका बाप।

सं० परन्तु-(परम्+तु) समुच्च० पर, किन्तु, लेकिन। [जलना।

प्रा० परपराना-क्रि० अ० चरपराना,

प्रा० परबस-(सं० परवश) गु० पराधीन।

सं० परब्रह्म-(पर=सब से बड़ा, ब्रह्म =ईश्वर) पु० सर्वशक्तिमान, ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा।

सं० परभृत-(भृ=पालना) पु० काक पक्षी, कोयल पक्षी, गु० शत्रुका सहायक, अन्य से पालागया।

सं० परम-(पर=उत्तम, सब से अच्छा, मा=नापना, अथवा, पृ=भरना) गु० बहुत अच्छा, बहुतश्रेष्ठ, उत्तम, मुख्य, प्रधान, सब से पहला, भला।

सं० परमगति-(परम=उत्तम, गति =दशा) स्त्री० मोक्ष, मुक्ति, २ उत्तम दशा।

सं० परमत-(पर=भिन्न अथवा दूसरे की मत=सलाह वा सम्मति) पु० दूसरेकी सलाह, २ भिन्नसम्मति।

सं० परमधाम-(परम=उत्तम, धाम =जगह) पु० बैकुंठ, परमपद, स्वर्ग।

सं० परमपद-(परम=उत्तम, पद=जगह) पु० सब से अच्छी जगह, स्वर्ग, बैकुण्ठ, २ मुक्ति, मोक्ष।

सं० परममित्र-(परम=मुख्य, मित्र= दोस्त) पु० पक्का दोस्त, सब से अच्छा मित्र।

सं० परमब्रह्म-(परम=सब से बड़ा ब्रह्म=ईश्वर) पु० परमेश्वर, परब्रह्म।

सं० परमहंस-(परम=उत्तम, हंस= आत्मा, अर्थात् जिसकी आत्मा उत्तमहो) पु० संन्यासी, योगी, स्त्री० शोभा, कान्ति, छबि।

सं० परमा-स्त्री० बड़ी, उत्तमा, शोभा, कान्ति।

सं० परमाणु-(परम=बहुतही, अणु= छोटा) पु० बहुतही छोटी वस्तु, कन, कनिका, ज़र्रा, रेज़ा, २ पल, बहुत थोड़ा समय।

सं० परमात्मा-(परम=उत्तम वा सब से बड़ा, आत्मा=जीव) पु० परब्रह्म, परमेश्वर।

सं० परमानन्द-(परम=बहुत, आनन्द=हर्ष) पु० बहुत खुशी, अत्यन्त आनन्द।

सं० परमार्थ-(परम=उत्तम, अर्थ= प्रयोजन) पु० उत्तम पदार्थ, सब से अच्छा विषय वा प्रयोजन, २ यथार्थज्ञान, पवित्रज्ञान, ३ उत्तम अथवा पहला काम, धर्म पुण्य।

सं० परमायुस्-(परम+आयुस्) पु० बड़ी उमर, दीर्घावस्था, दीर्घायु, दराज़उमर।

सं० परमेश्वर-(परम+ईश्वर) पु० सर्वशक्तिमान्, परमात्मा, ईश्वर।

सं० परमेष्ट-(परम+इष्ट) पु० श्रेष्ठ, महान्, परमेश्वर, ब्रह्मा, देवता।

सं० परमेष्ठिन्
परमेष्ठी } पु० ब्रह्मा, गुरु।

सं०परमोदार-(परम=बड़ा, उदार=दातार) गु० बड़ा दातार, श्रेष्ठ, उत्तम।

सं० परम्परा-(परम्=बहुत, पृ वा पृ=पूरा करना वा भरना) स्त्री० सन्तान, वंश, पीढ़ी, २ रीति, परिपाटी, क्रम, अनुक्रम, पुराने समय की रीति, क़दामत, परंपरा से, क्रि० वि० पहले से, अगले समय से।

प्रा० परला-(सं० पर) गु० दूसरी ओर का, उस तरफ़ का।

सं० परलोक-(पर+लोक) पु० स्वर्ग, दूसरा लोक, मृत्यु, शत्रुजन, अन्यजन, श्रेष्ठजन।

सं० परवश (पर=दूसरे के, वश=आधीन) गु० पराधीन।

सं० परश
पर्शु } (पर=वैरी, शृ=मारना, नाशकरना) पु० फरसा, कुल्हाड़ी, टांगी।

सं०परशुधर-(परशु=फरसा, धृ=रखना) पु० परशुराम।

सं०परशुराम-(परशु+राम, अर्थात् फरसा रखनेवाला राम) पु० जमदग्नि ऋषिका बेटा और विष्णुका छठा अवतार जिसने राजा सहस्रार्जुन को मारा और इक्कीस बार पृथिवी के सब क्षत्रियों को नाश किया।

सं०परवश-गु० पराधीन, पराया भरोसा, पराया सहारा।

प्रा० परस-(सं० स्पर्श) पु० छूना, छुहावट, स्पर्श।

प्रा० परसत-क्रि० वि० छूतेही, स्पर्श करते ही।

प्रा० परसना-(सं० स्पर्शन, स्पृश=छूना) क्रि० स० छूना।

प्रा० परसों-(सं० परश्वस्, पर=पिछला वा दूसरा, श्वस्=कल का दिन) क्रि० वि० आगे वा पीछे का तीसरा दिन। [ठहरना।

प्रा० परस्थौ-पु० रहना, वास करना,

सं०परस्पर-(पर=दूसरा, पर=दूसरा) क्रि० वि० आपस में, दोनों में, अन्योन्य एक दूसरेको, बाहम।

सं० परा-उपस० उलटा, पीछे, विपरीत, २ प्रभुता, बड़ाई, ३ विरोध, ४ अहंकार, ५ अनादर, तिरस्कार, ६ बहुत, अधिक, ७ ज़ोर, बल, सामर्थ्य, ८ से।

प्रा० परा-पु० पांत, श्रेणी, दल, समूह, मंडली, टोली।

प्रा० पराँठा } पु० एकतरहकी रोटी
पराठा } जो घी या तेल लगा
कर कई पर्त देकर बनाई जाती है।

सं० पराक्रम-(परा=ज़ोरसे, क्रम्=जाना, वा पांव रखना) पु० बल, ज़ोर, सामर्थ्य, साहस ।

सं० पराक्रमी-(पराक्रम) गु० बलवान्, जोरावर, महाबली, बलवंत, साहसी, शूरवीर ।

सं० पराग-(परा=बहुत, गम्=जाना) पु० फूलोंकी सुगंधित धूलि, पुष्परज ।

सं० पराङ्मुख-(पराङ् + मुख) गु० विमुख, रहित, भिन्न, लज्जित, अधोमुख, शरमिन्दा, बाग़ी ।

सं० पराजय (परा=उलटा, जय=जीत अर्थात् जीतका उलटा) भा० स्त्री० हार, पराभव, तिरस्कार, शिकस्त ।

सं० पराजित-र्म्म० पु० पराभूत, शिकस्त, हाराहुआ ।

सं० पराजेता-क०पु० पराजयकर्ता, जीतनेवाला, फ़त्ताह ।

प्रा० परात-स्त्री०थाल, बड़ीथाली ।

सं० पराधीन-(पर=दूसरे के, आधीन=वश) गु० दूसरे के आधीन, परवश ।

प्रा०पराना } (सं० पलायन,
पलाना } परा=उलटा, अय्=जाना) क्रि० अ० भागजाना, पीठ देना, पीठदिखाना, चंपतहोना ।

सं० पराभव (परा=तिरस्कार, भू=होना) स्त्री० हार, पराजय, तिरस्कार । [शिकस्त, हारा हुआ ।

सं० पराभूत-र्म्म० पु० पराजित,

सं० परामर्श-(परा=बहुत, मृश्=सोचना) पु० विचार, मंत्र, उपदेश, मन्त्रणा, सलाह, विवेक, भेद, राज़, । [वज़ीर, सलाही ।

सं० परामर्शक-क० पु० मन्त्री,

सं० परामर्शित-र्म्म० पु० विवेचित, उपदेशित ।

सं० परामृष्ट-र्म्म० पु० उपदेशित, सलाह दिया गया ।

सं० परामर्ष-पु० क्रोध, गुस्सा तीव्र सहन, क्षमा ।

सं० परायण-(पर=लगा हुआ वा बहुत, अय्=जाना) गु० लगा हुआ, तत्पर, मगन, अत्यासक्त, मशगूल ।

प्रा० पराया-(सं० पर) दूसरा, और, ऊपरी, बाहरी, विदेशी, २ दूसरे का ।

सं० पराशर-पु० व्यासजीका बाप ।

सं० पराश्रय-(पर=दूसरे के, आश्रय=आसरेमें)गु० पराधीन,परवश ।

सं० परास्क-र्म्म० पु० पराजित, प्रक्षिप्त, निरस्त, प्रहत, शिकस्त ।

सं० परास्त—(परा,तिरस्कार वा अ-नादर, अस्=होना) कर्म० पु० हारा हुआ, पराजित ।

सं० पराह—(पर+अहः) पु० दूसरा दिन, परदिन ।

सं० पराह्ण—(पर+अह्न) पु० दिन का पिछला भाग, दोपहरके पीछे का दिन सेहपहर ।

सं० परि—(पृ=भरना) उपस० चारों ओर से, २ सब तरह से, सम्पूर्ण रूप से, ३ बहुत, अतिशय, ४ पहले, ५ पास, आसपास, ६ आपस में, ७ बुरा ।

सं० परिकर—(परि=चारों ओर से, कृ=करना) पु० कमर, २ नौकर चाकर, सेवक, अनुचर, ३ परिवार, ४ समूह, ५ साज, ६ तैयारी ।

सं० परिक्रमा—(परि=चारों ओर, क्रम्=पांव रखना) स्त्री० प्रदक्षिणा, चारों तर्फ़ घूमना ।

सं० परिक्षित, परीक्षित (परि=पहले, क्षि=नाश करना, क्योंकि परीक्षित को अपनी माके गर्भमें ही अश्वत्थामा ने मार डाला था पर श्रीकृष्ण ने उसको जिलाया था इसकी कथा श्रीमद्भागवत और महाभारतमें है) पु० अर्जुनका पोता, और अभिमन्यु का बेटा और हस्तिनापुर का राजा ।

सं० परिखा—(परि=चारों ओर से, खन्=खोदना) स्त्री० खाई, खंदक, क़िले के चारों ओर का नाला ।

सं० परिगत—(गम्=जाना) कर्म० पु० विस्मृत, भूला हुआ, वेष्टित, लपेटा हुआ, गया हुआ ।

सं० परिग्रह—भा० पु० स्त्री, औरत, परिवार, मूल, स्वीकार, शपथ, सौगन्द, शाप, सूर्य्यग्रहण ।

सं० परिग्राहक—क० पु० गाहक, स्वीकारक ।

सं० परिघ—(परि=चारोंओरसे, हन्=मारना) पु० लोहे की लाठी, गदा, लोहे का मुद्गर ।

सं० परिघोष—पु० गाली, शब्द, मेघ शब्द ।

सं० परिचय—(परि=चारों ओर से चि=इकट्ठाकरना) पु० जानपहचान, बहुत मित्राई ।

सं० परिचर्य्या—(परि=सब तरहसे, चर्=जाना) पु० सेवा, पूजा, उपासना ।

सं० परिचारक—(परि=चारों ओर, चर्=जाना) पु० दास, सेवक, नौकर, आज्ञापकर्ता, प्रसिद्धकर्ता ।

सं० परिच्छद—पु० पुरस्कर उपयोगीवस्तु, साज, बिछौना, ढपना, सभा, रक्षक, आस्तरण, हाथियों का झूल असबाब ।

सं०परिच्छन्न–र्म्म०पु०आच्छादित, मह्‌सूर, घिराहुआ ।

सं० परिचित–र्म्म०पु० ज्ञात, जाना हुआ, पहचाना हुआ ।

सं०परिच्छेद–(परि,छिद्=काटना) पु०भाग,खंड,विभाग,अध्याय,पर्व ।

सं० परिजन–(परि=पास के, जन मनुष्य) पु० परिवार, कुटुम्ब, घराना, घरके लोग, २ नौकरचाकर, अनुचर ।

सं० परिणत (परि,नम्=झुकना) क० पु० भक्त,नम्र,पकाहुआ,झुकाहुआ।

सं.परिणति-(परि,नम्=झुकना) भा० स्त्री०नमस्कार,नम्रता,झुकाव,प्राप्त ।

सं० परिणय- (परि+नी=लेजाना) पु० विवाह, नम्रता, प्राप्ति ।

सं० परिणाम–(परि,नम्=झुकना, पर परि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ बदलना होताहै) पु० अन्त, समाप्ति, बदलना, भिन्नभाव, अन्तकी अवस्था, फल ।

सं०परिणामदर्शी–(परिणाम=अन्त,दर्शी=देखनेवाला,दृश्=देखना) क०पु० पहलेसे हरएककामकाभला बुरा फल जाननेवाला, अग्रशोची, बुद्धिमान् ।

सं० परिणायक–(परि+नी=ले जाना) क० पु० पांसोंका खेलने वाला, पति, वर ।

सं० परिणाह–पु० चौड़ाई,विस्तार निबन्धन, सम्बन्ध, रिश्ता ।

सं०परितः–अव्य०सर्वतः, चारोंतर्फ़, चारों ओर ।

सं० परिताप–(परि=चारोंओर से तप्=तपना) पु०दुःख, शोक,सोच, पीड़ा, संताप, कष्ट, २ एक नरक का नाम ।

सं०परितुष्टि–(परि+तुष् तुष्टि)भा० स्त्री० सन्तुष्टि, इतमीनान ।

सं० परितृप्त –(परि+तृप्+त,तृप्त= सन्तोष) क० पु० सब प्रकार से तृप्त, आसूदा ।

सं० परितोष–(परि=सब तरह से तुष्=प्रसन्न होना) पु० संतोष,तृप्ति, हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता, खुशी ।

सं० परित्यक्त–र्म्म० पु०छोड़ागया, सम्यक्‌त्यक्त, जल्द छोड़ागया ।

सं० परित्याग –(परि=सब तरहसे त्यज्=छोड़ना) पु०त्याग,छोड़ना, तजना ।

सं० परित्राण–(परि=सब तरह से त्रै=बचाना) पु० बचाव, रक्षा, उद्धार, डरसे अथवा बुराईसे बचाना, रक्षण, हिफ़ाज़त ।

सं० परित्रात–र्म्म० पु० रक्षित, महफ़ूज़ । [महाफ़िज़ ।

सं० परित्राता–क० पु० रक्षक,

सं० परिदान–(परि=सब प्रकार दा=देना) पु० दानादान, देन

लेन, त्याग, प्रक्षेप, धरोहड़ धरना, तिरस्कार, निवारण।

सं० परिदेवक-(परि=सब तरह से देव्=क्रीड़ा) क० पु० विलापकर्ता, रोनेवाला, जुआरी, जीतनेवाला, व्यवहारी, स्तुतिकर्ता, शोभायमान।

सं० परिदेवन (देव=स्तुति, क्रीड़ा) भा० पु० विलाप, रोदन, क्रीड़ा, जिगीषा, द्यूतकर्म, जुआ खेलना, स्तुति।

सं० परिधान-(परि=चारों ओर से, धा=पहनना) पु० पहनने का कपड़ा नाभि से नीचे पहनने का कपड़ा।

सं० परिधि-(परि=चारों ओर से धा=रखना अर्थात् घेरना) स्त्री० गोल लकीर जिससे वृत्त घेरा जाताहै, घेरा, मंडल, २ सूर्यका अथवा चांदका मंडल।

सं० परिधेय-(परि=चारों ओर से धा=पहनना) कर्म० पु० पहनने योग्य कपड़ा।

सं० परिध्वंस-(परि=चारों ओर से ध्वंस्=नाश होना) पु० नाश, बिगाड़, हानि।

सं० परिपक्व-(परि=बहुत पक्व=पका हुआ) कर्म० पु० खूब पका हुआ, २ पक्का, चतुर, बुद्धिमान्।

सं० परिपाक-भा० पु० फल, नतीजा।

सं० परिपन्थक-पु०(परि, पन्थ=क्लेश देना, मारना) क० पु० शत्रु, ठग, चोर, लुटेरा, पापी, कुमार्गी, उन्मादी।

सं० परिपाटी-(परि=सब तरह से, वा चारों ओर से, पट्=जाना) स्त्री० रीति, दस्तूर, अनुक्रम, परम्पराकीरीति।

सं० परिपूर्ण-(परि=सब तरह से, पूर्ण=पूरा) गु० पूरा, भराहुआ, संपूर्ण, समाप्त।

सं० परिभव } **परिभाव** } (परि=अनादर, भू=होना) पु० अनादर, अवज्ञा, तिरस्कार, नफ़रत।

सं० परिभाषा-(परि=चारों ओर से भाष्=कहना) स्त्री० लक्षण, व्याख्या, संज्ञा।

सं० परिभ्रमण-(परि=चारों ओर भ्रम=घूमना) पु० फिरना, घूमना।

सं० परिमाण-(परि=चारों ओर से, मा=नापना) पु० माप, नाप तौल, अंदाज़।

सं० परिमार्जित-(परि+मार्जित, मृज्=शुद्धकरना, साफ़ करना) कर्म० पु० शुद्ध, संशोधित, पाकसाफ़।

सं० परिमित-(परि=चारोंओरसे, मा=नापना) कर्म० पु० नापाहुआ, मापा हुआ, नियमित।

सं० परिमिति-भा० स्त्री० परिमाण, हद, किनारा।

सं० परिरंभ—(परि+रंभ्=उत्सुक होना) पु० आलिंगन, भेटना, श्लेष, मुलाक़ात।

सं० परिवर्जन—(परि+वृज्=त्यागना)भा०पु०मारना, त्यागकरना।

सं० परिवर्त्तन—(परि, वृत्=होना, पर परि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ बदलना होता है) पु० बदल, एराफेरी, पलटना, तबादिला।

प्रा० परिवा—(सं०प्रतिपदा) स्त्री० पखकी पहिलीतिथि, पहलीतारीख़।

सं० परिवाद—(परि=बुरा, वद्=कहना) पु० गाली, निन्दा, अपवाद, दुर्वाद। (बदगो।

सं० परिवादक—क० पु० निन्दक,

सं० परिवार—(परि=चारों ओर से वृ=घेरना वा ढकना) पु०घराना, कुटुम्ब, परिजन।

सं०परिवारण—(परि,वृ=घेरना) भा० पु० मांगना, तक़ाज़ा करना।

सं० परिवाह—(परि,वह्=बहना) पु० उपद्रव, जलका, उछलना, बहाव, चहबच्चा, तरंग, लहर।

सं० परिवृत—(परि=चारों ओर से वृत=रहना)र्म्म० पु० रक्षित आच्छादित, घिराहुआ, परिवेष्टित।

सं०परिवेष्टन—(परि,वेष्ट्=लपेटना) भा० पु० लपेटना, लिफ़ाफ़ा।

सं० परिव्राज परिव्राजक }(परि=सब तरफ़ वा सबकाम छोड़के, व्रज्=फिरना) क०पु० संन्यासी, यती, योगी, गुसांई।

सं.परिशिष्ट-(परि,शास्=सिखाना)क. पु०अवशेष,तितिम्मा,बाक़ी,अवशिष्ट।

सं०परिशोधन-(परि,शुध्=शुद्ध करना) भा० पु० ऋणचुकाना,क़र्ज़ा अदा करना, फ़र्चा करना।

सं०परिश्रम-(परि=चारों ओर से श्रम=मिहनत करना) पु० मिहनत, श्रम, थकावट।

सं० परिश्रान्त-र्म्म० पु० थकगया।

सं० परिश्रमी-क० पु० मेहनती।

सं० परिषद्-(परि+सद्=जाना) अनुचर, सेवक, सभासद।

सं० परिष्कार-(परि+कार, कृ=करना) भा०पु० सफ़ाई,स्वच्छता, शुद्धता [भूषित।

सं० परिष्कृत-र्म्म० पु० अलंकृत,

सं० परिष्वंग-पु० आलिंगन,भेटना, हमागोश होना।

प्रा० परिहरना-(सं०परिहरण परि, हृ=लेना) क्रि० स० छोड़ना, दूर करना।

सं० परिहार-(परि+हार, हृ=हरना, लेना) भा०पु० हरना,लेना, छीनना, अवज्ञा, अपमान, त्याग।

सं० परिहास-(परि=बहुत, हस्=हँसना भा० पु० हँसी, ठट्ठा,कौतुक, खेल, मसखरी, लोकापवाद।

सं० परिहास्य—स्पं० पु० हँसी के लायक, हँसनेयोग्य ।

सं० परिहित—स्पं०पु० आच्छादित, घेराहुआ, आच्छन्न,गुप्त,पोशीदा।

सं० परीक्षक—(परि=चारोंओर से, ईक्ष्=देखना) भा० पु०परीक्षाकरने वाला, परखनेवाला, इम्तिहान लेनेवाला ।

सं० परीक्षा—(परि=चारों ओर से, ईक्ष्=देखना) भा०स्त्री०परख,जांच, इम्तिहान । [को देखो ।

सं० परीक्षित—पु० परिचित शब्द

सं० परीक्षोत्तीर्ण—(परीक्षा+उत्ती-र्ण, तॄ=पारजाना) गु० परीक्षा में पूरा,इम्तिहानपास,फेलनहीं, पास ।

सं० परुष–(पॄ=भरना) गु०कठोर, कड़ा, पु० कुवचन, गाली ।

प्रा० परे–(सं०पर) क्रि०वि०उधर, उस ओर, दूर, परे रहना, बोल० दूर रहना ।

प्रा० परेखा–(सं० परीक्षा) स्त्री० परख,जांच,रपछतावा,पश्चात्ताप ।

सं० परेत–(परा, इण्=जाना)पु० भूत,पिशाच,शैतान,गु०मुर्दा,मृतक।

प्रा० परेता–पु०रहटा, चर्खा,चर्खी ।

प्रा० परेवा–पु० कपोत, कबूतर, प्रतिपदा । [कल, फर्दा।

सं० परेद्युस्–अव्य० दूसरा दिन,

सं० परोक्ष–(पर=परे, अक्ष=आंख) गु० नहीं देखा हुआ,आंखोंकेपरे।

सं० परोपकार–(पर=दूसरे का, उपकार=भला) पु०दूसरेकाभला, पराये का हित ।

सं०परोपकारी–(परोपकार) गु० दूसरे का भला करनेवाला ।

प्रा० परोस–पु० समीपता, ग्वेड़ा, नजदीकी ।

प्रा० परोसना–(सं० परिवेषण, परि=चारोंओर से, विष्=फैलाना) क्रि० स० खाना पत्तलोंमें रखना, खाना चुनना, पत्तल लगाना ।

प्रा० परोहा–(सं० परीवाह, परि= सब ओर से वह्=ले जाना) पु० चरस, मोट, पुर ।

सं० पर्कटि–स्त्री०पाकरि,पकरिया ।

प्रा० पर्चा } (सं०परीक्षा) पु० परख,
पर्चौ } जांच, परीक्षा ।

प्रा० पर्चाना–(सं०परिचयन) क्रि० स० भेंट कराना, मिलाना, बातों में लगाना ।

प्रा० पर्छाई–(सं० प्रतिच्छाया,प्रति =अपने रूप, छाया=छांव) स्त्री० प्रतिबिम्ब, अक्स ।

सं० पर्जन्य–(पृष्=सींचना,गर्ज= गर्जना) क० पु० मेघ, इन्द्र, मेघ-गर्जन,नवीन मेघ, बरसाती+मेघ ।

सं० पर्ण–(पर्ण्=हराहोना, वा पॄ= भरना) पु० पत्ता, पान ।

सं०पर्णकार—क०पु०बरई,तम्बोली।
सं० पर्णशाला—(पर्ण=पत्ता,शाला =घर)स्त्री०पत्तोंकीबनीकुटी,झोपड़ी।
सं० पर्णी—क० पु० वृक्ष, पेड़ ।
सं०पर्व्व—(पर्व्व+जना वा पूराहोना) ग्रन्थि, गाँठ, गिरह ।
सं० पर्य्यङ्क—(परि=पास,अङ्क=गोद अकि=जाना वा चिह्न करना) पु० पलँग। [पथिक।
सं० पर्य्यटक—क० पु० मुसाफ़िर,
सं० पर्य्यटन—(परि=चारोंओर,अ-टन=घूमना) भा० पु० घूमना,भ्र-मण करना, सफर करना, सै-रकरना ।
सं० पर्य्यन्त—(परि=पास, अन्त= सीमा) पु० अन्त, सीमा, हद, अव्य० तक, तलक ।
सं० पर्य्याप्त—(परि=चारोंतरफ़,आ-प्=व्याप्तहोना)गु०समर्थ,तृप्त योग्य।
सं० पर्य्याय—(परि=चारोंओर से, इण्=जाना) पु०एक अर्थका शब्द, एकार्थी शब्द २ अनुक्रम, रीति, ३ प्रकार,४अवसर, ५ उर्फ़,हमनामी ।
सं० पर्य्यायवाचक—क०पु०एकार्थ बोधक, मुतरादिफ़ ।
सं०पर्य्यालोचना—(परि+आलो-चना) भा०पु० विचारकरना,गौर करना, यहतियात करना, चौकसी करना, सब प्रकारसे देखना ।
सं० पर्व—(पॄ=भरना)पु०त्योहार, उत्सव,२अध्याय,परिच्छेद,३गांठ।
सं० पर्वणी } (पॄ=भरना) स्त्री०
पर्विणी } त्योहार, उत्सव, तिवहार ।
सं० पर्वत—(पर्व=भरना)पु०पहाड़, शैल, गिरि, भूधर ।
सं०पर्वतारि-(पर्वत+अरि)पु०इंद्र।
सं० पर्वतीय—(पर्वत गु०पहाड़ी, पहाड़ का ।
सं० पल—(पल्=जाना) स्त्री० घड़ी का साठवां भाग, निमेष,दम,आन, लहमा । [कर, निकारी,दूरकी ।
प्रा० पलगारि —क्रि० वि० निकार,
प्रा० पलभरमें—बोल० तुरन्त, उसी दम, पल मारते । [भरमें ।
प्रा० पलमारते—बोल० तुरत, पल
प्रा० पलक—स्त्री० आंख का पुट,प-पोटा, बरुनी, पपनी, २ पल, क्षण।
प्रा०पलँग—(सं०पल्यङ्क परि+अङ्क) पु० सेज, शय्या, खाट, चारपाई ।
प्रा० पलटन—(अं० बैटालियन) पु० हज़ार सिपाहियोंका यूथ, या थोक, जत्था ।
प्रा० पलटना—क्रि० अ० पीछा आना, फिरजाना, लौटजाना, २ बदलना, बदल लेना, ३ इनकारना, इन्कार करना ।

प्रा० पलटा-(पलटना) पु० बदला, एराफेरी, बट्टा, अदला बदला, २ प्रतिफल, पीछा, उपकार करना, ३ पीछा बैर लेना ।

प्रा० पलटालेना-बोल० पीछा ले लेना, लौटा लेना, २ बदला लेना, बैर लेना, बैर सारना ।

प्रा० पलड़ा-पु० तराजूका एकपल्ला ।

सं० पलाण्डु-पु० प्याज, सलगम ।

प्रा० पलथी-स्त्री० कूला टेक कर जमीन पर बैठना, एक प्रकार का आसन वा बैठने का ढंग ।

प्रा० पलना-(सं० पलन, पल्=बचाना) क्रि० अ० पनपना, प्रतिपालित होना ।

प्रा० पलवल-(सं० पटोल, पट्=जाना) पु० परवल, एक तरकारी का नाम ।

प्रा० पलवार-पु० एकप्रकारकी नाव ।

प्रा० पला-पु० बड़ाचमचा, कलछुल, दर्वी, डोई, तेल आदि निकालने का बरतन ।

सं० पलायन-(परा से, अथवा उलटा, अय्=जाना) पु० भागना, भागाभाग ।

सं० पलायक-क० पु० भगोड़ा ।

सं० पलायित-क० पु० भगोड़ा, प्रस्थित, चम्पत ।

सं० पलाश-(पल्=चलना, अश् फैलाना वा खाना) पु० टेसू का वृत्त, ढाक का वृत्त ।

सं० पलित (पल्=पालना, जाना) भा० पु० वृद्धत्व, बुढ़ापा, सफेदबाल, गु० वृद्ध, शिथिल, पुराना ।

प्रा० पली-स्त्री० चमची, जिससे तेल आदि निकाला जाता है ।

प्रा० पलीत-(सं० प्रेत) पु० भूत, पिशाच, प्रेत ।

प्रा० पलीता (फा० पतीला वा फ़तीला) पु० बत्ती, २ बंदूकका तोड़ा, जामगी ।

प्रा० पलेथन-पु० सूखा आटा जो रोटीपर बेलने के समय लगाया जाता है ।

प्रा० पलेथननिकालना-बोल० बहुत मारना, बहुत पीटना ।

प्रा० पलोटना-क्रि० स० धीरे २ पांव दाबना ।

सं० पल्ल-पु० गोला, गोली ।

सं० पल्लव-(पल्=जाना, और लू=काटना, अथवा पल्ल्=जाना) पु० नया पत्ता, अंकुर, कैल ।

सं० पल्लवग्राही-(ग्रह्=लेना) क० पु० पत्रा बांधनेवाला, पुरोहित ।

सं० पल्लवित-(पल्लव) गु० नये पत्तों वाला, नयेपत्तोंसेयुक्त, २ पुलकित, रोमांचित, हर्षित, प्रसन्न ।

प्रा० पल्ला-पु० अन्तर, दूरी, टप्पा, २ सहायता, ३ कपड़े का छोर, अंचल, ४ छोर, किनारा, ५ कि-

बाड़, ६ तीनमन बोझका ।

सं० पल्ली-स्त्री० छपकिली, २ स्वल्प ग्राम, छोटा गाँव, ३ कुटी, झोपड़ी, ४ कुटनी । [चल, अंचल, छोर ।

प्रा० पल्लू-पु० कपड़े का खूंट, आं-

प्रा० पल्लूदार पु० कपड़ा जिसका पल्ला, सुनहरी वा रुपहरी हो ।

सं० पल्वल-पु० तलैया, पानी का भरा गड़हा, छोटा तलाव ।

सं० पवन-(पू=पवित्रकरना) स्त्री० हवा, वायु, बयार, बतास, बाव, पवन का पूत=हनुमान् ।

सं० पवनकुमार-(पवन=हवा, कु-मार=बेटा) पु० हनुमान् पवन का बेटा । [=बेटा) पु० हनुमान् ।

सं० पवनतनय-(पवन=हवा, तनय

सं० पवनायन-पु० झरोखा, खिड़-की, मोखा ।

सं० पवनरेखा-(पवन=हवा, रेखा=लकीर) स्त्री० उग्रसेनकी स्त्री और कंस की मा ।

सं० पवनाशन-(पवन=हवा+अ-शन=भोजन, अश्=खाना) पु० वायुभक्षक, सर्प, सांप ।

सं० पवनसुत-(पवन=हवा, सुत=बेटा) पु० हनुमान्, पवन का पुत्र ।

प्रा० पवारना-क्रि० स० फेंकना, डालना, भेजना ।

सं० पवि-(पू=शुद्ध करना, अर्थात् दुष्ट जनों को मार पीटकर शुद्ध करना) पु० वज्र, इन्द्रकाशस्त्र, हीरा ।

सं० पवित्र-(पू=शुद्ध करना) गु० शुद्ध, निर्मल, पापरहित, साफ़, विमल, पु० यज्ञोपवीत, जनेऊ, २ कुश, ३ ताँबा, जल ।

सं० पवित्रता-(पवित्र) भा० स्त्री० निर्मलता, शुद्धता, सफ़ाई ।

प्रा० पवित्री-(सं० पवित्र) स्त्री० कुश घासकी अथवा सोना, चांदी, और तांबा इन तीनों धातु की बनी हुई अंगूठी जिसको हिंदूलोग पूजा करते समय पहनते हैं ।

सं० पश-(पश्=जाना बाँधना) पु० स्पर्श, बाँधना, मथना, पीड़ा, गु० छूनेवाला, बाँधनेवाला, शत्रु ।

सं० पशु-(दृश्=देखना, जो सब को बराबर देखता है और भले बुरेका विचार नहीं करता) पु० चौपाया जन्तु, जीव, गाय भैंस घोड़ा आ-दि, २ देवता ।

सं० पशुपति-(पशु=देवता अथवा चौपाया (यहांबैल) पति=स्वामी) पु० महादेव, शिव ।

सं० पशुपाल, पशुपालक-(पशु=चौपाया, पाल=बचाना) क० पु० ग्वाला, अहीर ।

सं० पशुराज-(पशु=चौपाया, राज=राजा) पु० सिंह ।

सं० पश्चात्—क्रि०वि० पीछे,इसके पीछे, २ पश्चिम दिशा की ओर ।

सं० पश्चात्ताप—(पश्चात्=पीछे, ताप=दुःख) पु० पछतावा,पस्तावा, अनुताप ।

सं० पश्चिम—(पश्चात्=पीछे)स्त्री० पश्चिमदिशा,पछांह,गु०पश्चिमका ।

सं० पश्यतोहर—(पश्यतः=देखते २ हर=चुरा लेना) पु० सुनार, २ मृत्यु, ३ चोर । [पत्थर, शिला ।

प्रा० पषान—(सं० पाषाण) पु०

सं० पस—(पस=बांधना,गांठ देना) पु० बाँधना, छूना, गु०बांधनेवाला, छूनेवाला ।

प्रा०पसरना—(सं०प्रसरण,प्र=बहुत, सृ=जानावाफैलना)क्रि०अ०फैलना।

प्रा० पसली—(सं० पार्श्व) स्त्री० पांसुली, पञ्जर, पांजर ।

प्रा० पसाना—(सं० प्रस्रावण,प्रस्रु= चूना या टपकना) क्रि० स० मांड़ निकालना, रांधेहुये चांवलों में से पानी निकालना ।

सं० पसारना—(सं० प्रसारण प्रसृ =जानावाफैलना)क्रि०स०फैलाना, बिछाना । [देखो ।

प्रा० पसारी—पु०पनसारी शब्द को

प्रा० पसीजना—(सं० प्रस्वेदन प्र, स्विद्=पसीना निकलना) क्रि० अ० पिघलना, नर्म होना, पसीना निकलना, २ कोमलचित्त होना ।

प्रा० पसूजना—क्रि०स०तुर्पना ता-गना, डोरा डालना ।

प्रा० पसीना—(सं०प्रस्वेद,प्र,स्विद् =पसीना होना) पु० पसेव,स्वेद ।

प्रा० पसेव—(सं० प्रस्वेद) पु० पसीना, २ प्रसन्नता, खुशी ।

प्रा० पस्ताना—(सं०पश्चात्ताप)क्रि० अ० पछताना, पश्चात्ताप करना ।

प्रा० पह—स्त्री० भोर, तड़का, पोह, भिनसार, सबेरा ।

प्रा० पहफटना } बोल० भोर होना,
पौफटना } तड़का होना, रो-
शनी फैलना, दिन निकलना ।

प्रा० पहचान—(पहचानना) स्त्री० जानना, जान पहचान, ज्ञान, चि-न्हार, लक्षण, चिन्हानी, चिह्न ।

प्रा० पहचानना } (सं०प्रतिज्ञान)
पहिचानना } क्रि०स० जानना
चीन्हना, लक्षण करना ।

प्रा० पहनना } (सं० परिधान)
पहरना } क्रि० स० कपड़ा
पहिरना } ओढ़ना, कपड़ा
पहनना,शरीरपर कपड़ाधारणकरना।

प्रा० पहनावा—(पहनना) पु० प-हिराव, पोशाक ।

प्रा० पहर—(सं०प्रहर,प्र=पहले हृ=

लेना) स्त्री० दिन रातका आठवां भाग, तीन घंटा, आठ घड़ी ।

प्रा० पहरा—(पहर) पु० चौकी, २ गश्त, फेरा, ३ एक नायक अथवा जमादार और छः चौकीदार ।

प्रा० पहराना—(सं० परिधान) क्रि० स० पहराना, उढ़ाना ।

प्रा० पहरादेना—बोल० जागता रहना, चौकस रहना, चौकी देना, रखवाली करना ।

प्रा० पहरेमें डालना—बोल० हवालातमें रखना, पहरुएको सौंपना ।

प्रा० पहरेमेंपड़ना—बोल० हवालात में रहना ।

प्रा० पहरावनी—(सं० परिधान) स्त्री० व्याह में दुलहन के घर से बरातियोंको जो कपड़ा रुपया आदि दिया जाता है ।

प्रा० पहरिया, पहरुआ, पहरू—(सं० प्रहरी, प्रहर=पहर) पु० चौकीदार, चौकीदेनेवाला, रक्षा करनेवाला, रखवाली करनेवाला, पौरिया ।

प्रा० पहल—पु० रुई का गाला, रुई का फाहा, २ प्रारंभ, आरंभ, शुरूअ, आदि, ३ खेतकी भुजा ।

प्रा० पहला, पहिला—(सं० प्रथम) गु० प्रथम, आदि ।

प्रा० पहाड़—पु० पर्वत, शैल, गिरि ।

प्रा० पहाड़सीरातें—बोल० लंबी रातें, बड़ी रातें, दुःख की रातें ।

प्रा० पहाड़ा—पु० जोड़ती, गुना का नक़शा ।

प्रा० पहाड़िया, पहाड़ी—गु० पहाड़ का, पर्वती ।

प्रा० पहाड़ी—स्त्री० छोटा पहाड़, टीला, टेकरी । [चक्का, चक्र ।

प्रा० पहिया—पु० पया, चाका,

प्रा० पहिला—(सं० प्रथम) गु० अगिला, आगेका । [ज्येष्ठ ।

प्रा० पहिलौठा—गु० पहिला, जेठा,

प्रा० पहुँच—(पहुँचना) स्त्री० आना, आगमन, २ शक्ति, सकत, सयानापन, अच्छी समझ, ३ पैठ, पैसार, प्रवेश, दखल, गुज़र, घुस पैठ, ४ रसीद ।

प्रा० पहुँचना—क्रि० अ० आजाना, दाखिल होना, उतरना, आरहना, जाना फैलना, चलना, बढ़जाना, पूगना, पास आना ।

प्रा० पहुँचा—पु० कलाई ।

प्रा० पहुँची—स्त्री० पहुँचेमें पहनने का गहना, कंकण, कँगना ।

प्रा० पहुड़ना—क्रि० अ० लेटना, सोना, आराम करना ।

प्रा० पहुनई—(सं० प्राघुणता) स्त्री० आदर, मान, मनुहार, अतिथि सेवा, मेहमानी ।

प्रा० पहुप } (सं०पुष्प) पु० फूल,
पुहप } सुमन ।

प्रा० पहेली–(सं० प्रहेलि अथवा प्रहेलिका, प्र=बहुत, हेल् वा हेड़ =अनादरकरना) स्त्री० दृष्टकूट, गूढ़ प्रश्न श्लेष, बुझव्वल ।

प्रा० पांक } (सं०पंक) पु० कीचड़,
पांकां } दलदल, कांदा । [तीन ।

प्रा० पांच–(सं०पंच) गु० दो और

प्रा० पांचसात–बोल० घबराहट, व्याकुलता, झंझट, जंजाल ।

प्रा० पांजर–(सं०पञ्जर) पु० पंसली, पार्श्व ।

प्रा० पांडे } (सं०पंडित) पु० ब्राह्मणों
पांड़े } की पदवी, २ पाठक, अध्यापक, पढ़ानेवाला ।

प्रा० पांत } (सं०पंक्ति) स्त्री० कतार,
पांती } श्रेणी, लकीर, अवली,
पांति } सिपाहियों का परा ।

प्रा० पांयती–(सं०पादान्त, पाद=पांव+अन्त) स्त्री० पायतल, बिछौने के पैर की ओर ।

प्रा० पांव–(सं०पाद, और फ़ा०पा) पु० पैर, पद, चरण, गोड़ ।

प्रा० पांवउठाना–व चलाना–बोल० झट झट चलना, जल्दी जल्दी चलना ।

प्रा० पांवउतरना–बोल० पांवका जोड़ टलना, पांव गांठ से उखड़ना ।

प्रा० पांवकांपना या थरथराना–बोल० किसीकामके करनेसे डरना ।

प्रा० पाव किसीका उखाड़ना–बोल० किसी को किसी काम पर जमने नहीं देना ।

प्रा० पांवकिसीकागलेमेंडालना–बोल० किसी मनुष्य को उसी की बातोंसे अथवा तर्कसे दोषी अथवा अपराधी ठहराना ।

प्रा० पांवचलजाना–बोल० डगमगाना, अस्थिर होना ।

प्रा० पांवजमाना–बोल० दृढ़ होके ठहरना, मज़बूती से ठहरना ।

प्रा० पांवज़मीन पर न ठहरना–बोल० बहुत प्रसन्नहोना, बहुतखुश होना, २ बहुत घमण्ड करना ।

प्रा० पांवडालना–बोल० किसी बड़े काम के करने के लिये तैयार होना और उसको शुरूअ करना ।

प्रा० पांवडिगना–बोल० फिसलना, खिसकना, रपटना, किसी काम से हिम्मत हार जाना ।

प्रा० पांवतलेमलना–बोल० किसी को दुख देना, खिजाना, सताना, पीड़ा देना, खराब करना ।

प्रा० पांव तोड़ना–बोल० किसी के मिलने से रुक रहना, २ किसी मनुष्य से मिलने के लिये कईबार जाना, ३ थक जाना ।

प्रा० पावधोधोपीना—बोल० बहुत मानना, किसी का बहुत बिश्वास करना, बहुत खुशामद करना ।

प्रा०पावनिकालना—बोल० अपनी मर्यादा अथवा हद्द से बढ़ जाना २किसीबड़े कामके करनेसे फिरना ३ किसी अपराध के करने में मुखिया होना ।

प्रा० पाव पकड़ना—बोल० ग़रीबी अथवा अधीनी से बिनती करना, २ किसी को जाने से रोकना, ३ अधीन होना, शरण लेना ।

प्रा०पावपड़ना—बोल० घिघियाना, गिड़गिड़ाना, ग़रीबी से बिनती करना, खुशामद करना ।

प्रा० पांवपर पावरखना—बोल० दूसरे मनुष्यका चाल चलन ग्रहण करना अथवा ले लेना, दूसरे की चाल चलना, २ ऐल फैल बैठना आराम से बैठना, एक पैर को दूसरे पैर पर रखकर बैठना, बड़ा तक़ाजा करना ।

प्रा० पांवपांव पांवोंपांवों } बोल० पैदल, पियादेपांव, पैरों ।

प्रा०पांवपीटना—बोल० अधीरतासे पांवपटकना, २वृथा कोशिशकरना ।

प्रा० पांवपूजना—बोल० किसीको बड़ा जानना, २ किसी से बचना अलग रहना, दूर रहना ।

प्रा० पांवफूंकफूंकरखना—बोल० हर एक काम को सावधानी से करना सम्हल कर काम करना ।

प्रा० पांवफैलाकरसोना—बोल० सुखी रहना, चैनसे रहना, बचाव सेरहना, बेखटकेरहना, निडररहना।

प्रा० पावफैलाना—बोल० हठ करना, अड़ना ।

प्रा० पांवभरजाना—बोल० पांव ठिठरना, २ पांव सो जाना ।

प्रा० पांवरगड़ना—बोल० वृथा और मूर्खता से भटकता फिरना, वृथा चक्करखाना, २ मरनेके दुखमें होना ।

प्रा० पांवलगना—बोल० प्रणाम करना, नमस्कार करना ।

प्रा० पांवसेपांवबांधना—बोल० किसी के पास बराबर बैठा रहना अथवा किसी की खूब रखवाली रखना । [पासहोना ।

प्रा० पांवसेपांवभिड़ाना—बोल०

प्रा० पांवसोना—बोल० पांव सुन हो जाना । [आना ।

प्रा० पांवदबेआना—बोल० धीरे से

प्रा० पांवड़ा—(पांव) पु० वह कपड़ा अथवा शतरंजी, ग़लीचाआदि जिस पर बड़ेआदमी पैर रखकर चलतेहैं।

सं० पांशव—(पांशु=बाँधना) पु० पाङ्गा नमक ।

सं० पांशु—पु० मिट्टी, धूलि, रेणु,

रजोधर्म, हैज, शुष्क गोमय, सूखा गोबर, गोबरका ढेर, पांस, कर्पूर ।

सं० पांशुका—स्त्री० रेणु, धूलि, रजस्वला स्त्री, वेश्या ।

सं० पाशुपत्र—पु० बथुआ शाक ।

सं० पांशुल—पु० शिव, धूलियुक्त ।

सं०पांशुला—स्त्री० कुलटास्त्री, वेश्या, "अपांशुलानां धुरि कीर्त्तनीये" तिरघु: (अ=नहीं, पांशुल=कुलटा अर्थात् पतिव्रता)

प्रा० पाई-(सं० पाद चौथा भाग) स्त्री० एक आने का चौथा भाग, एक पैसा, अंगरेजी पाई एक आने का बारहवां हिस्सा होता है ।

सं० पाक—(पच्=पकना वा पकाना) पु० रींधना, पचन, रसोई, पकवान, पकाई हुई दवाई अथवा और कोई वस्तु, २ उल्लू, ३ एक दैत्यका नाम, ४ फलमाप्ति, ५ दशा, ६ सफेदबाल (पा=पीना) बालक, शिशु, छोटा लड़का ।

सं० पाकपुटी—पु० स्थाली, चूल्हा, चूल्ही, पजावा, आवां, भट्टा, पाकशाला ।

प्रा० पाकड़—(सं० पर्कटी, पृच्=मिलाना वा छूना) पु० एकवृक्षका नाम, पाकड़िया, एक प्रकार का गूलर वृक्ष ।

सं० पाकरिपु—(पाक=एकअसुरका नाम, रिपु=वैरी) पु० इन्द्र ।

सं० पाकशाला—(पाक=पकाना, शाला=घर) धि० स्त्री० रसोई घर, पाक स्थान, पकाने की जगह ।

सं० पाकशासन-(पाक, एकराक्षस का नाम, शास्=दंडदेना)पु० इन्द्र ।

सं० पाकुक—क० पु० पकानेवाला, रसोईंवदार । [मददेनेवाला ।

सं० पाक्षिक—गु० सहायक, हिमायती,

प्रा० पाखर(सं० प्रखर) पु० घोड़े हाथी को बचाने के लिये बख्तर, झूल ।

सं० पाखण्ड—पु० दम्भ, डिम्भ, पाखण्ड, छल । [मक्कार ।

सं० पाखण्डी-गु० दम्भी, छली,

प्रा० पाग-स्त्री० पगड़ी ।

प्रा०पागल-पु० पगला, सिड़ी, उन्मत्त, बावला, बौड़ाहा, मुर्ख ।

सं० पाचक } (पच्=पकाना) क०
पाचुक } पु० पचानेवाली वस्तु जैसे चूरणआदि, २ आग, रसोइयां ।

सं० पाचिका-स्त्री० पकानेवाली ।

सं० पाञ्चजन्य-(पञ्चजन=दैत्य से हुआ अर्थात् बना)पु०विष्णुकाशङ्ख ।

सं० पाञ्चाल-पु० नाम देश ।

सं० पाञ्चाली-स्त्री० द्रौपदी ।

प्रा० पाछे } (सं०पश्चात्) क्रि० वि०
पाछें } पीछे, इसके बाद, इसके

अनन्तर, पीठ पीछे, परे ।

प्रा० पाट–पु० कपड़ेकी अथवा नदी की चौड़ाई, २ सन, सनई ।

प्रा० पाट–(सं०पट्ट,पट्=घेरना) पु० रेशम, २ चक्कीकापत्थर, ३ सिंहासन, जैसे राजपाट, राजाका सिंहासन, ४ चौकी, तख़्ता, पटरा, पाटा ।

सं० पांसक–(पांस्+अक, पस्=बाधा करना) क० पु० मिथ्या, कुत्सित, झूठा, अधम, नाशक, दूषक ।

सं० पांसु–पु० धूलि, रज, रेणु, गांव, पाप, कलंक ।

प्रा० पाटना–क्रि०स० छाना, ढकना, २ भरना, भरपूर करना, रेल पेल करना, ३ सींचना ।

प्रा० पाटम्बर–(सं० पट्टाम्बर, पट्ट=रेशम, अम्बर=कपड़ा) पु० रेशमी कपड़ा, रेशमका कपड़ा ।

प्रा० पाटरानी–(पाट+रानी) स्त्री० पटरानी, महारानी ।

सं० पाटल–(पट्=जाना वा चमकना) पु० एक पेड़का नाम, २ गुलाबीरङ्ग, श्वेतरक्त वर्ण, लाल सफेदरंग, गुलाबका फूल, गुलाबी रंग ।

सं० पाटलिपुत्र–पु० पटना नगर ।

सं० पाटव–(पटु=चतुर) भा० पु० चतुराई, प्रवीणता, होशियारी ।

प्रा०पाटा–(सं०पट्ट) पु० पटरा, तख़्ता, २ धोबीके कपड़ा धोनेकातख़्ता ।

प्रा० पाटी–(सं० पट्टिका, पट्=जाना) स्त्री० खाटकी पटिया, २ एकतरह की चटाई, ३ तख़्ती जिसपर लड़के लिखना सीखते हैं, ४ बालोंकी पट्टी ।

सं० पाठ–(पठ्=पढ़ना) भा० पु० पढ़ना, सन्था, सबक़, २ अध्याय ।

सं० पाठक–(पठ्=पढ़ना वा पढ़ाना) क० पु० शिक्षक, अध्यापक, पढ़ाने वाला, मुअल्लिम, मुदर्रिस, पण्डित, २ पढ़नेवाला, विद्यार्थी, शिष्य, ३ ब्राह्मणों की पदवी ।

सं०पाठन–भा०पु०पढ़ना वा पढ़ाना ।

सं० पाठशाला–(पाठ=पढ़ना, शाला=जगह) षि० स्त्री० पढ़ाने की जगह, चटशाला, स्कूल, कालिज, मदर्सा ।

प्रा० पाठा–पु० जवान जानवर, २ मल्ल । [हुआ ।

सं० पाठित–र्म०पु०पढ़ायागया, पढ़ा

सं० पाठी–क० पु० पढ़नेवाला ।

सं० पाठ्य–र्म० पु० पढ़ाने योग्य ।

सं० पाठीन–(पठि=पीठ, नम्=झुकना) पु० एक प्रकार की मछली ।

प्रा० पाड़ना–(सं० पातन, पत्=गिरना) क्रि० स० गिराना, मारना, पूराकरना, २ काजल इकट्ठाकरना ।

प्रा० पाढ़ा–(सं० पृषत, पृष=सींचना) पु० एक जंगली जानवरकानाम ।

सं० पाण–पु० क्रय विक्रय व्यवहार, स्तुति, तअरीफ़ ।

सं० **पाणि**-(पण्=लेन देन करना) पु० हाथ, हस्त, कर, दस्त ।

सं० **पाणिग्रहण**-(पाणि=हाथ, ग्रह=पकड़ना) पु० ब्याह, विवाह, शादी, हाथ पकड़ना ।

सं० **पाणिघ**-(पाणि=हाथ, हन्=मारना) पु० तबला वा ढोलक, मृदङ्ग, बजानेवाला ।

सं० **पाणिनि**-(पणनं, पणः ततः अस्तीति पणी पणिनो गोत्रापत्यं पुमान् पाणिनिः, अर्थात् पणिगोत्र से उत्पन्न हुआ अथवा पणि का शिष्य, पण्=स्तुति करना) पु० अष्टाध्यायी व्याकरण आदि का बनानेवाला मुनि ।

सं० **पाणिनीय**-(पाणिनि) गु० पाणिनि ऋषि का बनाया हुआ (व्याकरण शास्त्र आदि)

सं० **पाण्डर**-(पडि=जाना वा मिलना) गु०पीला और धौला,सीठा, फीका, पु० कुन्दफूल, श्वेतपुष्प ।

सं० **पाण्डव**-(पाण्डु युधिष्ठिर आदि पांचों भाइयों का बाप) पु० पाण्डु के बेटे युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव ।

सं० **पाण्डित्य**-(पण्डित) भा०पु० पण्डिताई, विद्या, विद्वत्त्व ।

सं० **पाण्डु**-(पडि=जाना) पु० दिल्ली का एक पुराना राजा और युधिष्ठिर आदि पांचों पाण्डवों का बाप, २ धौला और पीला रंग, श्वेत रंग, ३ एक फूल और पौधे का नाम, गु०पीला और धौला,सीठा,फीका ।

प्रा० **पात**-(सं० पत्र) पु० पत्ता, २ कान में पहनने का एक तरह का गहना, गिरना, राहु, लत्ता पात आदि में का एक योग ।

सं० **पातक**-(पत्=गिरना) पु० पाप, दोष, अपराध, गुनाह ।

सं० **पातकी**-(पातक) क० पु० पापी, दोषी, अपराधी, गुनहगार ।

सं० **पातञ्जल**-(पतञ्जलि) पु० पतञ्जलि ऋषि का बनाया हुआ योगशास्त्र आदि ।

प्रा० **पातर**-स्त्री० वेश्या, पतुरिया, कंचनी, गणिका, गु० पतला, दुबला । [पु० रक्षक,पालक ।

सं० **पाता**-(पा=रक्षणकरना) क०

सं० **पाताल**-(पत्=गिरना, जहां पापी गिराये जाते हैं, अथवा पात=गिरना, आलय=स्थान) पु० नीचे का लोक, नागलोक, नरक, पाताल ७ हैं (१ अतल, २ वितल, ३ सुतल, ४ तलातल, ५ महातल, ६ नितल, ७ रसातल)

सं० **पाति**-पु० माता, पिता, गुरु, पति, सूर्य्य, चन्द्र, विश्व ।

सं० पातित-र्म्मं० पु० अधः क्षिप्त, नीचे गिरायागया ।

प्रा० पाती-(सं० पत्री) स्त्री० चिट्ठी २ (सं० पत्र) पत्ता ।

सं० पात्र-(पा=बचाना, वा पीना जिससे) पु०बरतन,बासन,आधार, प्याला, कटोरा, २ दानदेने योग्य विद्यावान् ब्राह्मण, गु० उचित, योग्य ।

सं० पात्रता भा० स्त्री० } (पात्र=
पात्रत्व पु० } योग्य)
योग्यता, लियाकत ।

सं०पाथ } (पा=पीना) पु० पानी,
पाथस् } तोय, जल, अनिल ।

प्रा० पाथर-(सं० प्रस्तर, प्र=बहुत, स्तृ=फैलाना) पु० पत्थर, पाषाण, शिला ।

सं० पाथेय-(पथ=रस्ता) पु० रस्ते काखाना, रस्तेकी खुराक,राहखर्च ।

सं० पाथोज-(पाथस्=पानी, जन् =पैदा होना) पु० कमल, कँवल, पद्म । [देना) पु०बादल,मेघ,अभ्र ।

सं० पाथोद-(पाथस्=पानी, दा=

सं० पाथोधर-(पाथस्=पानी, धृ= रखना) पु० बादल, मेघ ।

सं० पाथोधि-(पाथस्=पानी, धा= रखना) पु० समुद्र, सागर, सिंधु ।

सं० पाथोनिधि-(पाथस्=पानी, निधि=खजाना) पु०समुद्र, सागर, सिंधु ।

सं० पाद-(पद्=जाना जिससेचलते हैं) पु० पांव, पैर, चरण, २ चौथा भाग, चतुर्थांश, ३ वृक्षकी जड़ ।

प्रा० पाद-(सं० पर्द, पर्द=नीचेकी तरफ हवा छोड़ना) पु० फुसकी ठुसकी, नीचे की हवा, अपशब्द, वावसरना, गूज़ । [पैरका ।

सं० पादकटक-पु० घूंघरू, कड़ा

सं० पादग्रहण-पु० चरण स्पर्श, पैर छूना ।

सं० पादचारी } (पाद=पैर,चर्=
पदचारिणी } चलना) पु० पैदल, पैरों से चलनेवाला व चलने वाली ।

सं०पादत्राण-(पाद=पैर,त्रा=रक्षा करना)पु०जूता, खड़ाऊं, मोजापैरके ।

सं० पादधारिणी-स्त्री० पैकड़ा,रिकाब घोड़े की ।

सं० पादप-(पाद=पैर वा जड़,पा =पीना जो पैर अर्थात् जड़से पानी खींचते हैं) पु० वृक्ष, पेड़, २ (पाद पांव,पा=बचाना) पादुका, पादपीठ ।

सं० पादप्रक्षालन-(पादपैर,प्रक्षालन=धोना) पु० पांव धोना ।

सं० पादप्रहार-(पाद=पैर, प्रहार =चोट) पु० लात ।

सं० पादार्घ्य-पूज्यजनों को पैरधोने को जल देना ।

सं० पादसंवाहन-भा० पु० पैर दबाना, पैचप्पी करना ।

सं० पादुका-(पाद=पैर) स्त्री० खड़ाऊं, पावड़ी, २ जूता ।

सं० पादोदक—(पाद=पैर, उदक=पानी) पु० देवता अथवा ब्राह्मण के पांव धोने का पानी, पाद्य ।

सं० पाद्य—(पाद=पांव) पु० पांवधोने का पानी । [शिक्षक, गुरू ।

प्रा० पाधा—(सं० उपाध्याय) पु०

प्रा० पान—(सं० पर्ण) पु० पत्ता, २ ताम्बूल ।

सं० पान—(पा=पीना) पु० पीना ।

सं० पानपात्र—(पान=पीना, पात्र=बरतन) पु० पियाला, गिलास, २ पानडब्बा ।

प्रा० पाना } पावना } (सं० प्रापण, प्र=बहुत आप्=पाना) क्रि० स० मिलना, लेना, इकट्ठा करना, हासिल करना, बाक़ी होना, भोग करना, बिलसना, भुगतना, सहना, पकड़ना, धरना, पहुंचना, पास आना ।

सं० पानाहार—(पान+आहार) पीना, खाना, खुर्दनोश, अन्न जल ।

प्रा० पानी—(सं० पानीय, पा=पीना) पु० जल, नीर, २ बीज, वीर्य्य, धात, ३ चमक, भड़क, ४ यश, कीर्त्ति, मान, मर्य्यादा, नाम ।

प्रा० पानीकरना—बोल० लजाना, चपाना, लज्जित करना, २ सहज करना, सुगम करना, आसानकरना ।

प्रा० पानीकाबुलबुला-बोल० अस्थिर, चंचल, यह बोलचाल अस्थिरता जतलाने के लिये बोला जाता है ।

प्रा० पानी देना-बोल० पितरों को जल देना, तर्पण करना ।

प्रा० पानीनमांगना-बोल० तलवार आदि के एकही बारसे तुरत मरजाना ।

प्रा० पानीपड़ना-बोल० मेहबरसना, पानी बरसना, २ शर्मिन्दा होना ।

प्रा० पानीपीपी कोसना- बोल० बहुत सरापना, बददुआ देना ।

प्रा० पानीभरना-बोल० नीचाहोना, तुच्छ होना, निचाई को मानलेना, शरमाजाना, वशहोना ।

प्रा० पानीमरना-बोल० सूखजाना, २ लजाना, लाजलगना, किसी बातका इसारा करना ।

प्रा० पानीमेंआगलगाना-बोल० जो झगड़ा मिट गया हो उस को फिर उठाना ।

प्रा० पानीसेपतलाकरना-बोल० लज्जित करना, लजाना, चपाना, तुच्छ करना, हक़ीर करना ।

सं० पान्थ (पथिन्= रस्ता, पथ्=जाना) क० पु० पथिक, बटोही, मार्गी, मुसाफिर, राह चलनेवाला राही ।

सं० पाप-(पा=बचाना अर्थात् जिससे अपनेको बचाना) पु० अपराध, दोष, पातक, बदी, बुराई, गुनाह ।

सं० पापजनक-(जन्=पैदाकरना) क० पु० पापोत्पादक, पापी, गुनहगार ।

प्रा० पापड़-(सं० पर्पट, पर्प=जाना) पु० उर्द वा मूंग की पतली रोटी सी चीज ।

प्रा० पापड़ बेलना-बोल० बहुत मिहनत करना अथवा दुखसहना ।

सं० पापभाक्-(पाप+भाक्, भज्=सेवा) क० पु० पाप करनेवाला, अपराधी, गुनहगार ।

सं० पापरूप-पाप=अपराध, रूप=सूरत) पु० पापकी मूरत, बड़ापापी, दुष्ट, आसी, गुनहगार ।

सं० पापात्मा-(पाप+आत्मा) गु० जिसकी आत्मा पापयुक्तहो, जिसका मन पाप में लगा रहे, पापी, दुष्ट, कुकर्मी ।

प्रा० पापिन ⎫ (पाप) गु० स्त्री०
सं० पापिनी ⎭ दुष्टास्त्री, बुरी स्त्री, वह स्त्री जिसका मन पाप में लगा रहे, अपराधिनी ।

सं० पापिष्ठ-(पाप) क० पु० पापी, पापात्मा ।

सं० पापी-(पाप) गु० अपराधी, दुष्ट, पापात्मा, कुकर्मी, पापिष्ठ ।

सं० पामर-(पा=तीनों वेद का धर्म (पा, में धातु है पा=बचाना) और मृ=नष्ट होना जिससे वैदिक धर्म नष्ट होताहै वा पामन् खुजली अर्थात् दुख, रा=देना) गु० नीच, अधम, दुष्ट, मूढ ।

सं० पामा-(पा=बचना जिससे) स्त्री० खुजली, खाज, दाद ।

सं० पामारि-(पामा=खुजली, अरि=वैरी) पु० गन्धक जिसके लगाने से खुजली मिटजाती है, २ पमार के बीज ।

प्रा० पायंती-(सं० पादान्त, पाद+अन्त) स्त्री० खाट के पैर की ओर, पायतल, पैता, पैताना ।

प्रा० पायल-(सं० पाद=पांव) स्त्री० पैरों में पहनने का गहना, पैरी, पायजेब, २ बांस की सीढ़ी ।

सं० पायस-(सं० पयस्=दूध) पु० खीर, जाबर ।

प्रा० पाया-(सं० पाद, अथवा फा० पाया) पु० खाट, मेज अथवा कुरसी आदिका पावा ।

प्रा० पायिक ⎫ (सं० पादिक, वा
पायक ⎬ पदातिक फा० पैक)
पाहक ⎭ पु० दूत, पियादा, नट, ध्वजा, पैदल ।

सं० पायी-(पा=पीना) क० पु० पीनेवाला ।

सं० पार-(पृ वा पार्=पूरा होना) पु० नदी अथवा समुद्र का परला

तीर, दूसरी ओर, २ समाप्ति, पूर्णता, ३ अन्त, शेष, नित्य सं० वा क्रि० वि० आर पार, वार पार, उस ओर, उससे परे, उस तीर ।

सं० पारक—(पार् + अक) कृ० पु० कर्म समाप्तिकर्ता, उतरनेवाला, पार जानेवाला ।

प्रा० पारकरना—बोल० पार उतारना, नांघना, २ पूरा करना, कोई काम पार उतारना, निबाहना, ३ छेदना, बेधना, फोड़ना ।

सं० पारग-(पार=अन्त, गम्=जाना) कृ० पु० समर्थ, पारगन्ता ।

प्रा० पारखी—(सं० परीक्षक) कृ० पु० परखनेवाला, परखैया, जौहरी ।

सं० पारण—(पार=काम पूराहोना) पु० व्रतके दूसरे दिन भोजन करना, २ (पॄ=भरना) मेघ, बादल ।

सं० पारद—(पॄ=भरना, वा पूरा करना) पु० पारा, २ (पारपार करना, दा=देना) गु० पार करने वाला, मोक्षकरनेवाला, उद्धार करनेवाला ।

सं० पारदारिक—कृ० पु० पराई स्त्री गमन करनेवाला, परस्त्रीगामी ।

प्रा० पारना—(सं० पारण) पु० व्रत के दूसरेदिन भोजनकरना, क्रि० स० निबेड़ना, पूरा करना ।

सं० पारभृत—(पार=अन्त, भृ=भरना) पु० दान, समर्पण ।

सं० पारमार्थिक-कृ० पु० श्रेष्ठ, योग्य, परोपकारी ।

सं० पारशव-पु० ब्राह्मणसे शूद्रकी कन्या में पैदा हुआ, परस्त्री पुत्र, परशुधारी ।

प्रा० पारस-(सं० स्पर्शमणि, स्पर्श=छूना, मणि=रतन) पु० ऐसा पत्थर जिसको कहते हैं कि लोहे के छूने से लोहेका सोना होजाता है ।

प्रा० पारस-(सं० पारस, अथवा पारसीक) पु० फारस देश, ईरान ।

प्रा० पारसनाथ-(सं० पार्श्वनाथ) पु० जैनियोंका तेइसवां जिन ।

प्रा० पारसी-(सं० पारसी, अथवा पारसीक) पु० पारस देशका रहने वाला, ईरानी, २ जरदुश्तका मतमानेवाला, ३ स्त्री० फारसी बोली, ४ तुरकी या अरबी घोड़ा, तुरुक, म्लेच्छ ।

प्रा० पारा-(सं० पार, वा पारद) पु० एक प्रकार की धातु ।

सं० पारायण-(पार=पूर्णता, अय्=जाना) पु० पूर्णता, समाप्ति, पुराण का पाठ, सातदिन श्रीमद्भागवत का पाठ सुनाना ।

सं० पारलौकिक—पु० परलोकका काम, उकबा के काम ।

सं० पारावत—पु० कपोत, कबूतर ।

सं० पारावार—(पार=उस पार अ-

वार=इस पार) पु० समुद्र, २ नदी के दोनों तीर, ३ वारापार, वार पार इस उस पार, ४ हद, सींव ।

सं० पाराशर—(पराशर) पु० पराशर ऋषिका बेटा वेदव्यास, २पराशर के बनाये हुये ग्रंथ, जैसे पराशर स्मृति, भिक्षुसूत्र आदि । [वेदव्यास ।

सं० पाराशर्य्य—पु० पराशरका पुत्र

सं० पारिजात—(पारी=समुद्र, जन् =पैदा होना) पु० देवताओंका वृक्ष, तूबा, देवतरु, सुरद्रुम, २ मूंगा ।

सं० परिणाह्य—(परि=बहुत, नह्= सम्बन्ध करना) भा० पु० संबन्ध, बन्धन, रिश्तेदारी, बिरादराना, निबंधनता, चौड़ाई ।

सं० पारितथ्य—स्त्री० बेंदी, टिकुली, पु० तिलक, यथार्थ ।

सं० पारिपन्थिक—गु० चोर, ठग, बधिक, लुटेरू ।

सं० पारितोषिक—(परि=बहुत, तुष =प्रसन्न होना, संतुष्ट होना) पु० इनाम, दान, भेंट, प्रतिफल, दायज, देना, दक्षिणा ।

सं० पारिन्द्र—पु० सिंह अजगर, सर्प ।

सं० पारिपात्र } पु० एक पहाड़का
पारियात्र } नामजो बिन्ध्याचल की श्रेणी का पश्चिमी भाग है और मालवाकी सींवपर है यौतुक, दहेज ।

सं० पारी—(पृ=भरना) स्त्री० पानी की ठिलिया ।

प्रा० पारी-स्त्री० बारी, अवसर, उसरी ।

सं० पार्थ—(पृथा=कुन्ती) पु० कुंती के बेटे युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम ।

सं० पार्थिव—(पृथ्वी) गु० पृथ्वीका, पु० राजा, २ शिव, –पार्थिवी, स्त्री० सीता, जानकी ।

सं० पारिपार्श्विक—पु० नट, नटी, विदूषक, भांड़ ।

सं० पारिभाव्य—पु० कूठ औषध, जमानत, जामिनी, अविश्वास, अनादरता ।

सं० पारिषद—गु० सेवक, सभासद ।

सं० पार्वण—(पर्व्व+अन, पर्व्व=पूर्णकरना) भा० पु० पर्व्व अमावस आदि में जो हो, उत्सव ।

सं० पार्वती—(पर्वत=पहाड़) स्त्री० हिमालयकी बेटी, शिवरानी, दुर्गा ।

सं० पार्श्व—(स्पृश्=छूना, वा पर्शु=पंसली) पु० पांजर, पाखा, २ बगल के नीचे का भाग, ३ पसलियों का समूह, गु० पास, नगीच, नजदीक, समीप ।

सं० पार्श्ववर्त्ती—(पार्श्व=पास, वर्ती होने या रहनेवाला, वृत्=होना या रहना) पु० पास रहनेवाला, निकटस्थ, समीपवर्ती, पासका, करीबी ।

प्रा० पाल—पु० नाव का बादबान, २ छोटा तम्बू, ३ घास और पत्ते

आदि का तह जिसमें रखकर कचे आमपकाते हैं, ४ पालना ।

सं०पालक-(पाल्=पालना) क०पु० पालनेवाला, बचानेवाला, रक्षक, मुहाफ़िज़ ।

प्रा० पालक-(सं० पालङ्क पाल=बचाना, और अङ्क=जाना) पु० सोआ, एक तरह का साग, २(सं० पल्यङ्क) पलंग । [दयालुता ।

सं० पालकता-भ ० पु० परवरिश,

प्रा०पालकी-(सं०पर्य्यंक,वा पल्यंक) स्त्री० एक प्रकार की सवारी, चौपाला, डोली ।

सं० पालन-(पाल्=पालना) भा० पु० पालना, पोषण,रक्षा, बचाव, बचाना ।

प्रा०पालना-(सं०पालन) क्रि० स० पोसना, बचाना, रक्षा करना,२पु० हिंडोला, झूलना ।

सं०पालनीय (पाल्+अनीय)र्म्म० पु० पालनेयोग्य, रक्षायोग्य ।

प्रा० पाला-(सं० प्रालेय, प्र=बहुत आ=चारों ओरसे, ली=पिघलना) पु० हिम, बर्फ़,ठार,तुषार, २ (सं० पालन) भरोसा, विश्वास,अमानत बचाना, ३ कबड्डी के खेलमें रेतकी मेड़ जो बीच में बनाई जाती है, ४ झड़बेरी के पत्ते ।

प्रा० पालागन-(सं० पादलग्नः पाद=पैर, लग्न=लगना) पु० पांव का छूना, प्रणाम करना ।

सं०पालि-(पाल्=बचाना) स्त्री० मागधी प्राकृतभाषा, मगधदेश की मातृभाषा ।

सं० पालित-(पाल्=पालना) र्म्म० पु०रक्षित, बचायाहुआ,पालाहुआ।

सं०पाली-स्त्री० पंक्ति, कोण, प्रशंसा, कल्पित भोजन,प्रान्त, कर्णपत्र, कर्णफूल, सेतु, चिह्न अस्त्रोंकी धार, अश्रु, क्रोड़, गोद, उत्संग, कनियाँ ।

प्रा० पाले-(सं० पालन=बचाव) अधीन, बचाव में, हाथ में, वश में।

प्रा०पालेपड़ना-बोल० दूसरेके वश में आ जाना, जैसे "आजकरउँ खल कालहवाले. परेउकठिनरावणके पाले" (रामायण) ।

प्रा० पाव-(सं० पाद) पु०चौथाई, चौथा भाग, चौथ, चतुर्थांश ।

सं० पावक-(पु=पवित्र करना)पु० आग, अग्नि, गु० पवित्र ।

सं० पावन-(पू=पवित्र करना) गु० पवित्र, पवित्र करनेवाला, स्वच्छ, पु० पानी, २ आग, ३ गोबर, ४ कुशा,५घृत, ६स्त्री०७ गंगा ८ गौर ।

प्रा० पावला-(पाव) पु० चार आना, मुद्रा अर्थात् सिक्के का चौथा भाग ।

प्रा०पावस-(सं०प्रावृष् प्रा=बहुत

वृष्=बरसना) पु० वर्षाकाल, वर्षा ऋतु, बरसात ।

सं०पाश-(पाश्=बांधनाजिससे)स्त्री० फन्दा, फांसी, जानवरों की बांधने की डोरी । [जल्लाद, फांसी ।

सं० पाशक-क० पु० पांसा, अक्ष,

प्रा० पाशा, पासा-(सं०पासक, पश्=छूना वा जाना)पु० चौपड़ खेलनेकी एक छःपहलू चीज, अक्ष ।

सं०पाशित-स्त्री०पु०बन्द,बधाहुआ।

सं० पाशी-क०पु० पाशधर, जल्लाद, वरुण, व्याध, यमराज ।

प्रा०पाषंड-(सं० पाषण्ड्य पाषण्ड) पु० कपट, छल, छिद्र, फ़रेब ।

सं०पाषण्ड-, पाखण्ड, पाषण्डी-(पा, वेदका धर्म्म, प=बचाना) और षण्ड=निष्फल करना, वा खण्ड=खण्डन करना,अर्थात् वेदके धर्म्मको[1] निष्फल करनेवाला,वा खण्डन करनेवाला) पु०नास्तिक, धर्म्मको नहीं माननेवाला, कपटी, छली, ठग, दंभी ।

सं०पाषाण-(पिष्=चूरकरना) पु० पत्थर ।

सं० पाषाणदारण-(दृ=फाड़ना) गु०पु० पत्थरटाकनेकी टांकी, वज्र।

प्रा०पास-(सं० पाश) स्त्री० फांसी, फन्दा ।

प्रा० पास-(सं० पार्श्व) नित्य सं० नगीच, समीप, निकट ।

प्रा० पासी-(सं० पाश) स्त्री० फंदा, फांसी, २ रस्सी जिस से घोड़े के पैर बांधे जाते हैं, ३ (सं० पाशी) पु० बहेलिया, चिड़ीमार ।

प्रा०पासी-(सं० पासी, पाश) पु० एक जाति के मनुष्य जिनका धंधा ताड़ी बेचने का है और जब वे ताड़ पर चढ़ते हैं तब अपने पैरोंके चौफेर रस्सी बांधते हैं ।

प्रा०पाहन, पाहान-(सं० पाषाण) पु० पत्थर, पाथर ।

सं०पाहि-(पा=बचना) क्रि० स० बचाओ, रक्षा करो । [समीप ।

प्रा० पाहीं-नित्य सं० पास, निकट

प्रा०पाहुन, पाहुना-(सं० प्राघुण, प्र=बहुत, आ चारों ओर, घुण्=फिरना) पु० महमान, अतिथि ।

प्रा०पिउ, पिऊ-(सं०प्रिय) गु० प्यारापु० पति, स्वामी, प्रियतम, भर्त्ता ।

सं०पिक-(पि ऐसाशब्द, कै=बोलना वा अपि बारबार, कै=शब्द करना, यहां अपि के अ कालोप होगयाहै) स्त्री० कोयल, कोकिल ।

प्रा०पिकबयनी, पिकबैनी-(सं० पिक=कोयल, वाणी=बोली) स्त्री०गु०जिस स्त्री की कोयल

---

(१) पालनाच्च त्रयीधर्मः पाशब्देन निगद्यते । तं खण्डयन्ति ते तस्मात्पाखण्डास्तेनहेतना ॥

सी बोलीहो, मीठी बोलनेवाली स्त्री।

प्रा० पिघलना—(सं० प्रगलन, प्र=बहुत, गल्=टपकना) क्रि० अ० गलना, टिघलना, पानी होना ।

सं० पिङ्ग—(पिजि=रंगना)गु० पीला कपिल, पीतवर्ण ।

सं० पिङ्गल—(पिङ्ग=पीला रंग, ला=लेना) गु० पीला, पीतवर्ण, २ दीया की लौ, सारंग, पु० छन्द शास्त्र का कर्त्ता, छन्दग्रन्थ, कपिल वर्ण, चिमगादर, सूर्य्य ।

प्रा० पिंगूरा—पु० हिंडोला, झूला ।

प्रा० पिचकारी—स्त्री० पिचिक्का, दमकला । [स्थूल, बड़े पेटवाला।

सं० पिचण्डिल-फ़० पु० तोंदवाला,

सं० पिचु—पु० रुई, कपास, कर्ष, नाम असुर, शस्यभेद, कुष्ठभेद ।

सं० पिचुमन्द—(पिचु=कुष्ठ मन्द=जड़ करना) नींब वृक्ष ।

सं० पिच्छ—पु० पूंछ, मोरपंख, मुकुट, मोर, हिंसा, कपास वृक्ष, केला, सेमर, भात का मांड़, घोड़े के पैर का रोग । [खिसलना ।

प्रा० पिछलना-क्रि० अ० फिसलना,

प्रा० पिछलपाई-स्त्री० चुड़ैल, भूतनी।

प्रा० पिछला—(पीछा) गु० पीछेका, पिछाड़ी का, नया ।

प्रा० पिछवाड़ा-पु०, पिछवाड़ी-स्त्री० } (पीछ) पीछ का भाग, पीछा । [पिछला भाग ।

प्रा० पिछेत—(पीछा) पु० घर का

प्रा० पिछौरा-पु०, पिछोरी-स्त्री० } दोहर, चद्दर, दुपट्टा, ओढ़नी ।

सं० पिञ्जन—पु० मारण, रुईका ओटना, रुईधुनना, धनुही ।

सं० पिञ्जर—(पिजि=शब्दकरना, वा रहना जिस में पखेरू शब्द करते हैं वा रहते हैं, वा पिजि रंगना) पु० पिंजरा, पखेरुओं का घर, २ पीला रंग, लाल और पीला मिलाहुआ रंग, भूरा रंग ।

प्रा० पिञ्जरा—(सं० पिंजर) पु० पखेरुओं के रहने का काठका घर, पिंजरा होना, बोल० दुबला होना ।

सं० पिञ्जल—गु० अतिसघन, मिला हुआ पु० बिजायठ, कंकण, जौशन, विष्टर अर्थात् कुशा ।

प्रा० पिञ्जियारा—(पींजना) पु० धुनियां, रुई पींजनेवाला, रुई धुननेवाला । [मशअल् ।

सं० पिञ्जूल—पु० वर्तिका, बत्ती,

सं० पिञ्जूष—पु० मोम, संदूक, पिटारा, पिटारी, लीझी, खड़ी ।

सं० पिट—पु० संदूक, टोकरी, पिटारा,

शोर, हल्ला, फोड़ा ।

प्रा० पिटना (सं० पिट्=मारना) क्रि० अ० मारखाना ।

प्रा० पिटारा (सं० पेटा, वा पेटिका पिट्=इकट्ठा करना) पु० टोकरा, मंजूषा, कपड़े रखनेका झोला ।

प्रा० पिटारी (सं० पिटक, पिट्=इकट्ठा करना) स्त्री० कपड़े रखने की चमड़े की मंजूषा, छोटापिटारा

अं० पिटीशन अर्ज़ी ।

सं० पिण्ड (पिण्ड्=इकट्ठा करना) पु० पितरों के लिये अन्न आदिक का पिण्डा, २ देह, शरीर, ३ गोल वस्तु, गोला ।

प्रा० पिण्डछुड़ाना—बोल० बचना, भागना, पीछा छुड़ाना, टलना ।

प्रा० पिण्डली (सं० पिण्ड) स्त्री० पिण्डरी, फिल्ली, टँगड़ी ।

प्रा० पिण्डा (सं० पिण्ड) पु० शरीर, देह, २ मिट्टी आदि का ढेला, ३ डोरी का गोला अथवा गेंदा, ४ पितरों के लिये अन्न आदि का पिण्डा ।

प्रा० पिण्डारा (सं० पिण्ड अन्न का पिण्डा, और फा० आर, लाने वाला) पु० लुटेरोंकी एक जात, लुटेरा, ठग, डकैत ।

सं० पिण्डित—र्म्भ० पु० राशिकृत, इकट्ठा कियाहुआ ।

सं० पिण्डूक—पु० पिंडकी पक्षी ।

प्रा० पितर—(सं० पितृ) पु० पुरुषा, पुर्खा, पूर्वपुरुष ।

प्रा० पितलाना—(पीतल) क्रि० अ० तांबे पीतल के बरतन में रखने से खट्टी चीज का बिगड़ना ।

सं० पिता—(पा=बचाना) पु० बाप ।

सं० पितामह—(पिता) पु० दादा, आजा, २ ब्रह्मा, पितामही=दादी ।

सं० पितृकर्म्म / **पितृकार्य्य** } (पितृ=पितर, कर्म्म वा कार्य्य=काम) पु० श्राद्ध पिण्डदान आदि ।

सं० पितृकानन—पु० श्मशानस्थान, गयाक्षेत्र, पितृलोक ।

सं० पितृगण—पु० पितृ समूह, प्रजापतिपुत्राः, मरीचि, अत्रि, भृगु, अंगिरा, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ, अग्नीध, अग्निष्वात्ता । [तृलोक ।

सं० पितृगृह—धि० पितृ-स्थान, पि-

सं० पितृतिथि—स्त्री० अमावास्या, श्राद्धदिन ।

सं० पितृदान—पु० पिण्डदान ।

सं० पितृपक्ष-(पितृ-पुर्खा, पक्ष=पख) पु० श्राद्धपक्ष, आश्विन का अँधेरा पख ।

सं० पितृप्रसू-स्त्री० पिताकी माता ।

सं० पितृव्य-पु० चचा । [की बहिन ।

सं० पितृष्वसा—स्त्री० फूफी, पिता

सं० पित्त—(अपि, दो=काटना, यहां अपि के अ का लोप और द को त हुआ है) पु० शरीरकी एक प्रकार की धातु ।

प्रा० पित्ता—(स० पित्त) पु० पित्त, पित्त की थैली, पित्ताधार, २ क्रोध ।

प्रा० पित्तानिकालना—बोल० दंड देना, ताड़ना करना, सज़ा ना ।

प्रा० पित्तामारना—बोल० क्रोध घटना, क्रोध ठंढा पड़ना ।

प्रा० पित्तपापड़ा—(सं० पर्पट, पर्प्=जाना) पु० एक औषध का नाम ।

प्रा० पिद्दड़ी—स्त्री० एक छोटा पखेरू, फुद्की । [ढकना ।

सं० पिधायक—क० पु० पिहना,

सं० पिधान-भा० पु० पिहना, ढकना,

प्रा० पिनकी—स्त्री० पीनक, ऊंघाहट, अफ़ीम का नशा ।

सं० पिनाक—(पा=बचाना सृष्टिका) पु० शिवकाधनुष, २ शिवका त्रिशूल ।

प्रा० पिन्नी—स्त्री० चांवलका लड्डू ।

सं० पिनाकिन्—क० पु० शिव ।

सं० पिपासातुर-(पिपासा + आतुर) गु० बहुत प्यासा ।

सं० पिपासा—(सं० पा=पीना) स्त्री० पीनेकी इच्छा, प्यास, तृषा ।

सं० पिपीलिका—(अपि, पील्=रोकना) स्त्री० लाल चिउँटी ।

सं० पिप्पल—(पा=बचाना) पु० पीपल, पीपर, एकवृक्षका नाम ।

प्रा० पिय, पिया, पी—(सं० प्रिय) पु० स्वामी, प्रियतम, भर्ता, गु० प्यारा ।

प्रा० पियार—(सं० प्रेम, वा प्रीत) पु० प्यार, प्रेम, प्रीत, नेह, छोह, दुलार, मुहब्बत । [प्रेमी, सनेही ।

प्रा० पियारा—(सं० प्रिय) गु० पु०

प्रा० पियारी—(सं० प्रिया) गु० स्त्री० प्यारी, प्रिया, २ मनोहरा ।

प्रा० पियास—(सं० पिपासा) स्त्री० तृषा, तृष्णा, पीनेकी इच्छा, प्यास ।

प्रा० पियासा—(सं० पिपासित, पा=पीना) गु० प्यासा, तृषावन्त ।

प्रा० पिराना—(सं० पीड़न, पिड्=दुख देना) क्रि० अ० दुखना, दर्द करना, पीड़ा होना ।

प्रा० पिरीते-(सं० प्रियतम) गु० प्यारा ।

प्रा० पिरोजा—(सं० पेरोज, और फ़ारसीमें पीरोज़ा अथवा फ़ीरोज़ा) पु० जंगाली रंगकी मणि ।

प्रा० पिरोना—क्रि० स० गूंथना, सूई में तागा डालना, लड़ियाना ।

प्रा० पिलई—(सं० प्लीहा, प्लिह्=जाना) स्त्री० तापतिल्ली, पिलही ।

प्रा० पिलना—(सं० पेलन, पिल्=प्रेरणाकरना, या फेंकना वा पेल्=जाना) क्रि० स० धावा मारना, ठेलना, धकेलना, जोरकरना, क्रि० अ० कुचल जाना, पिसजाना, दूर

होना, लड़ने को आगे बढ़ना ।

प्रा० पिलपिला—गु० नर्म, पिच पिचा, कोमल, ढीला ।

प्रा० पिलुवा, पिल्लू—(सं० पीलु, पील्=रोकना) पु०कीड़ा ।

प्रा० पिला—(सं० पिल्ल, चुंधला) पु० कुत्ते का बच्चा ।

सं० पिशाच-(पिशित=मांस,अश्=खाना, वा पिशित मांस, आ चारों ओर से, चम्=खाना) पु० प्रेत, भूत शैतान । [पु० मांस ।

सं०पिशित—(पिशि=टुकड़े करना)

सं० पिशुन-(पिश्=टुकड़ेकरना)गु० चुग़ल, निन्दक, दुष्ट, नीच, भेदिया, जासूस ।

प्रा० पिसान—(सं० पिष्ट, पिष्=पीसना) पु० आटा, पिष्टक र्म्म० पु० पीठी, चौरेठा, पिन्नी ।

सं० पिहित—(अपि+धा=धारण करना) र्म्म० पु० गुप्त, आच्छादित, छिपा हुआ ।

प्रा० पीछा—(सं० पश्चात्)पु० पिछला भाग, पिछवाड़ा, २ रगेदना, खदेड़ना ।

प्रा० पीछाकरना—बोल० खदेरना, रगेदना, पीछे पीछे जाना ।

प्रा० पीछा फेरना—बोल० लौटादेना, पीछा दे देना, फेर लेना ।

प्रा० पीछे—(सं० पश्चात्) क्रि० वि० नित्य सं० पीठ पीछे, परे, इसके बाद, अन्त में, निदान ।

प्रा० पीछेडालना—बोल० पीछे छोड़ना, आगे निकल जाना, आगे बढ़ जाना ।

प्रा० पीछेपड़ना—बोल० पीछे दौड़ना, दबाना, बार बार मांगना, सताना, छेड़ना, खिझाना, दुखदेना, २ पीछे रहजाना ।

प्रा० पीछेलगना—बोल० पीछे जाना, साथ होना, साथ लगना, लगा रहना । [रूई साफ़ करना ।

प्रा० पींजना—क्रि० स० रूईधुनना,

प्रा० पीटना—(सं० पिट्=पीटना, व पीड्=दुख देना) क्रि० स० मारना, कूटना, ठोंकना, खट खटाना, चूर चूरकरना,—छाती पीटना—विलाप करना, रोना, पछतावा करना, दुख करना । [का अंग ।

प्रा० पीठ—(सं० पृष्ठ) स्त्री० पिछाड़ी

प्रा० पीठकेपीछेडाललेना-बोल० बचाना, पच्छकरना, रक्षा करना ।

प्रा० पीठके पीछेपड़ना—बोल० शरण लेना, पनाह लेना ।

प्रा० पीठठोंकना—बोल० ढाढ़स देना, साहस देना, हिम्मत बँधाना ।

प्रा० पीठदेना—बोल० भागजाना, फिरना, हटना, टलना, २ अप्रसन्न होकर फिरजाना ।

प्रा० पीठपरहाथफेरना–बोल० पीठ थपथपाना, शाबाशी देना, ढाढस देना । [ना, भागना, हटना ।

प्रा० पीठफेरना–बोल० चलाजा-

प्रा० पीठलगना–पीठ पर घाव होना, (जैसे घोड़े के) २ घोड़े पर चढ़ना । [पु० आसन, पीढ़ा ।

सं० पीठ–(पिठ्=मारना, ठोकना)

प्रा० पीठी–(सं० पिष्टिका, पिष्= चूर करना) स्त्री० पिसी हुई उरद की दाल ।

प्रा०पीड़–(सं० पीड़ा) स्त्री०बालक के पैदा होने के समय का दुःख जो लुगाई को होता है ।

सं० पीड़ा–(पीड़्=दुःख देना) स्त्री० दुःख, दर्द, व्यथा, वेदना ।

सं० पीड़ित–(पीड़=दुःखदेना)कृ० पु० दुःखित, दुःखी, बीमार ।

सं०पीड्यमान–मर्म० पु०पीड़ायुक्त, पीड़ाविशिष्ट । [मोढ़ा, मचिया ।

प्रा० पीढ़ा–(सं० पीठ) पु० पटरा,

प्रा० पीढ़ी–(सं० पीठिका) स्त्री० मचिया, २ वंशावली, वंश की परम्परा ।

सं० पीत–(पा=पीना,अर्थात् आंखों से दिखाई देना) गु० पीला, पु० पीला रंग, पिया हुआ, पानकृत ।

प्रा० पीत } (सं०प्रीति)स्त्री०प्यार,
पीति } प्रेम,नेह, स्नेह, छोह ।

प्रा० पीतम–(सं० प्रियतम) गु० बहुत प्यारा, पु० स्वामी, भर्त्ता ।

प्रा० पीतल–(सं० पित्तल, वा पीतलका पीत=पीला,ला=लेना)पु० एक प्रकारकी पीली धातु ।

सं०पीताम्बर–(पीत=पीला, अम्बर =कपड़ा) पु०पीला रेशमीकपड़ा,२ जिसके कपड़े पीलेहों, ३ श्रीकृष्ण ।

सं० पीन–(पै, वा प्यय्=बढ़ना, मोटा होना) गु० मोटा, स्थूल,पुष्ट ।

प्रा०पीनक–स्त्री० अफ़ीम के नशे से ऊंघाई ।

प्रा०पीनस–पु०पालकी,रोगविशेष ।

प्रा०पीनसवारे–गु० पीनसरोगवाला जिसके नाकमें कीड़े पड़गयेहों ।

प्रा० पीना–(सं०पान) क्रि०स०पान करना, २ तमाकूका धूआंखींचना ।

प्रा० पीजाना–पु० पीना, पीलेना, २ सोखना,३ क्रोधको पीना मारना, चुपरहना, ४ उत्तर देने से रुकना ।

प्रा० पीपल–(सं०पिप्पल) पु०एक वृक्ष का नाम जिसको हिंदू पवित्र मानतेहैं, २ (सं० पिप्पली, पा= बचाना) स्त्री० एक तरहका गर्म मसाला ।

प्रा०पीपलामूल-(सं०पिप्पलीमूल) पु० पीपल अथवा पिप्पलीकी जड़ ।

सं० पीयूष } (पीय्=पीना, वा
पेयूष } तृप्त होना) पु०अमृत

अमी, सुधा, आबहयात, २ दूध।

प्रा० पीर—(सं० पीड़ा) स्त्री० पीड़, दर्द, दुःख, व्यथा, वेदना।

प्रा० पीरा } (सं० पीत) गु० पीत
पीला } वर्ण।

प्रा०पीलाम-(यहशब्द चीनीहै)बोल० साटिन, एकतरहका रेशमीकपड़ा।

प्रा० पीसना—(सं० पेषण, पिष्= पीसना) क्रि० सं० चूर चूर करना, बुकनी करना, चूर्ण करना, आटा करना, दलना, चकना चूर करना, २ कड़ कड़ाना, (जैसे दांत)।

प्रा० पीहर—पु० स्त्रीके बापका घर, नैहर, मैका।

सं० पुलिङ्ग } (पुम्=पुरुष, लिङ्ग
पुल्लिङ्ग } =चिह्न) पु० पुरुष चिह्न, पुरुषत्व, २पुरुषकावाचीशब्द।

प्रा० पुकार—स्त्री० हांक, गोहार, डाक, चिल्लाना, चिल्लाहट।

प्रा० पुकारना-क्रि० स० हांकमारना, चिल्लाना, बुलाना।

प्रा०पुखराज—पु० एक रत्नकानाम।

सं० पुङ्ग—पु० सुपारी, पूंगीफल।

सं० पुङ्गव—(पुम्=पुरुष, गो=गाय) पु० बैल, वृषभ, और जब यह किसी दूसरे पदके पीछे आवे तब इसका अर्थ होताहै श्रेष्ठ, उत्तम—जैसे नर पुङ्गव=मनुष्यों में श्रेष्ठ।

प्रा० पुङ्गीफल } (सं० पूगफल, पु
पूंगीफल } =पवित्रहोना) पु० सुपारी, डली।

प्रा०पुजना—(सं० पूर्=भरना) क्रि० अ० पूरा होना २ प्रतिष्ठापाना।

प्रा०पुजवाना } (सं०पुज्=पूजना)
पुजाना } क्रि० सं० पूजा कराना, (सं० पूर्ण) पु० पूरा कराना, भराना।

प्रा०पुजापा (सं०पूजा) पु० पूजा की [सामग्री।

सं० पुञ्ज—(पुम्=पुरुष, जी=जीतना वा जन्=पैदाहोना अर्थात् जो पुरुषों से इकट्ठा किया जाता है) पु० ढेर, समूह, राशि, थोक।

सं० पुट (पुट्=मिलना) पु० दोना, २ मिलाव, मिलना, ३ ढकना।

सं० पुटक—पु० दोना, पद्म।

सं०पुटकिनी—स्त्री० पद्मिनी, दुानयां।

सं०पुटित क० पु० युक्त, शामिल।

प्रा०पुट्ठा पु० जानवरकाचूतड़, पूठ।

प्रा०पुड़िया—(संपुटी, पुट्=मिलना) स्त्री० काग़ज़ की छोटी सी गांठ।

सं० पुण्डरीक— (पुडि=मसलना, मलना) पु० कमल, श्वेतकमल, २ अग्निकोण के हाथी का नाम, ३ बाघ, ४ एक प्रकार का सांप, ५ एक प्रकारका कोढ़, ६ सफ़ेद छाता।

सं० पुण्डरीकाक्ष—(पुण्डरीक=कमल, अक्ष=आंख) पु० बिष्णु, जिस की आंखें कमल सी हों।

सं० पुण्य—(पू=पवित्रहोना) भा० पु० पवित्र काम, सुकृत काम, धर्म, गु० पवित्र, शुद्ध, पावन, २सुन्दर, ३सुगंधित।

सं० पुण्यकृत्—क० पु० धार्मिक।

सं० पुण्यजनक—क० पु० पुण्योत्पादक, पुण्यकर्ता।

सं० पुण्यभूमि—(पुण्य=पवित्र, भूमि=धरती) स्त्री० पवित्र धरती, आर्यावर्त्त, अन्तर्वेद।

सं० पुण्यवान्—(पुण्य=धर्म, वत्=वाला) गु० धर्मात्मा, धार्मिक।

सं० पुण्यात्मा—(पुण्य=पवित्र, आत्मा, मन, जिसकी आत्मा धर्म में लगी हो) गु० पुण्यवान, धर्मात्मा, पवित्रात्मा।

प्रा० पुतला, पूतला—(सं० पुत्तल) पु० मूर्ति, काठकी बनीहुई मूर्ति।

प्रा० पुतली, पूतली—(सं० पुत्तली) स्त्री० आंख का तारा, २ काठ की मूरत। [मक्षिका।

सं० पुत्तिका—स्त्री० पुतली, २ क्षुद्र

सं० पुत्र—(पुत्=एक नरक का नाम, त्रै=बचाना, जो पुत्=नाम नरक से अपने बाप को बचावे) पु० बेटा।

सं० पुत्रिका, पुत्री—(पुत्र) स्त्री० बेटी, लड़की, कन्या, २ गुड़िया।

प्रा० पुन, पुनि—(सं० पुनर्) समुच्च० फिर, बहुरि, पीछे।

सं० पुनःपुना—(पुनर्=बारंबार, पू=पवित्र करना) स्त्री० पुनपुन नदी जो पटने से पांच कोस गया के रास्ते पर है, "कीकटेषु गया पुण्या, नदीपुण्या पुनःपुना" (वायु पुराण) अर्थ—कीकट अर्थात् मगध देश में गया और पुनपुन नदी पवित्र हैं। [फिर।

सं० पुनःपुनर्—अव्य० बारंबार, फिर

सं० पुनर्—अव्य० प्रथम, निश्चय, अधिकार, भेद, पक्षान्तर, फिर फिर, और।

सं० पुनरागमन—(पुनः+आगमन) भा० पु० फिर आना, लौटना।

सं० पुनरुक्ति—(पुनर्=फिर, उक्ति=कहना) स्त्री० फिर कहना, दो बार करना।

सं० पुनर्जन्म—(पुनर्=फिर, जन्म=पैदा होना) पु० दूसरा जन्म।

सं० पुनर्भव—पु० नख, नहँ, पुनर्जन्म, दूसरी पैदायश।

सं० पुनर्वसु—(पुनर्=फिर, वसु=रहना) पु० सातवां नक्षत्र, गंधर्व, मुनि भेद।

सं० पुनीत—(पू=पवित्र होना) गु० पवित्र, शुद्ध निर्मल, स्वच्छ। [मनुष्य।

सं० पुमान्—क० पु० पुरुष, आदमी,

सं० पुर—(पुर्=आगे जाना, वा पृ=भरना) पु० नगर, शहर, २ घर,

३ देह, ४ एक राक्षस का नाम।
सं० पुरजन–क०पु०पुर के मनुष्य।
सं० पुरञ्जन–पु० जीव।
सं० पुरःसर–(पुरस्=आगे, सृ=जाना) पु०अगुवा,अग्रगामी,पेशवा।
सं० पुरट–(पुर=आगेजाना) पु० सोना, कंचन।
सं० पुरतः–अव्य०अग्रे, आगे, पेश।
सं० पुरन्दर–(पुर=नगर, दृ=फाड़ना) क० पु० इन्द्र जो राक्षसों के नगरोंको नाश करताहै,२चौर।
सं०पुरन्ध्री–स्त्री०कुटुम्बिनी,भिल्लिन।
सं० पुरारि–(पुर=दैत्य,अरि=शत्रु) पु० महादेव, शिव।
सं० पुरवासी–(पुर=नगर, वासी=रहनेवाला) पु० शहर का रहनेवाला, नगरनिवासी।
सं० पुरस्कार–(पुरस्=आगे,कृ=करना) पु० आदर, सत्कार, पूजा, दान, फल, इनाम, बदला।
सं० पुरस्तात्–अव्य० आगे, अग्रे, पेश्तर, पूर्व, पूर्व में।
प्रा० पुरा–(सं० पुर) पु० गांव।
सं० पुरा–अव्य० प्राचीन, पुराना, पुराण, निकट, अतीत, भावी, पूर्व समय, पिछला वक्त।
सं० पुराकृत–(पुरा=पहले, कृत=किया) कर्म० पु० पहले का किया हुआ, पूर्वजन्म।
सं० पुराण (पुरा=पुराना, पुरस्=आगे जाना––अर्थात् जिसमें पुराने समय की बातें हों, अथवा जो पुराने समय में बने हों) पु० वे ग्रन्थ जिसमें से बहुतोंको व्यास जी ने बनाये अथवा इकट्ठे किये। पुराण सब पद्य में लिखे हुए हैं और उनको हिन्दू पवित्रमानते हैं। हरएक पुराण में विशेष करके इन पांच बातों का वर्णन है जैसे–

"सर्गश्च प्रतिसर्गश्च"
"वंशोमन्वन्तराणि च"
"वंशानुचरितं चैव"
"पुराणं पंच लक्षणम्"

अर्थात् १ संसार की उत्पत्ति, २ प्रलय और प्रलय के पीछे फिर संसार की उत्पत्ति, ३ देवता और शूरबीरों की वंशावली, ४ मनुओं का राज, और ५ उनके वंश के लोगों का व्यवहार और चलन। पुराण अठारह हैं १ ब्रह्मपुराण, २ पद्मपुराण, ३ ब्रह्माण्डपुराण, ४ अग्निपुराण, ५ विष्णुपुराण, ६ गरुड़पुराण, ७ब्रह्मवैवर्त्तपुराण, ८ शिवपुराण, ९ लिंगपुराण, १० नारदपुराण, ११ स्कन्दपुराण, १२ मार्कण्डेयपुराण, १३ भविष्यत् पुराण, १४ मत्स्यपुराण, १५वराह पुराण, १६ कूर्म्मपुराण, १७वामन पुराण, १८ श्रीमद्भागवतपुराण।

इन सब पुराणोंमें चारलाख श्लोक गिनेगये हैं और अठारह उपपुराण भी हैं प्राचीन, जीव गु० पुराना, पहले का, सबसे पहला, बूढ़ा, ८० कौड़ी की संख्या, मूल्य ।

सं० **पुराणपुरुष**-(पुराण=पुराना वा सबसे पहला, पुरुष=मनुष्य) पु० विष्णु, भगवान्, २ बूढ़ाआदमी ।

सं० **पुरातन**-(पुरा=पुराना) गु० पुराना, प्राचीन, अगले समयका ।

प्रा० **पुरातम**-(सं० पुरातन) गु० पुराना, क़दीम, प्राचीन ।

प्रा० **पुराना**-(सं० पुराण) बोल० अगले समय का, प्राचीन, पुरातन, बोदा, बहुत दिनका, बूढ़ा ।

प्रा० **पुराना**-(सं०पूर्=पूराकरना) क्रि०स०भरदेना, भरना, पूरा क० ।

सं० **पुराराति** } **पुरारि** } (पुर एक राक्षसका नाम, आराति वा अरि वैरी) पु० शिव, महादेव जिन्होंने पुर नाम दैत्यको माराथा ।

सं० **पुरी**-(पुर) स्त्री० नगरी ।

सं० **पुरीष**-(पृ=भरना) विष्ठा, गूह, मल । [वंशी राजाका नाम ।

सं० **पुरु**-(पृ=भरना) पु० एक चन्द्र-

प्रा० **पुरुखा** } **पुरखा** } **पुर्खा** } (सं०पुरुष) पु० बड़े, बापदादे, दादेपरदादे, पूर्वपुरुष ।

सं० **पुरुष**-(पुर्=आगे जाना) पु० मनुष्य, नर, परमेश्वर, २ पुरुखा ।

सं० **पुरुषसिंह**-(पुरुष + सिंह) पु० पुरुषों में सिंह, श्रेष्ठमनुष्य ।

सं० **पुरुषार्थ** (पुरुष=मनुष्य, अर्थ= प्रयोजन) पु० धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, २ बल, जोर, वीरता, साहस, पराक्रम, परोपकार ।

सं० **पुरुह** } **पुरूह** } गु०प्राचीन, चहल, बहुत, अधिक ।

सं० **पुरोगम**-(पुरस्=आगे, गम्= जाना) गु० श्रेष्ठ, अग्रगामी, पेशवा ।

सं० **पुरुषोत्तम**-(पुरुष=मनुष्य, उत्तम=श्रेष्ठ) पु० विष्णु, नारायण, २ उत्तम मनुष्य ।

सं० **पुरोडाश**-(पुरस्=आगे, दाश्= देना) पु० होम की सामग्रीघीआदि हविस्, खीर ।

सं० **पुरोधा** } **पुरोहित** } (पुरस्=आगे, धा= रखना) पु० कुलगुरु, उपाध्याय ।

प्रा० **पुर्वा** } **पुर्वैया** } (सं० पूर्व वायु) स्त्री० पूर्व की हवा ।

प्रा० **पुर्सा**-(सं० पौरुष) गु० मनुष्य की उँचाई के बराबर, पु० मनुष्यके डील की उँचाईके बराबर विस्तार, चार हाथ का नाप ।

सं० **पुल**-(पुल=ऊंचा होना) पु० सेतु, बंध, बांध, गु० श्रेष्ठ, उत्तम ।

सं० **पुलक**-(पुल्=बढ़ना, वा ऊंचा वा खड़ा होना) पु० मारे खुशी के रोवां खड़ाहोना, रोमांचित होना,

प्रसन्न होना, रोमाञ्च, गजभोजन, हरताल, गड़हा, तुच्छधान्य ।

सं०पुलकित-(पुल्=बढ़ना,वा ऊंचा होना) कर्म० पु० रोमांचित, हर्षित, आनंदित ।

सं० पुलस्ति, पुलस्त्य (पुल्=बड़ाहोना) पु० ब्रह्मा का बेटा, रावण का दादा, सप्तऋषियों में का एक ऋषि ।

सं० पुलिन-(पुल्=ऊंचाहोना) पु० नदी के बीच में बालू का टापू, तट, किनारा । [म्लेच्छ ।

सं० पुलिन्द-पु०भिल्ल,निषाद,शबर,

प्रा० पुलिन्दा-पु० पार्सल, गठरी, गठिया, गांठ ।

सं० पुलोमजा-(पुलोमा=असुरभेद जा=उस से पैदा) स्त्री० इन्द्रप्रिया, शची, इन्द्राणी ।

प्रा०पुवाल-(सं०पलाल,पल्=जाना वा बचना)पु०पुवाल, खर, तिनका, बिचाली, डांठी,पयाल ।

सं० पुषा-स्त्री० पुष्टि, पालन ।

सं०पुष्कर-(पुष्=बढ़ना,वा पालना) पु० कँवल, २ आकाश, ३ पानी, एक तीर्थ का नाम जो अजमेर से तीन कोस परहै, ५ सातद्वीपों में का एक द्वीप, ६ पोखरा, ७तालाव, ८ कमल, ९ हाथीकी सूंड़, १० ढोल, ११ सर्प, १२ तूर्य्यबाजा, तुरही ।

सं० पुष्करिणी-स्त्री० तलैया, हथिनी,पुष्करमूल,पुहकरमूल,पद्मसमूह।

सं० पुष्कल-(पुष्=अधिक होना) गु० बहुत, ढेर, तृप्त, सम्पूर्ण, तुष्ट,२ श्रेष्ठ,उत्तम,अच्छा, मेरुपर्वत, कस्तूरी ।

सं० पुष्ट-(पुष्=पालना, वा बढ़ना) गु० पालाहुआ, २ मोटा ताज़ा ।

सं० पुष्टि-स्त्री०पालना,पोषण,वृद्धि, असगंध औषध मातृकाभेद विवाहोंमें सोलह मातृका पूजीजाती हैं उन में की एक ।

सं० पुष्टाङ्ग-(पुष्ट=मोटा, अङ्ग=शरीर) गु० मोटा ताज़ा, जिसका शरीर पुष्टहो ।

सं० पुष्प-(पुष्प्=फूलना,विकसना) पु० फूल, कुसुम, सुमन, २ स्त्री का रजस्, ३ कुबेर का बिमान, ४ एक प्रकार की आंखोंका रोग ।

सं०पुष्पक-(पुष्प=फूल,अर्थात् फूल सा हलका)पु० कुबेर का बिमान, कंकण, रसौत, लोहपात्र, अँगीठी, लोहा, कांसाधातु ।

सं० पुष्पकरण्डक-पु० पुष्पचयनपात्र, बांसकी बनी हुई फूल चुन कर रखने की पिटारी, फूलों की पिटारी ।

सं० पुष्पचाप-पु० कामदेव ।

सं० पुष्पदन्त-पु० वायुदिशा का दिग्गज, विद्याधर गंधर्व ।

सं० पुष्पपुर-पु० कुसुमपुर, पाटलिपुत्र, पटना ।

सं० पुष्पमास-पु० चैत्र।

सं० पुष्परस-(पुष्प+रस)पु०फूलों का रस, मकरन्द, मधु।

सं० पुष्पलिट्-(पुष्प=फूल, लिह्=स्वादलेना) क० पु० भ्रमर, भौंरा।

सं० पुष्पवाटी-(पुष्प=फूल, वाटी=बाड़ी) स्त्री० फूलों की बाड़ी।

सं० पुष्पविमान-(पुष्प+विमान) पु० फूलोंका विमान, देवताओं का विमान, कुबेर का विमान।

सं० पुष्पाञ्जली-(पुष्प+अंजली) स्त्री० दोनों हाथों में फूल लेकर और कुछ मंत्र पढ़कर देवता को चढ़ाना, निछावर, भेट।

सं० पुष्पित-(पुष्प्=विकसना)मर्म० फूला हुआ, विकसा हुआ।

सं० पुष्य-(पुष्=पुष्ट करना किसी कामको) पु० आठवां नक्षत्र।

सं० पुस्तक-(पुस्त=आदरकरना, वा बांधना) स्त्री० पोथी, ग्रंथ, किताब।

प्रा० पूआ (सं०पूप,पू=शुद्ध करना) पु० मालपुआ।

प्रा० पूंगी-स्त्री० बांसुरी, एक प्रकार की बांसुरी जिसको सांप पकड़ने वाले बजाते हैं, मौहर।

प्रा० पूंछ-(सं० पुच्छ, पुच्छ=मस्त होना, जिसके बल पशु मस्त रहते हैं) स्त्री० दुम, लांगूल, पुच्छ।

प्रा० पूंछना-क्रि० स० पोंछना, झाड़ना, फर्श्वीकरना, साफ करना।

प्रा० पूंजी-(सं० पुञ्ज) स्त्री० धन, मूलधन, असल धन, सम्पत्ति, सर्मायां, सम्पदा।

सं० पूग-(पू=पवित्रहोना) पु०सुपारी, २ समूह, ३ एक वृक्षका नाम।

प्रा० पूछ-(पूछना) स्त्री० खोज, अन्वेषण, प्रश्न।

प्रा० पूछपाछ-बोल० पूछना, निर्णय करना, प्रश्न।

प्रा० पूछना-(सं० प्रच्छन, प्रच्छ्=पूछना) क्रि० स० प्रश्न करना, सवाल करना, जिज्ञासा करना।

सं० पूजक-(पूज्=पूजना) क० पु० पुजारी, पूजनेवाला, सेवक।

सं० पूजन-(पूज्=पूजना) भा० पु० अर्चा, पूजा, अर्चन।

प्रा० पूजना-(सं०पूजन) क्रि० स० परस्तिशकरना, पूजाकरना, अर्चना, भजना, ध्याना, बहुतमानना, २ (सं०पूर्ण) क्रि० अ० पूरा होना।

सं० पूजनीय } (पूज्=पूजना) मर्म० पूजमान } पु० पूजने योग्य। मान्य, काबिलपरस्तिश।

सं० पूजयिता-क०पु० पूजक, पूजनेवाला।

सं०पूजा-(पूज=पूजना)स्त्री०अर्चा परस्तिश, पूजन, अर्चन, आदर, सन्मान, सेवा।

प्रा० पूजारी } (सं० पूज्=पूजना) पुजारी } क०पु० पूजनेवाला,

सेवक ।

सं० पूजित–(पूज्=पूजना) र्म्पि० पु० पूजाहुआ, अर्चित, खिदमत कियागया ।

सं० पूज्य–(पूज्=पूजना) र्म्पि० पु० पूजने योग्य, पूजनीय, पु० ससुर, गुरुजन ।

प्रा० पूठ–पु० कूला, चूतड़, पुट्ठा ।

प्रा०पूठा-(सं०पट्टिका)पु०गत्ताजिल्द।

प्रा० पूणी–स्त्री० रुई का पहल जो कातने के लिये बनायाजाता है ।

सं० पूत–(पू=पवित्र करना) पु० पवित्र, सफ़ा, शुद्ध, सचाई, सफ़ाई, कुश, शङ्ख ।

प्रा० पूत–(सं० पुत्र) पु० बेटा ।

सं० पूतना–(पू=पवित्रकरना) स्त्री० एकराक्षसी जिसकोश्रीकृष्णनेमारा।

सं० पूति–भा० स्त्री० पवित्रता, सफ़ाई, स्वच्छता, निर्मलता, महक ।

प्रा० पूनियां, पूनों, पूनौं–(सं०पूर्णिमा) स्त्री० पूर्णमासी, हिन्दी महीनेकापिछलादिन

सं० पूप–(पू=शुद्ध करना) पु० पूआ, मालपुआ । [बिगड़ारक्त ।

सं० पूय–गु० निषिद्ध, कुत्सित, पीब,

सं० पूरक–(पूर्=भरना) क० पु० भरनेवाला, पूर्ण करनेवाला, २ प्राणायाममें हवाको ऊपर खैंचना ।

सं० पूरण–(पूर्=पूरा करना) गु० भरा, पूरा, सारा, सब ।

सं० पूरणीय–(पूर्+अनीय) र्म्पि० पु० पूरा होनेयोग्य ।

प्रा० पूरब–(पूर्व) पु० पूर्वदिशा ।

प्रा० पूरा–(सं० पूर्ण) गु० सब, सारा, भरा, समाप्त, बस, ठीक, तमाम, पक्का ।

सं० पुरुष–(पुर्=पूरा करना) पु० मनुष्य, नर, पुरुष ।

सं० पूर्ण–(पूर्=पूरा करना) गु० पूरा, भरपूर, भरा, सब, सारा, तमाम, समस्त, समाप्त, ठीक, पक्का ।

सं० पूर्णमासी–(पूर्ण=पूरा, मास=चांद, वा महीना) स्त्री० पूनौं, पूर्णिमा ।

सं०पूर्णाहुति-(पूर्ण+आहुति) स्त्री० होममें सबके पीछे आहुति वा बलि ।

सं० पूर्णिमा, पूर्णमा–(पूर्ण=पूरी, अर्थात् जिस दिन चांद की कला पूरी होती है) स्त्री० पूनौं, पूर्णमासी ।

सं० पूर्त–र्म्पि० पु० पूरा, समाप्त, पूरित, पु० बावली, तालाब, कुआँ, बागीचा, देवमंदिर ।

सं० पूर्तिन–क० पु० पूर्णकर्ता ।

सं० पूर्ब, पूर्व–(पूर्व=रहना वा बुलाना) पु० पूरब दिशा, गु० पूरबदिशा का, पूर्वी, २ पहला, क्रि० वि० पहले, प्रथम, आगे । [पु० बड़ाभाई।

सं०पूर्वज-(पूर्व=पहले, जन्=पैदाहोना)

सं० पूर्वार्द्ध—(पूर्व=पहला, अर्द्ध= आधा) पु० पहला, आधा।

प्रा० पूर्बिया } (सं० पौर्विक, पूर्व) पूर्वी } गु० पूर्वदेशी, पूर्वका।

सं० पूर्वोक्त—(पूर्व=पहले, उक्त=कहा हुआ) र्म० पु० पहले कहाहुआ, मजकूर।

सं० पूर्वलिखित—(पूर्व=पहलेका, लिख=लिखना) र्म० पु० पहले का लिखा हुआ।

प्रा० पूला—(सं० पूल, पूल=ढेरलगाना) घासका बोझा अथवा गट्ठा।

सं० पूषन—(पूष्=बढ़ना) पु० सूर्य्य।

प्रा० पूस—(सं० पौष, पुष्य एक नक्षत्र का नाम) पु० चन्द्र वर्ष का नवां महीना जिसमें पूरा चांद पुष्य नक्षत्र के पास रहता है और पूर्णमासी के दिन यह नक्षत्र होता है।

सं० पृक्त—(पृच्=मिलना) क० पु० मिश्रित, मिलाहुआ, मुरकब।

सं० पृच्छक—(पृच्छ्+अक, पृच्छ= पूंछना, प्रश्नकरना) क० पु० प्रश्न-कर्ता, जिज्ञासु, पूंछनेवाला।

सं० पृच्छण—भा० पु० पूंछना, प्रश्न।

सं० पृतना—स्त्री० सेना, फ़ौज २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घोड़े, १२१५ मनुष्य जिस फ़ौज में हों।

सं० पृथक्—(पृथ=फेंकना) गु० क्रि० वि० जुदा, अलग, भिन्न, न्यारा।

सं० पृथक्करण—(पृथक्=जुदा, करण= करना) पु० जुदाकरना, अलगकरना।

सं० पृथक्क्षेत्र—पु० भिन्नक्षेत्र, अलग का खेत, जारजपुत्र, वर्णसंकर माता जो यारसे पुत्र पैदाकरे।

सं० पृथा—स्त्री० कुन्ती, पाण्डु की स्त्री और युधिष्ठिर अर्जुन और भीम की मा, विस्तार, प्रक्षेप।

सं० पृथवी } (पृथ्=विख्यातहोना पृथिवी } फैलाना) स्त्री० धरती, धरणी, भूमि, जमीन।

सं० पृथिवीनाथ } पृथिवी=धरती, पृथिवीपति } नाथ वा पति= मालिक) पु० राजा, नृपति, भूपति।

सं० पृथिवीपाल—(पृथिवी=धरती, पाल=बचाना) पु० राजा, पृथिवी-नाथ, भूपति।

सं० पृथु } पृथ्=फेंकना, वा पृथ्= पृथुक } विख्यात होना) पु० सूर्य वंशियों का पांचवां राजा गु० बड़ा, मोटा, २ चतुर, विशाल, ३ बालक, ४ चिउरा।

सं० पृथिकु—(पृथ्=विख्यात होना) पु० यदुवंशियों का एक राजा और श्रीकृष्ण का पुरुषा।

सं० पृथुल—क० पु० महत्, बड़ा।

सं० पृथ्वी—(पृथु=बड़ी, चौड़ी, प्रथ् =विख्यात होना, फैलना) स्त्री० धरती, धरणी, भूमि, जमीन।

सं० पृष—पु० सींचना, क्लेश, छोटा दान, लाभ, ओदा करना।

सं० पृषत्–पु० मृगभेद, विभाग, हिस्सा, बिन्दु, बूंद, छींट, बेल बूटा, सूक्ष्म, पतला, वायु, हवा, सिंह ।

सं० पृषोदर–(पृष + उदर) गु० सूक्ष्मोदर, कृशोदर, छोटे पेटवाला ।

सं० पृष्ठ–(पृष=सींचना) स्त्री० पीठ, पिछाड़ी का अंग, हर एक चीज़ का पिछला भाग, पु० पिठौता, पुस्तक के पत्रे की एक ओर ।

सं०पृष्ट–(प्रच्छ=पूछना) कर्म० जिज्ञासित, पूछागया ।

प्रा० पेई–(सं० पेटक पिट्=इकट्ठा करना) स्त्री० पिटारी ।

प्रा० पेंग–स्त्री० झूलाका हिलाना ।

प्रा० पेंठ–स्त्री० हाट, बाज़ार, मंडी ।

प्रा० पेंदा–पु० तला नीचे का भाग ।

प्रा० पेखना–(सं० प्रेक्षण) क्रि० स० देखना, निरखना ।

प्रा० पेखना–पु० स्वांग, खेल ।

सं० पेचक–(पचि=फैलाना) पु० उल्लू, उलूक, पेचा ।

प्रा० पेचा–(सं०पेचक)पु०उल्लू ।

सं०पेट–(पिट्=इकट्ठा करना) पु० उदर, जठर, २गर्भस्थान, कोख,गर्भाधान, ३ बंदूक आदि की मुहड़ी, ४ छेद, खोह, कंदरा, बंदूक, पिटारा, पिटारी, टोकरी, डब्बा, डिबिया ।

प्रा० पेटआना–बोल०पेट चलना, बहुत झाड़ा फिरना, बहुत दस्त होना, दस्त की बीमारी होना ।

प्रा० पेटकादुखदेना–बोल० भूखों मरना ।

प्रा० पेटकापानी न हिलना–यह बोल चाल उस जगह बोला जाता है कि जब घोड़ा ऐसी चाल चले कि सवार हिले डुले नहीं और न किसी तरह का दुःख पावे ।

प्रा० पेटकीआग–बोल० मा बाप का प्यार, २ सन्तान, औलाद, लड़के का दुःख न देख सकना ।

प्रा० पेटकी आगबुझाना–बोल० कुछ खाना, भूखेको कुछ खिलाना ।

प्रा० पेटकीबातें–बोल० मन की बातें, गुप्त बातें, छिपी बातें ।

प्रा०पेटगड़गड़ाना-बोल० पेट गड़बड़ाना,पेटबोलना, पेटहड़बड़ाना ।

प्रा० पेटगिरना–बोल० गर्भगिरना, गाभ गिरना, अधूरा जाना, स्त्री के पेट से कच्चे बच्चेका गिरना ।

प्रा०पेटजलना–बोल० बहुत भूखा होना ।

प्रा० पेटदिखाना–बोल० अपनी गरीबी और भूख को जताना ।

प्रा० पेटपालना–बोल० अपना निर्वाह करना, गुज़रान करना, २ स्वार्थी होना ।

प्रा० पेटपीठएकहोना–बोल० बहुत दुबला होना, लागर होना ।

प्रा० पेटपोंछन–बोल० स्त्री का

सब से पिछला बालक। [टपाल।

प्रा० पेटपोसू—खाऊ, पेटू, पेटार्थू, पे-

प्रा० पेटफूलना—बोल० बहुतहँसना, हँसी के मारे लोटना, २गर्भ रहना।

प्रा० पेटबढ़ाना—बोल० बहुत खाना, २दूसरे के हिस्सेपरहाथबढ़ाना।

प्रा० पेटबांधना—बोल० भूखसे कम खाना। [अघाके।

प्रा० पेटभर—बोल० जीभर, भरपेट,

प्रा० पेटभरना—बोल० खाना, खा चुकना, अघाना, तृप्त होना।

प्रा० पेटमारना—बोल० आत्मघात करना, आपघात करना, खुदकुशी करना।

प्रा० पेटमें पैठना—बोल० दूसरे का भेद लेना, २ खुशामद की बातें करके मित्र बन जाना।

प्रा० पेटमें लेना—बोल० सहना, संतोष रखना।

प्रा० पेटरहना—बोल० पेटसे होना, गर्भिणी होना, गर्भ रहना।

प्रा० पेटलगजाना—बोल० भूखों मरना, बहुत भूखा होना।

प्रा० पेटलगरहना—बोल० बहुत भूखा होना।

प्रा० पेटवाली, पेटसे—बोल० गर्भिणी, गर्भवती।

प्रा० पेटसे होना—बोल० गर्भिणी होना, पेट रहना।

प्रा० पेट हड़बड़ाना—बोल० दस्त की हाजत होना, पेट गड़बड़ाना।

सं० पेटार्थी, प्रा० पेटार्थू—(सं० पेट, और अर्थी चाहने वाला, अर्थ=चाहना वा मांगना) गु० खाऊ, पेटू, पेटपालू।

सं० पेटिका—(पिट्=इकट्ठा करना) स्त्री० सन्दूक, पिटारा, पेटी, टोकरी, डब्बा। [एक दिनकाखाना।

प्रा० पेटिया—(पेट) पु० सीधा, हर

सं० पेटी—(पिट्=इकट्ठाकरना) स्त्री० पिटारी, २ कमरबन्द, पेटपर बांधने की चमड़े की बन्धनी, ३ छाती।

प्रा० पेटू—(पेट) गु० अपना पेट भरनेवाला, पेटार्थू, पेटार्थी, मर्भूखा, पेटपालू, खाऊ।

प्रा० पेटौखा—(पेट) पु० पेट चलना, अतिसार रोग, आंव।

प्रा० पेठा—पु० कूष्माण्ड, कुम्हड़ा।

प्रा० पेड़—पु० रूख, तरु, वृक्ष, पौधा।

प्रा० पेड़ा—(सं० पिण्ड) पु० एक प्रकार की मिठाई।

प्रा० पेड़ी—स्त्री० छोटा पेड़ा, २ एक तरह का पान, ३ नील की डांठी।

प्रा० पेडू—(पेट) पु० नाभि के नीचे का भाग, तलपेट, पेटतल।

प्रा० पेम—(सं० प्रेम) पु० प्यार, स्नेह।

प्रा० पेमी—(सं० प्रेमी) गु० प्यारा, प्रीतम, प्रेमी, छोही, मित्र।

सं० पेय—(पा=पीना) पु० पानी,

२ दूध, गु० पीने योग्य ।

प्रा० पेलना—(सं०पेलन, पिल् वा पेल्=जाना) क्रि० स० ठेलना, ढकेलना रेलना, धक्का देना, २ ठांसना, ३ निचोड़ना, ४ आज्ञा भंग करना, वचन तोड़ना ।

सं० पेश, पेशल—गु० सुन्दर, दक्ष, कोमल, चतुर, निर्मल, मनोहर, रुचिर ।

प्रा० पेशाब—(सं०प्रस्राव प्र, स्रु=चूना, बहना) पु० मूत, मूत्र ।

सं० पेशि—(पिश्=अंगविभाग) पु० वज्र, अण्डा ।

सं० पेशी—स्त्री० भृंगी, बड़ी कली, मियान, मांस, पुंज, समूह ।

सं०पेषक—क०पु०मर्दक,पीसनेवाला।

सं० पेषण—भा० पु० पीसना ।

सं० पेषित—कर्म० पु० पीसाहुआ ।

सं० पेषणि, पेषणी—(पिष्=पीसना) गु० स्त्री० चक्की, दलैती, जांता ।

सं० पेषि—पु० लोटा, बट्टा ।

प्रा०पैंचा—पु०हाथउधार,उधारऋण।

प्रा० पैंड़—(सं०पण्ड, पण्डू=जाना) पु० पांव, डग, क़दम, पद, २ उचान, ऊंची धरती ।

प्रा० पैंड़ा—(सं०पण्ड,पण्डू=जाना) पु० रस्ता, मार्ग, बाट, सड़क ।

प्रा० पैंताना—(सं०पादान्त पाद+अन्त) पु० पायन्ती, पायतल ।

प्रा० पैंतालीस—(सं० पञ्चचत्वारिंशत् पंच=पांच, चत्वारिंशत्=चालीस) गु० चालीस और पांच ।

प्रा० पैंतीस—(सं०पञ्चत्रिंशत्पञ्च=पांच, त्रिंशत्=तीस) गु० तीस और पांच ।

प्रा० पैंसठ—(सं० पञ्चषष्टिपञ्च=पांच,षष्टि=साठ)गु०साठऔरपांच ।

प्रा० पै—(सं०पयस्) पु०दूध,पानी, २(सं०उपरि)संकेतवर्ण० पर,ऊपर, ३(सं०पर) समुच्च०परन्तु पर ।

प्रा० पैज—पु० पण, होड़, प्रतिज्ञा, अहेद, क़ौल, वचन ।

प्रा० पैठ—स्त्री०हुंडीकी दूसरी नक़ल जब हुंडी खोय जाती है तब पैठ कराते हैं, २ पैठना,पहुँच,३भरोसा।

प्रा०पैठना—(सं०प्रविष्ट) क्रि० अ० घुसना, धसना, प्रवेश करना ।

प्रा०पैड़ी—स्त्री०सीढ़ी,ज़ीना,निसेनी।

प्रा० पैतृक—(पितृ) गु० पिताका, बाप का, बपौती, मौरूसी ।

प्रा० पैदल—(सं०पादात वा पदाति) पु० पियादा, पैरोंसे चलनेवाला ।

प्रा० पैन—(सं०पानीय)पु०नाली, नाला ।

प्रा० पैना—पु०आर, अंकुश,आंकुस, बैल के मारने का चाबुक, तीखा कांटा, गु० तीखा ।

प्रा० पैया-पु० पहिया, चक्र चक्का ।

प्रा० पैर-(सं० पद)पु० पांव, चरण, क़दम ।

प्रा० पैरना-क्रि०अ०तैरना,हेलना ।

प्रा० पैराक-क० पु० तैरनेवाला, पैरनेवाला ।

प्रा० पेवंदीबेर-पु० बड़े २ बेर ।

प्रा० पैसा-पु० तांबे का सिक्का, २ धन, दौलत, रोक,रोकड़, संपत्ति।

प्रा० पैसाउड़ाना-बोल०बहुतखर्च करना, अन्धाधुन्ध खर्च करना, २ दूसरेकाधन चुरालेना या ठगलेना।

प्रा०पैसाखाना-बो० पैसा उड़ाना, बहुत खर्चकरना, २ मजदूरी करके पेट भरना, ३ रिशवत लेना, ४ डकारजाना, विश्वासघात करके ले लेना।

प्रा० पैसाडुबोना-बोल०धनगँवाना।

प्रा० पैसाडूबना-बोल० धन बरबाद होना, रुपया पैसा खोयाजाना ।

प्रा० पैसेलगाना-बोल० धन खर्च करना,धन लगाना ।

प्रा० पैसेवाला-गु० धनवान, दौलतमंद, २ एक पैसेका ।

प्रा० पैसोंसेदरबारबांधना-बो० रिशवतदेना, घूस देना ।

प्रा० पैसार-पु०पहुँच, पैठ, प्रवेश ।

प्रा० पैहैं (पाना) क्रि० स० पावेगा, पाओगे ।

प्रा० पोइस-(सं०पश्य=देख) क्रि० वि० अलगहो, दूरहो, अरे, जब कि रस्तेपर बहुत से आदमी हों तब उनको अलग करने और नहीं छुआने के लिये भंगी यह शब्द बहुतबार बोला करता है।

प्रा० पोंछना-क्रि० स० पूंछना, झाड़ना, फर्श करना,साफ़करना।

प्रा० पोखर } पोखरा } (सं० पुष्कर) पु० तालाब, ताल,झील, तड़ाग ।

सं० पोगण्ड-गु० विकलांग, नपुंसक, अंगहीन,कुपुरुष, पु० सोलह वर्षकी अवस्था ।

प्रा० पोच-(फ़ा० "पूच,,) गु० नीच, तुच्छ, बुरा ।

प्रा०पोट-स्त्री० मोट, गांठ, गठरी ।

प्रा० पोटला-पु० बड़ी गठरी ।

प्रा०पोटली-स्त्री०छोटीगठरी, मोटरी,

प्रा० पोढ़ा } पौढ़ा } (सं०प्रौढ़) गु० बलवान्,२कड़ा,ठोंस,दृढ़ ।

प्रा० पोढ़ाई } पौढ़ाई } (सं० प्रौढ़ता) भा० स्त्री० बल,२ कड़ापन, दृढ़ता, ठोंसाई ।

सं० पोत-(पू=शुद्ध करना) पु० बच्चा, बालक, २ स्त्री० नाव ।

प्रा० पोत-पु० स्वभाव, प्रकृति, गुण, बनावट, २ काचका दाना

सं० पोतक-(पू=शुद्धकरना) पु० बालक, बच्चा ।

प्रा० पोतड़ा-पु० बच्चे का बिछौना ।

प्रा० पोतना-क्रि० स० लीपना, लेसना । [बेटा ।

प्रा० पोता-(सं०पौत्र) पु० बेटे का

प्रा० पोतिया-स्त्री० नहाने के समय पहनने का कपड़ा, गँवार लोगा के शिर पर बांधने का कपड़ा, २ एक खिलौने का नाम । [की बेटी ।

प्रा० पोती-(सं० पौत्री) स्त्री० बेटे

प्रा० पोथा-(सं०पुस्त, पुस्त्=आदर करना, वा बांधना)पु०बड़ीपुस्तक।

प्रा० पोथी-(सं०पुस्ती,पुस्त्=आदर करना, वा बांधना) स्त्री० पुस्तक, बही, किताब ।

प्रा० पोदना-एक पखेरू का नाम ।

प्रा० पोना-क्रि० स० पिरोना, गाथना, गूथना, गुहना, २ रोटी बेलना वा बनाना ।

प्रा० पोपला-गु० बेदाँत, दाँतरहित, अदाँत, जिस के दाँत गिरगये हों ।

प्रा० पोमचा-पु० एक तरह का रंगीला कपड़ा ।

प्रा० पोर-(सं० पर्व) स्त्री० गांठ, गिरहा, दो गांठों का बीच ।

प्रा० पोरी-(सं० पर्व) स्त्री० बाँस की अथवा गन्ने की गांठ ।

प्रा० पोला-गु० खाली, छूछा, कोमल, नर्म । [प्रबन्ध कर्ता ।

अं० पोलेटिकल एजेएट=राज्य

अं० पोलेटिकल सभा=राज नैतिक सभा । [नीति शास्त्र ।

अं० पोलेटिकल एजूकेशन=राज

अं० पोलेटिकल आफिसर=राज नैतिक कर्म्मचारी ।

अं० पोलेटिकल डिपार्टम्यएट =पोलेटिकल=राजनैतिक, डिपार्टम्यएट=प्रकरण, विभाग ।

सं० पोषक-(पुष्=पोसना पालना) क० पु० पोसनेवाला, पालनेवाला, रक्षक ।

सं० पोषण-(पुष्=पोसना) भा०पु० पालन, भरण, रक्षा ।

प्रा० पोषना, पोखना, पोसना } (सं० पोषण) क्रि० स० पालना, रक्षा करना, प्रतिपालन करना ।

सं० पोषणीय-(पुष्+अनीय) र्म्म० पु० रक्षायोग्य, पालनयोग्य ।

सं० पोषयित्नु-क०पु०भर्ता, स्वामी, खाविंद ।

सं०पोष्टा-क०पु०पालनकरनेवाला ।

सं० पोष्यपुत्र-(पोष्य=पालाहुआ, पुत्र=लड़का) र्म्म० पु० लेपालक, दत्तकपुत्र, गोद लियाहुआ बेटा, मुतबन्ना । [हान, सुबह ।

प्रा० पोह-स्त्री० भोर, तड़का, वि-

प्रा० पोहना—क्रि स० रोटी बनाना।

प्रा० पौ—स्त्री० पासे में का एका, २ वह जगह जहां बटोहियों को पानी पिलाया जाता है।

प्रा० पौंड़ा—(सं० पुण्ड्र, वा पौण्ड, पुडि=मलना) पु० एक प्रकार की ऊख।

प्रा० पौढ़ना—क्रि० अ० सोना, लेटना, आराम करना। [बेटा।

सं० पौत्र—(पुत्र) पु० पोता, बेटेका

सं पौत्री—(पुत्र) स्त्री० पोती, बेटे की बेटी।

प्रा० पौधा—पु० नया पेड़, केड़ा।

प्रा०पौन—(सं०पवन)स्त्री०हवा,वायु।

प्रा० पौन—(सं०पादोन, पाद=चौथा हिस्सा,ऊन=कम)गु०तीन चौथाई, चौथे हिस्से तीन, चारभागका तीन।

प्रा० पौना—पु० झरना, झरनी, एक लोहेकी चीज जिसमें बहुत से छेद होते हैं और उससे पकौड़ी आदि तली जाती हैं। [फाटक।

प्रा० पौर—स्त्री०बड़ा दरवाजा, द्वार-

सं० पौराणिक—(पुराण)पु०पुराण वक्ता, पुराण बांचनेवाला, पुराण पढ़ाहुआ, पण्डित।

प्रा० पौरिया—(पौर) पु० डेवढ़ीवान, द्वारपाल।

प्रा० पौरी—स्त्री० पौर, डेवढ़ी, द्वार।

सं० पौरुष—(पुरुष)पु०पुरुषत्व,पुरुषार्थ,पराक्रम, बल, ज़ोर,२पुर्सा।

सं०पौर्णमासी—(पूर्ण=पूरा, मास=महीना, वा चांद) स्त्री० पूर्णमासी, पूर्णमा, पूनौं।

प्रा० पौली—स्त्री० पौर, पौरी।

प्रा० पौवा—(सं०पाद=चौथाभाग) पु० चौथाभाग, पावभरका बांट।

सं० पौष—पूष शब्दको देखो।

प्रा० प्यार—(सं०प्रीति,वाप्रेम) पु० पियार, प्रेम, प्रीति, नेह, छोह, दुलार, मुहब्बत।

प्रा० प्यारा—(सं० प्रिय) गु० पु० प्रेमी, स्नेही।

प्रा० प्याराजानना—बोल० आदरकरना, सम्मान करना, श्रेष्ठ समझना।

प्रा० प्यारी—(सं० प्रिया)गु०स्त्री० पियारी, प्रिया, २ मनोहर।

प्रा० प्यास—(सं० पिपासा) स्त्री० पियास,तृष्णा, तृषा,पीनेकी चाह।

प्रा० प्यासबुझाना—बोल० प्यास मिटाना,कुछपीलेना,पानीपिलाना।

प्रा० प्यासलगना—बोल० प्यासा होना।

प्रा० प्यासा —(सं०पिपासित)गु० पियासा, तृषावन्त, पानी चाहने वाला। [प्यासा होना।

प्रा० प्यासे मरना—बोल० बहुत

सं० प्र—उपस० पहले, २ आगे बढ़के,

३ दूर, ४ श्रेष्ठ, प्रधान, बड़ा, ऊपर, मुख्य, ५ बहुत, अधिक, अतिशय, ६ प्रारम्भ, शुरूअ, ७ चारोंओर से, सबतरहसे, ८ उत्पत्ति, पैदा होना।

सं० प्रकट—(प्र=सब तरह से कट्=घेरना) गु० प्रकट, प्रत्यक्ष, चौड़े, ज़ाहिर, स्पष्ट, खुलासा।

सं० प्रकटन—भा० पु० प्रकाश करना, ज़ाहिर करना। [रोशन।

सं० प्रकटित—र्म्म० गु० प्रकाशित,

सं० प्रकम्प—(प्र=बहुत, कंप=कांपना) पु० कांपना, थरथराहट, कँपकँपी।

सं० प्रकरण—(प्र=बहुत, वा शुरूअ कृ=करना) पु० भूमिका, आशय, बात, वृत्तान्त, प्रस्ताव, प्रसङ्ग, कांड, खण्ड, विषय, अध्याय, सरिश्ता, अवसर, मौक़ा, विभाग।

सं० प्रकर्ष—(प्र=बहुत वा ऊपर, कृष=खेंचना) भा० पु० उत्तमता, बड़ाई, श्रेष्ठता, उत्कर्ष।

सं० प्रकाण्ड—पु० वृक्षकी जड़ और डालीके बीच की लकड़ी, वृक्षका धड़ वा स्तम्भ, प्रशस्तवाणी, आशीर्वाद। [पूर्वक।

सं० प्रकाम—गु० यथेच्छ, यथेष्ट, इच्छा

सं० प्रकार—(प्र, कृ=करना) पु० भेद, भांति, ढङ्ग, डौल, तरह, रीति, सादृश्य, क़िस्म।

सं० प्रकाश—(प्र=बहुत, काश्=चमकना) पु० उजाला, ज्योति, रोशनी, धूप, तेज, चमक, २ फैलाव, प्रसिद्ध, गु० प्रकट, प्रसिद्ध, विख्यात, चमकीला, उज्ज्वल, उजागर, प्रकाशित, चमकता, क्रि० वि० खुले खुले, साफ़ साफ़।

सं० प्रकाशक—(प्रकाश) क० पु० प्रकाश करनेवाला, रोशन करनेवाला, ज़ाहिरकुनिंदा।

सं० प्रकाशात्मन्—(प्रकाश+आत्मन्) पु० सूर्य्य, परमेश्वर।

सं० प्रकाशनीय } र्म्म० गु० प्रकाश
प्रकाश्य } नाई, प्रकाशयोग्य

सं० प्रकाशित—(प्रकाश) र्म्म० प्रकट, प्रत्यक्ष, ज़ाहिर, उजागर, प्रसिद्ध,

सं० प्रकीर्ण—(कृ=फैलाना) र्म्म० गु० विक्षिप्त, विस्तृत, फैलाहुआ पु० चमर, चौर, अश्व।

सं० प्रकृत—(प्र, शुरूअ वा पहले, कृ=करना) र्म्म० गु० कियाहुआ, शुरूअ कियाहुआ, २ ठीकठीक, यथार्थ, सच।

सं० प्रकृत—(प्र=बहुत, कृ=करना) स्त्री० स्वभाव, गुण, २ माया, परमेश्वर की शक्ति, ३ किसीवस्तु की असली दशा, ४ एक छन्दका नाम जिसके हरएक पद में इक्कीस अक्षर होते हैं, ५ राजा, मन्त्री, मित्र, खजाना, देश, गढ़ और नोस इन

सबके समूहको भी प्रकृति कहते हैं।

सं० प्रकीर्तन-(प्र=बहुत, कृत=कहना) भा० पु० वर्णन, कथन, भजा।

सं० प्रकीर्य्य-(कृ=फैलाना) म्प॰ बिथराहुआ, छिटकाहुआ।

सं० प्रकीर्तित-म्प॰पु॰कथित, वर्णित।

सं० प्रकृष्ट-(प्र=बहुत अथवा ऊपर कृष्=खींचना) गु० उत्तम, मुख्य, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ।

सं० प्रकोष्ठ-पु० कोठे के नीचे का कोठा, अटारी, हाथकी कलाई से कोहनीतक, कलाई और कोहनी के मध्यका भाग।

सं० प्रक्रम-(प्र=शुरूअ, क्रम=जाना) पु० प्रारंभ, शुरूअ, पर्य्यटन, २जाना, ३ अवकाश, अवसर ४ गणना।

सं० प्रक्रिया-(प्र+कृ=करना) स्त्री० विभाग, प्रकरण, २ रीति, प्रकार, विधि, व्यवहार, ३ बढ़ती, उन्नति, ४ महिमा, प्रभाव, प्रताप, ५गणना, ६ स्थल, ७ अधिकार।

सं० प्रक्लिन्न-(क्लिद्=तरहोना) क० पु० तृप्त, अघाना, आसूदा।

सं० प्रक्षालन-(प्र=बहुत, क्षल्=शुद्ध करना) पु० पखालना, धोना, शुद्ध करना।

सं० प्रक्षेप-(क्षिप्=फेंकना) पु० फेंकना, त्यागकरना।

सं० प्रखर-(प्र=बहुत, खर=तीखा) गु० बहुत तीखा, तेज, पु० घोड़े हाथी का बख़्तर, पाखर, घोड़ेका चारजामा।

सं० प्रखरांशु-पु० तीक्ष्ण किरण, तीव्र किरण।

सं० प्रख्यात-(प्र=बहुत, ख्या=प्रसिद्धहोना) गु० प्रसिद्ध, विख्यात, नामवर, प्रतिष्ठित, मुअज्जिज।

प्रा० प्रगट } **परगट** } (सं०प्रकट) गु० प्रसिद्ध, जाहिर, प्रत्यक्ष।

प्रा० प्रगटना-(सं० प्रकट) क्रि० अ० प्रगट होना, प्रत्यक्ष होना, पैदाहोना, उत्पन्न होना, जन्मलेना।

सं० प्रगल्भ-(प्र=बहुत, गल्भ्=ढीठ होना) गु० धृष्ट, शोख़, ढीठ, निठुर, साहसी, दृढ़, प्रबल, सामर्थी।

सं० प्रगल्भता-(प्रगल्भ) स्त्री० ढीठपन, साहस, पराक्रम, दृढ़ता, ढिठाई।

सं० प्रगाढ़-गु० दृढ़, कठोर, अधिक, बहुत।

सं० प्रग्रह-पु० लगाम, हथकड़ी, बेड़ी, तराज़ूकी रस्सी, किरण, चंदन, वेध, भुजा, बाँधने की रस्सी।

सं० प्रग्राह-पु० पगहा, बाँधने की रस्सी।

सं० प्रघाण-पु० बरामडा, बरामदा, मकान के आगे का सायबान।

सं० प्रचण्ड-(प्र=बहुत, चण्ड=ड-

रावना) गु० बहुत डरावना, भयानक, २ बहुत तीखा, प्रबल, ३ बहुत क्रोधी, ४ अत्यन्तगर्म अथवा जलता हुआ, ५ अनसहा, नहीं सहने योग्य, असह्य, अत्युग्र, उत्कृष्ट, तेज़ ।

सं० प्रचलित-(प्र=आगे, चल्=चलना) गु० व्यवहारी, चलनी, वर्तमान, जिसका चलनहो, जो चलता हो अथवा व्यवहार में आता हो जैसे प्रचलित सिक्का—प्रचलित भाषा ।

सं० प्रचार-(प्र=बहुत वा आगे, चर्=जाना) पु० चलन, व्यवहार, रीति, २ प्रकट करना, ३ फैलाव, विस्तार ।

सं० प्रचारक-क० पु० प्रकाशक, प्रेरक, विस्तारक, फैलानेवाला ।

प्रा० प्रचारना-(सं० प्रचारण प्र=आगे, चर्=जाना) क्रि० स० ललकारना, पुकारना ।

सं० प्रचुर-अव्य० बहुत, अधिक ।

सं० प्रचुरवर्ग-पु० साथी, संगती, हमराही ।

सं० प्रच्छद-(छद्=आच्छादन) ण० पु० उत्तरीय, दुपट्टा, ढप्पन ।

सं० प्रच्छदपट-पु० परदा, क़नात, चिक़ ।

सं० प्रच्छन्न (छद्=ढापना) कर्म० पु० गुप्त, ढपाहुआ, अदृश्य ।

सं० प्रजा-(प्र=बहुत, जन्=पैदा होना) स्त्री० सन्तान, २ प्राणी, सृष्टि, ३ राज के लोग, रइयत, अधिकार, स्थितजन ।

सं० प्रजापति (प्रजा + पति) पु० सृष्टि का स्वामी, सृष्टि का बनाने वाला, ब्रह्मा, दक्ष, कश्यप आदि दश मुनि जिनको ब्रह्मा ने पहले ही पहल पैदा किया और सृष्टि बनाने का काम सौंपा उनके नाम—१ मरीचि, २ अत्रि, ३ अङ्गिरा, ४ पुलस्त्य, ५ पुलह, ६ क्रतु, ७ प्रचेता, ८ वशिष्ठ, ९ भृगु, १० नारद और कितने एक आचार्य कहते हैं कि प्रजापति सात हैं और कितने एक दक्ष, नारद और भृगु इन तीनों हीको प्रजापति कहते हैं और कितने एक ग्रंथकार इक्कीस प्रजापति बतलाते हैं २ राजा ३ बाप, पिता ४ जँमाई, जामाता ५ सूर्य ६ आग कुम्हार ।

सं० प्रजाधिकारी राज्य-पु० जम्हूरी सल्तनत जिस राज्य की प्रजा सब राज काज करे राजा कोई न हो ।

सं० प्रजाशन(प्रजा + अशन अश्=भक्षण क०) भा०पु० प्रजाको दुःख देना, प्रजा का नाश करना ।

सं० प्रजाशासन(प्रजा + शासन

शास्=सिखाना) भा० पु० प्रजा को सिखाना दण्ड देना, सज़ा देना।

प्रा० प्रजारना—(सं० प्रज्वलन) क्रि० स० जारना, जलाना।

सं० प्रजेश } (प्रजा + ईश वा ईश्वर)
प्रजेश्वर } पु० दक्षप्रजापति।

सं० प्रज्ञ-क० पु० पण्डित, बुद्धिमान्।

सं० प्रज्ञा—(प्र=बहुत,ज्ञा=जानना) स्त्री० बुद्धि,मति,समझ, २ सरस्वती।

सं० प्रज्ञाचक्षु—धृतराष्ट्र, चक्षुहीन, बुद्धिचक्षु वाला।

सं० प्रज्ञापत्र -(फ़ा० इस्तफ़ता) उसे कहते हैं जिसमें गुरु अथवा आचार्य से पूंछकर सांसारिक कार्य किये जावें।

सं० प्रज्वलित-(प्र=बहुत,ज्वल=जलना वा चमकना) क०पु० ज्योतिमान्,प्रकाशित,उज्ज्वल, चमकीला।

सं० प्रडीन—(प्र,डी=उड़ना)भा०पु० उड़ना, पक्षीकी गति।

प्रा० प्रण—(सं० पण)पु० प्रतिज्ञा, बन, होड़, नियम, पण, कौल।

सं०प्रणत—(प्र=बहुत,नम्=झुकना) क० पु० अधीन, झुका हुआ, नम्र भक्त, दीन शरणागत।

सं०प्रणतपाल-भा०पु०दीनपालक।

सं० प्रणति—(प्र=बहुत,नम्=झुकना)स्त्री०नमस्कार, प्रणाम,दंडवत्।

सं० प्रणय—(प्र, नी=लेजाना) पु० प्यार, प्रेम, २ प्यार से मांगना, ३ भरोसा,४मुक्ति, ५ नम्रता,सुशीलता, ६ विनती, स्तुति।

सं०प्रणव-(प्र=बहुत,नु=स्तुतिकरना) पु० ॐम्, ॐङ्कार तीनों देवताओं का मंत्र।

सं० प्रणष्ट—(नश्=नाशकरना)र्म्म० पु० नाश होगया, विशेष नाश।

सं०प्रणाम-(प्र=बहुत,नम्=झुकना) पु० नमस्कार, दंडवत् प्रणत।

सं० प्रणमित—क० पु० प्रणाम करने वाला, प्रणामकर्ता या प्रणाम करायाहुआ।

सं० प्रणम्य—र्म्म० प्रणाम योग्य, नमस्करणीय या प्रणामकर।

सं० प्रणाली-(प्र=बहुत अथवा चारों ओर से, नल्=बांधना, वा नह्=गिरना) स्त्री० नाली, पनाला, २ परम्परा की रीति, क़दामत।

सं०प्रणिधान —(धा=धारण,पोषण करना) भा० पु० मन में ध्यान करना, बग़ौरसोचना, समाधिभेद।

सं०प्रणिधि-(प्रणि + धा=धारण करना) क० पु० चर, दूत, जासूस।

सं०प्रणिपात—(प्र=बहुत, नि=नीचे और पत्=गिरना) पु० प्रणाम,दंडवत्, सलामी।

सं०प्रताप-(प्र=बहुत,तप्=तपना) पु० तेज, ऐश्वर्य,महिमा,शोभा,अक़बाल।

सं० प्रतापवान् } (प्रताप) गु० तेज-
प्रतापी } स्वी, ऐश्वर्यवान्।

सं० प्रतारण-(तॄ=पार जाना, तैरना) भा० पु० प्रवञ्चना, छलना ।

सं० प्रति -उपस० को, के तईं, की ओर, २ पास, ३ साम्हने, ४ विरुद्ध, उलटा, विपरीत, ५ इसकी अपेक्षा, इसके देखते बनिस्बत, ६ ऊपर, पर, ७ लगभग, ८ लिये, वास्ते, ९ विषय में, १० अनुसार से, ११ हर एक की एक एक, सब, १२ पीछे, फिर, पीछा, १३ एवज़, बदले में, पलटे में, जगह में, स्थान में, १४ आपसमें, १५ बराबर, समान, सदृश, १६ नकल, १७ पुस्तक, जिल्द।

प्रा० प्रतिउपकार -(सं०प्रत्युपकार प्रति=पीछा, उपकार=भला) पु० पीछा उपकार, उपकारका बदला ।

सं० प्रतिकार, प्रतीकार (प्रति=बदले में, कृ=करना) पु० बैर का बदला, पलटा, २ दुःख दूर करने का उपाय, इलाज, निवारण, वर्जन, बदला, एवज़ ।

सं० प्रतिकारक -क० पु० निवारक, नाशिक । [करनेयोग्य

सं० प्रतिकार्य्य -कर्म० निवार्य्य, रो

सं० प्रतिकूल -(प्रति=उलटा वा विरुद्ध, कूल=पक्ष, कूल्=ढकना) गु० उलटा, विरुद्ध, विमुख, बरखिलाफ़ ।

सं० प्रतिक्षण -(प्रति=हरएक, क्षण =पल) क्रि० वि० पलपल में, हर एक पल, हरदम, हरवक्त ।

सं० प्रतिग्रह-(प्रति=बुरा, ग्रह=लेना) दान लेना, खैरात लेना ।

सं० प्रतिघात -(प्रति=पीछा, घात= मारना) पु० पीछा मारना, मारके बदले मार ।

सं० प्रतीच्छा -स्त्री० इन्तिज़ारी ।

सं० प्रतिच्छाया -(प्रति=बराबर, छाया) स्त्री० प्रतिबिम्ब, परछांई ।

सं० प्रतिज्ञा -(प्रति=आपस में, ज्ञा= जानना) स्त्री० वचन, प्रण, नेम, कौलकरार । [दनामा ।

सं० प्रतिज्ञापत्र -पु० प्रणपत्र, अह-

सं० प्रतिदान भा० पु० दानोपरि दान, दान के पीछे दान ।

सं० प्रतिदिन (प्रति=हरएक, दिन) क्रि० वि० हरएकदिन, दिन दिन ।

सं० प्रतिध्वनि -(प्रति=पीछा अथवा बराबर, ध्वनि=शब्द) स्त्री० प्रतिशब्द, गूंज, शब्द प्रति शब्द ।

सं० प्रतिनिधि -(प्रति=एवज़, वा बराबर, नि=में, धा=रखना) पु० एवज़, एक की जगह दूसरा, २ सदृशता, प्रतिमा, मूरत, मुखतार ।

सं० प्रतिपक्ष -(प्रति=उलटा, पक्ष= तरफ़) पु० बैरी, शत्रु, रिपु, दुश्मन।

सं० प्रतिपत्ति -(पत्=गिरना) स्त्री० प्रवृत्ति, बोध, निष्पत्ति, प्राप्ति, प्रागल्भ्य गौरव, पदप्राप्ति, दान,

प्रक्षेप, दीनता।

सं० प्रतिपद-(प्रति, पद्=जाना, और प्रति उपसर्ग के साथ आने से अर्थ हुआ शुरूअहोना) स्त्री०परिवा, पहली तिथि।

सं० प्रतिपन्न-(पद्=जाना) र्म्म० विज्ञात, अंगीकृत, प्राप्त, शरणागत।

सं० प्रतिपादन-भा० पु० त्याग, कथन, दान, प्रतिपत्ति, निरूपण, समर्पण, बोध करना, जताना।

सं०प्रतिपादक-क०पु०कहनेवाला, निरूपक, मुआरिज़।

सं० प्रतिपाद्य-र्म्म० पु० बोधनीय, विश्वासयोग्य, कथनयोग्य।

सं०प्रतिपाल-(प्रति,पाल्=पालना) पु०पोषन,भरन,पालन,प्रतिपालन।

सं० प्रतिपालक-(प्रति,पाल्=पालना) क० पु० पालनेवाला, पु० राजा, रक्षक।

सं० प्रतिपालन-(प्रति,पाल्=पालना) पु० पोषन, भरन, पालन, रक्षा, बचाव, परवरिश।

प्रा०प्रतिपालना-(सं० प्रतिपालन) क्रि० स० पालना, पोषना।

सं० प्रतिपालित-र्म्म०पु० रक्षित, महफूज़। [एवज।

सं० प्रतिफल-पु० बदला, मावज़ा,

सं० प्रतिबन्धक प्रति,बन्ध्=बांधना) क० पु० बाधक, रोकनेवाला, पु० रुकाव, रोक,बाधा। [निबन्धन।

सं० प्रतिबन्धन-भा०पु० रोजीना,

सं० प्रतिभा (प्रति, भा=चमकना) स्त्री० समझ, बुद्धि, बुद्धिकी तेजी, २ जोत, चमक।

सं० प्रतिभू-(प्रति=प्रतिनिधि, या एवज़, भू=होना) पु० ज़ामिन।

सं० प्रतिभू-स्त्री०ज़मानत,ज़ामिनी।

सं०प्रतिभूति-स्त्री०ज़मानत,ज़ामिनी।

सं० प्रतिमा-(प्रति=बराबर, मा=नापना, अर्थात् किसी के बराबर बनाना) स्त्री० मूरत, पुतली।

सं० प्रतिमाला-स्त्री० जयमाला, मण्डल, परिधि, बैतबाज़ी।

सं० प्रतिमास-(प्रति=हरएक, मास=महीना) क्रि० वि० महीने का महीने, हर महीने, महीने महीने।

सं० प्रतियोगिन्-(युज्=मिलना, जोड़ना) गु० विरुद्धपक्ष, विरोधी, उद्योगी, प्रतिकूल।

सं० प्रतिरम्भ-(रभ्=उत्सुक होना) पु० भेंट,मिलाप,आलिङ्गन,२क्रोध,कोप।

सं० प्रतिरूप-(प्रति=बराबर, रूप=आकार) पु० प्रतिबिम्ब, मूरत, गु० समान, सदृश।

सं० प्रतिरोध—(प्रति+रुध्=रोंकना) पु० निरोध, रोक, प्रतिबन्ध, निरादर, अविष्टम्भ ।

सं० प्रतिलेखक—क० पु० मक्तूब-अलेह या जिसको पत्र लिखाजाय।

सं० प्रतिलोम—गु० विलोम, उलटा, वाम, बायें, विपरीत, अधम, नीच, कुत्सित पु० रोम रोम, हर एक रोम ।

सं० प्रतिलोमज—गु० वर्णसंकर, शूद्रपुरुष और उत्तम वर्णकी स्त्री से उत्पन्न ।

सं० प्रतिवादी—क० पु० विरोधी, मुद्दआअलेह ।

सं० प्रतिविधान—भा० पु० कथनोपकथन, कहेको कहना, दोबारा कहना ।

सं० प्रतिवासी—(वस्=रहना) क० पु० परोसी, हमसाया ।

सं० प्रतिबिम्ब—(प्रति=पीछा, वा समान, बिम्ब=छाया) पु० पर्छाईं, छाया, प्रतिरूप, अक्स ।

सं० प्रतिश्रव—(श्रु=सुनना) भा० पु० अंगीकार, मंजूर । [स्वीकृत।

सं० प्रतिश्रुत—र्म्म० पु० अंगीकृत,

सं० प्रतिषेध—(सिध्=सिद्ध करना) भा० पु० निषेध, निरोध, मुमानिअत, मनअ करना ।

सं० प्रतिष्ठा—(प्रति, ष्ठा=ठहरना) स्त्री० बड़ाई, गौरव, मान, यश, आदर, इज़्ज़त, सन्मान, नाम, २ देवता के नये मन्दिर को अथवा देवताकी नई मूरतको संस्कारों से पवित्र करना, स्थापना ।

सं० प्रतिष्ठासूचक(प्रतिष्ठा + सूच= जताना) क० पु० इज़्ज़त का ज़ाहिर करनेवाला ।

सं० प्रतिष्ठित—(प्रतिष्ठा) र्म्म० पु० नामी. नामवर, प्रतिष्ठावाला, यशस्वी, गौरवयुत, सन्मानित, आदरित, मुअज़्ज़म, मुकर्रम, गिरामी, २ स्थापित, संस्कार कियाहुआ ।

सं० प्रतिहत—(प्रति, हन्=मारना) र्म्म० पु० नष्ट, हर्षहीन, उद्विग्न, तिरस्कृत, अपमानित ।

सं० प्रतिहार—पु० द्वारपाल, डिवढीदार, सिपाह, द्वार, दरवाजा, त्याग, ग्रहण, उपाय ।

सं० प्रतिहारक—(प्रति, हृ=हरना) पु० इन्द्रजाली, मायावी, बाजीगर, उद्योगी, उद्धारक ।

सं० प्रतीकार—(प्रति, कृ=करना) पु० उपाय, यत्न, तदबीर, चारा ।

सं० प्रतिसर्ग—(प्रति, सृज्=पैदा करना) पु० प्रलय, नाश, क़यामत ।

सं० प्रतीक्षा—(प्रति=हर एक बार, ईक्ष्=देखना) स्त्री० वाट देखना, प्रत्याशा, इन्तज़ारी, अपेक्षा ।

सं० प्रतीक्षक–क० पु० राहदेखने वाला, प्रत्याशी, मुन्तज़िर ।

सं० प्रतीत-(प्रति, इण्=जाना) कर्म० पु० प्रसिद्ध, विख्यात, नामी, जाना हुआ, सिनासा, हर्षित ।

प्रा० प्रतीत–(सं० प्रतीति पु० इण्= जाना) स्त्री० भरोसा, विश्वास ।

प्रा० प्रतीतकरना–बोल० परीक्षा करना, २ भरोसा करना ।

सं० प्रतीति–(प्रति+इति) भा० स्त्री० विश्वास, निश्चय, एतमाद, आदर, हर्ष ।

सं० प्रतीप–(प्रति+अप्=जाना) गु० प्रतिकूल, नाफ़र्मांबरदार, विपरीत, पु० शस्त्र, राजा शंतनु का पिता ।

सं० प्रत्यक्ष-(प्रति=साम्हने, अक्ष =आंख) गु० सन्मुख, साम्हने, आगे, प्रकट, प्रसिद्ध ।

सं० प्रत्यय-(प्रति=फिर, इण्=जाना) पु० भरोसा, विश्वास, प्रतीत, श्रद्धा, एतबार, २ ज्ञान, ३ व्याकरण में ऐसा शब्द जो धातु और शब्द के अन्तमें जोड़ाजाता है इरूफमानवी ।

सं० प्रत्याख्यान-(प्रति+आख्यान, ख्या=कहना) पु० त्याग, तिरस्कार, खण्डन, तरदीद करना, मनका करना, रोक देना ।

सं० प्रत्याशा-(प्रति=फिर, आशा आस) स्त्री० आशा, भरोसा, उम्मेद । २ बाट देखना, इन्तज़ारी, प्रतीक्षा, ३ चाह, इच्छा ।

सं० प्रत्याशी–क० पु० मुन्तज़िर, राह देखनेवाला ।

सं० प्रत्याहार–(प्रति=फिर, आ= चारों ओर से, हृ=लेना) पु० व्याकरणमें वर्णमाला के दो अथवा अधिक अक्षरों का समूह–जैसे अइउण् ऋलृक् आदि, २ समाधि, योग ।

सं० प्रत्युत्तर–(प्रति=पीछा, उत्तर= जवाब) पु० उत्तर का उत्तर, पीछे जवाब ।

सं० प्रत्यूह–(प्रति+ऊह=तर्ककरना) पु० विघ्न, उपद्रव, हर्ज ।

सं० प्रतीकार–(प्रति+कृ=करना) पु० उपाय, यत्न, उद्धार, निर्वाह, तदबीर, चारा ।

सं० प्रत्येक–(प्रति+एक) गु० एक एक, हरएक, अलग अलग ।

सं० प्रथम–(प्रथ्=नामवर होना) गु० पहला, प्रधान, उत्तम, मुख्य, आदि, क्रि० वि० पहले, पहलेही ।

सं० प्रथा–स्त्री० ख्याति, यश, विस्तार, प्रक्षेप, कीर्ति, नामवरी, पांडुकी स्त्री कुन्ती ।

सं० प्रथित–(प्रथ्=प्रसिद्ध होना) कर्म० पु० ख्यात, प्रसिद्ध ।

सं॰प्रद्–(प्र=बहुत, द=देनेवाला, दा=देना) गु॰ देनेवाला ।

सं॰ प्रदक्षिण-(प्र=प्रारम्भ, दक्षिण =दाहिना ओरसे) स्त्री॰ दाहिनी ओर से देवता के चारों ओर फिरना, परिक्रमा, तवाफ़ ।

सं॰ प्रदर्शक–(प्र=आगे,दर्शक=दिखानेवाला) पु॰ दिखानेवाला, शिक्षक, बतानेवाला ।

सं॰ प्रदर्शनी–भा॰ स्त्री॰ नुमायश, शोभा, सजाव । [शगाह ।

सं॰ प्रदर्शनस्थान–धि॰पु॰नुमाय-

सं॰ प्रदान–भा॰पु॰ दान, खैरात ।

सं॰प्रदीप-(प्र=बहुत, दीप्=चमकना) पु॰दीपक,दिया,चिराग़,सूर्य,प्रकाश।

सं॰ प्रदेश-(प्र=मुख्य, देश=देस)पु॰ मुख्यदेश, मुल्क, ज़िला, परगना) २ परदेश, दूसरा मुल्क ।

सं॰ प्रदोप–(प्र=प्रारम्भ, दोष=रात, दुष्=बदलना वा बिगड़ना) पु॰ सन्ध्या, सायंकाल, सूर्य डूबने के पीछे दो घड़ीतक का समय, रजनीमुख, सफ़क़ ।

सं॰ प्रदोषकाल–पु॰ सायंकाल, शाम का वक्त ।

सं॰ प्रद्युम्न–(प्र=बहुत, द्युम्न=बल, दिव्=चमकना) पु॰ कामदेव का अवतार, श्रीकृष्णका बेटा ।

सं॰ प्रधान –(प्र=बहुत,धा=रखना) पु॰ प्रकृति, माया, २ ईश्वर, ३ मुखिया, राजा का मुख्यमंत्री सेनापति आदि, अधिपति गु॰ मुख्य, श्रेष्ठ, बड़ा ।

सं॰ प्रधी–गु॰श्रेष्ठ,प्रधानकर्म्मचारी, बड़ाबुद्धिमान् मीरमुन्शी बुद्धियुक्त।

सं॰ प्रध्वंस–(प्र=बहुत, ध्वंस्=नाश करना) पु॰नाश, विध्वंस, हानि, विनाश, क्षय ।

सं॰ प्रपञ्च –(प्र=बहुत, पचि=फैलाना) पु॰ विस्तार, फैलाव, २ विरोध, विपरीतता, ३ छल, धोखा, कपट, ठगाई, चूक, भूल, ४ संसार, जगत्, माया, दिखाव ।

सं॰ प्रपा –(प्र=बहुत, पा=पान करना) स्त्री॰ पनघट, पानी का घर ।

सं॰ प्रपात–(प्र=बहुत, पत्=गिरना) पु॰ निर्झर,कूल,किनारा, तटहीन, पर्वतस्थान, निरवलम्ब, बेसहारा, भृगु, पतन, गिरना ।

सं॰ प्रपितामह–(प्र=पैदा हुआ है, पितामह दादा (जिससे) वा प्र=बड़ा, पितामहदादा)पु॰परदादा, २ पुरखा, ३ ब्रह्मा ।

सं॰ प्रपूर्ति–(पूर्=पूरा करना) स्त्री॰ संपूर्णता, तमाम, इख़्तिताम ।

सं॰प्रपौत्र–(प्र=आगे वा उत्पन्न